केवल चिकित्सकों
एवं औषधालयों
के लिये

M/s ATMAN TRADERS
3rd Floor Partap Garh
Kanak Mandi, JAMMU

बैद्यनाथ
पंचाङ्ग
संवत् २०५९

देशी दवाओं का
सबसे बड़ा और
विश्वसनीय
कारखाना

श्री
बैद्यनाथ
आयुर्वेद भवन प्रा. लि.

कोलकाता–पटना
झाँसी–नागपुर
नैनी (इलाहाबाद)

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

आपके कल के डॉक्टर व इन्जीनियर को आज जरुरत है बैद्यनाथ शंखपुष्पी की

आपके लाडलें का उज्वल भविष्य आपका सपना है पर आजकी तीव्र प्रतिस्पर्धा व बढ़ा हुआ पढ़ाई का बोझ आपके लिये चिंता का विषय भी है। ऐसे माहौल में आपके बच्चे को जरुरत है एकाग्रता एवं समझने की क्षमता की। उसे जरुरत है बैद्यनाथ शंखपुष्पी की तो आजही से अपने लाडले को दिजिये।

ब्राम्ही युक्त

बैद्यनाथ

शंखपुष्पी

बुद्धिवर्धक टॉनिक

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

"बैद्यनाथ की सेवाएँ बहुत उपयोगी है और मैं उनको बधाई देना चाहता हूँ"

... प्रधानमंत्री, श्री अटल बिहारी वाजपाई

प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी, वाजपाई ने
पं. रामनारायण शर्मा वैद्य पुरस्कार
वितरित करते हुए इन शब्दों में
बैद्यनाथ की प्रशंसा की, उन्होने यह भी कहा कि,
मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि इस ट्रस्ट ने आयुर्वेद के प्रचार
और प्रसार के लिए बहुत काम किया,
ठोस काम किया है",
माननीय प्रधानमंत्री के इन विचारों पर बैद्यनाथ को गर्व है।

बैद्यनाथ

shellsadvertising.com

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

बैद्यनाथ और हमारे नेता

भारतीय गणतन्त्र के प्रथम राष्ट्रपति स्व. डॉ. राजेन्द्रप्रसाद की शुभकामना

श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड ने काँग्रेस प्रदर्शनी में भारतीय औषधियों और आयुर्वेदीय रीति से चिकित्सा का प्रबन्ध किया। मैंने उसे देखा और सब प्रबन्ध को देखकर बहुत खुश हुआ। आयुर्वेद का पुनरूद्धार अत्यन्त आवश्यक है और इस प्रकार के प्रबन्ध से उसमें बहुत लाभ होगा। मैं इस संस्था की सफलता चाहता हूँ।

- राजेन्द्र प्रसाद

भूतपूर्व राष्ट्रपति सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन् की शुभ सम्मति

आयुर्वेद एक निर्दोष चिकित्सा-पद्धति है। यह केवल व्याधियों का विज्ञान न होकर स्वास्थ्य का विज्ञान है। यह मनुष्य को और दीर्घजीवी बनाता है। जितना प्राचीन अनुभव आयुर्वेद का है, उतना किसी अन्य चिकित्सा-पद्धति का नही।

- सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री स्व. पं. जवाहरलाल नेहरू की शुभ सम्मति

इस बात में सन्देह की तनिक भी गुंजाइश नहीं है कि भारत की प्राचीन (आयुर्वेदीय) चिकित्सा पद्धति का अत्यन्त सम्मानजनक इतिहास तथा विपुल ख्याति रही है। भूतकाल के ज्ञान और अनुभवों के इस विशाल भण्डार की उपेक्षा एक भयंकर भूल होगी।

- पंडित जवाहरलाल नेहरू

भूतपूर्व प्रधानमन्त्री स्वर्गीय श्री लालबहादुर शास्त्री की शुभ सम्मति

इसमें रंचक सन्देह नहीं कि आयुर्वेद और यूनानी चिकित्सा पद्धतियाँ संसार को भारत की एक विशेष देन है।

- लालबहादुर शास्त्री

भारत के प्रधानमन्त्री स्व. श्री मोरारजी देसाई की शुभकामना

श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड की औषधि निर्माण शाला का निरीक्षण कर मुझे प्रसन्नता हुई। इससे मेरा यह विश्वास दृढ़तर होता है कि आयुर्वेद-विज्ञान के अनुसंधान की दिशा में इस प्रतिष्ठान द्वारा अनुष्ठान कार्य अधिकाधिक प्रगति करते रहेंगे।

- श्री मोरारजी देसाई

प्राचीन आयुर्वेदीय संहिता के संशोधक, अखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद-महासम्मेलन और विद्यापीठ के भूतपूर्व सभापति, आयुर्वेदोद्धारक स्वर्गीय यादवजी त्रिकमजी आचार्य की शुभ सम्मति

श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड में प्रस्तुत होनेवाली औषधियों के नुस्खों को मैं जानता हूँ और औषधालय कई बार देखा है। मेरा जहाँ तक अनुभव है, इनके यहाँ विश्वसनीय दवाएँ बनती है।

- वैद्य यादवजी त्रिकमजी आचार्य

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

प्रमुख रोगानुसार बैद्यनाथ औषधियाँ

विषय	पृष्ठ
अतिसार –	
कुटजारिष्ट	६७
साधारण ज्वर –	
मृत्युञ्जय रस	५६
आनन्दभैरव रस	५३
मियादी बुखार –	
कस्तुरी भैरव बृहत्	५३
ब्राह्मी बटी	६०
लक्ष्मी विलास रस	५७
मलेरिया बुखार –	
प्राणदा	७१
सर्दी जुकाम फ्ल्यु –	
महालक्ष्मी विलास रस	५६
त्रिभुवनकीर्ति रस	५५
गोदन्ती भस्म	४९
जीर्णज्वर –	
बसन्तमालती रस	५५
जयमंगल रस	५४
अजीर्ण मन्दाग्नि –	
अग्निवर्धक बटी	५९
राज बटी	६०
लवणभास्कर चूर्ण	६३
हिंग्वष्टक चूर्ण	६३
पेट दर्द –	
महाशंख बटी	६०
शूलवर्जिनी बटी	६०
अर्कपुदीना	७०
गैस (पेट में वायु) –	
गैसान्तक बटी	७१
लशुनादि बटी	६०
शंख बटी	६०
हिंग्वष्टक चूर्ण	६३
संग्रहणी –	
स्वर्ण पर्पटी	६२
लौह पर्पटी	६२
चित्रकादी बटी	५९
कब्जियत –	
विरेचनी	७१
इच्छाभेदी	५३
पंचसकार चूर्ण	६३
त्रिफला चूर्ण	६३
आँव पेचिश –	
ईसब्बेल	७०
अतिसार (पतले दस्त)	
पीयूषवल्ली रस	५५
गंगाधर रस	५४
कफ, खाँसी –	
कासामृत	७०
च्यवनप्राश	६४
वासावलेह	६४
चन्द्रामृत रस	५४
लवंगादि बटी	६०
श्वास दमा –	
श्वासचिन्तामणि	५७
श्वासकुठार रस	५७
श्वासकल्प	७३
मल्ल सिन्दूर	५२
च्यवनप्राश	६४
कनकासव	६७
अम्लपित्त –	
सूतशेखर रस	५८
अम्लपित्तान्तक-योग	७१
धात्री लौह	५८
पित्त विकार (दाह उष्णता)	
मोती पिष्टी	५०
सूतशेखर नं.१	५७
प्रवाल पिष्टी	५०
कामदुधा रस	५३
स्वर्णमाक्षिक	५१
दाड़िमावलेह	७०
वात विकार –	
वातचिन्तामणि	५७
योगेन्द्र रस	५६
रसराज रस	५७
महानारायण तैल	६५
महाविषगर्भ तैल	६५
बच्चों के रोग –	
जन्मघूंटी	७२
कुमारकल्याण रस	५४
रसपीपरी	५६
अरविन्दासव	६७
शंखपुष्पी तैल	६५
स्त्रीरोग –	
अशोकारिष्ट	६६
सुन्दरी कल्प	७४
प्रदरान्तक रस	५५
[illegible] चूर्ण	६३
प्रसूत रोग –	
दशमूलारिष्ट	६७
प्रतापलंकेश्वर	५५
सुपारी पाक	६४
सूतिकाभरण	५८
नेत्ररोग –	
सप्तामृत लौह	५९
त्रिफला घृत	६९
शारीरिक कमजोरी –	
सिद्धमकरध्वज स्पेशल	५१
वसन्तकुसुमाकर	५५
च्यवनप्राश स्पेशल	६४
द्राक्षासव	६८
मृतसंजीवनी सुरा	७२
दिमागी कमजोरी –	
ब्रेनटेब	७२
सारस्वतारिष्ट	६९
ब्राह्मी तैल	६४
आमवात –	
योगराज गुग्गुलु	६१
आमवातारि रस	५३
सैंधवादि तैल	६५
एरण्ड पाक	६४
सरदर्द –	
शिर:शूलादिवज्र रस	५७
षडबिन्दु तैल	६५
[illegible]	७२

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

विषय	पृष्ठ
मूत्रविकार -	
स्वर्णबंग	५२
बंग भस्म	५०
चन्द्रप्रभा बटी	५९
चन्दनासव	६७
खून की कमी, पीलिया	
लौह भस्म	५०
मण्डूर भस्म	५०
नवायस लौह मण्डूर	५८
लौहासव	६९
पुनर्नवादि मण्डूर	५८
आरोग्यवर्धिनी बटी	५३
खून की खराबी -	
सुरक्ता	७४
रक्तशोधक बटी	७३
रसमाणिक्य रस	५६
सारिवाद्यारिष्ट	६९
फोडा, फुन्सी, घाव -	
चर्मरोगारि	७०
सुरक्ता	७४
रक्तपित्त -	
कामदुधा रस	५३
चन्द्रकला रस	५४
वासावलेह	६४
वासारिष्ट	६८
अकीक भस्म	४९
कहरवा पिष्टी	४९
शिलासिन्दूर	५२
चालमूंगरा तैल	७०
गन्धक रसायन	५४
घाव मलहम	७०
तिल्ली, जिगर -	
तिल्ली की दवा	७०
कुमारी आसव	६७
आरोग्यवर्धिनी बटी	५३
अर्श बवासीर -	
बवासीर मलहम	७१
अर्शकुठार रस	५३
अभयारिष्ट	६७
अर्शोघ्नी बटी	५९
कांकायन बटी	५९
अकीक भस्म	४९
दिल के लिए -	
अकीक पिष्टी	४९
स्वर्ण भस्म	५१
मोती भस्म	४९
जवाहर मोहरा	७२
अभ्रक भस्म	४९
योगेन्द्र भस्म	५६
अर्जुनारिष्ट	६७
याकूती	५६
चोट, मोच तथा जले कटे पर	
सप्तगुण तैल	७३
हीलर मलहम	७३
फुफ्फुसावरण शोथ -	
कल्याणसुन्दर रस	५३
प्रवाल भस्म	५०
महालक्ष्मी विलास रस	५६
शृंग भस्म	५१

विषय सूची

विषय	पृष्ठ
पंतप्रधान मा. अटल बिहारी वाजपाई द्वारा	
बैद्यनाथ प्रशंसा	१
बैद्यनाथ और हमारे नेता	२
बैद्यनाथ औषधियाँ	३-४
विषय सूची	४
पंचांग का इतिहास, उपयोग, स्वरूप और देखने की विधी	५-६
बैद्यनाथ पंचाग खण्ड	
वर्षफल	७-८
राशिफल	८-१०
सन २००२ में	
पडनेवाला ग्रहण	११
विविध मुहूर्त	११
वर्ष का आय व्यय,बचत	१२
ज्योतिष क्या है	१३
उपनयन विवाह मुहूर्त	१५-१७
संवत् २०५९ की घटनायें	१७-२०
तिथि मिथि	२१-४४
बैद्यनाथ विकास का इतिहास	४५-४६
बैद्यनाथ की बृहत् निर्माण शालाएँ	४७
बैद्यनाथ औषधि विवरण	
बैद्यनाथ विशिष्ट उत्पादन धातु भस्म तथा पिष्टी	४८-५१
कूपीपक्व रसायन	५१-५२
रस रसायन	५२-५८
लौह मण्डूर	५८-५९
बटी गोलियाँ	५९-६०
गुग्गुलु	६१
पर्पटी	६१
चूर्ण	६२-६३
अवलेह-मोदक-पाक	६३-६४
औषध केश तैल	६४
औषध तैल	६४-६५
प्रवाही क्वाथ	६६
आसव अरिष्ट	६६-६९
घृत	६९
आयुर्वेदिक विविध एवं उपयोगी द्रव्य समूह	६९-७०
अनुभूत औषधियाँ	७०-७१
आयुर्वेदिय अनुभूत औषधियाँ	७१-७४
अन्य उपयोगी द्रव्य समूह	७४
आयुर्वेदिक प्रकाशन	७४-७८
विशिष्ट रोगोंपर खास दवायें	७९-८०

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

पंचांग का इतिहास, उपयोग, स्वरूप और देखने की विधि

इह-परलोक-सुख-साधन यज्ञ-योग है, यह वैदिक विद्वानों ने 'स्वर्ग-कामोयजेत' इत्यादि वेद द्वारा जाना। यज्ञ-याग किस समय करने चाहिये, इसके लिए काल विधान-शास्त्र ज्यौतिष वेदांग का प्रादुर्भाव हुआ। तभी से काल-ज्ञानपार्थ पंचांग-निर्माण चल रहा है।

काल- सूर्य-क्रिया ही काल है। सूर्य ही चर, स्थित जगत की आत्मा है, अतः भगवान सूर्य को ही प्रधानता देकर पंचांग-निर्माण होता है। विराट पुरुष भगवान के मन से चन्द्रमा, तथा नेत्रों से सूर्य बना है। उसके द्वारा ही भगवान सबको देखते है तथा सुरक्षा भी करते हैं। गुरु उस विराट पुरुष की बुद्धि है, अतः इन तीनों का संकल्प में अवश्य पंचांग में भी सर्वत्र अधिक उपयोग होता है।

भारतीय संस्कृति को जीवित रखने का महत्वपूर्ण काम भारतीय पंचांगों द्वारा ही होता आया है। इसके पाँच प्रधान अंग होने से ही इसे पंचांग कहते हैं। वार, तिथि, नक्षत्र, योग और करण, ये पाँच अंग पंचांग आरम्भ से रखे जाते हैं।

वार- सर्व विश्व में वार सात ही होते हैं, कारण शनि तक ७ ग्रहों की आकाशस्थ कक्षा में क्रम से आने वाली पहली होरा ही वार है। सूर्योदय से सूर्योदय तक वार होता है। वारजन्य फल इसी के आधार से होता है। पाश्चात्य लोग इसे रात १२ बजे से पुनः रात के १२ बजे तक मानते हैं, भारतीय संस्कृति में ऐसा नहीं है।

तिथि- सूर्य, चन्द्र के पूर्ण मिलन के बाद सूर्य से चन्द्र १२ अंश आगे जाने पर एक चन्द्रकला होती है, यही तिथि है। पूर्ण चन्द्र होने तक १५ कला या तिथि होती है, इन १५ तिथियों को शुक्लपक्ष तथा पुनः चन्द्रकला घटती जाती है, पूर्णकला घटने तक १५ तिथि होती है, इन १५ तिथियों को कृष्णपक्ष कहते हैं। यह शुक्ल-कृष्ण पक्ष मिलकर १ चान्द्र मास होता है। पूर्ण चन्द्र पौर्णिमा को चित्रा नक्षत्र के आसपास रहने से चैत्र मास हुआ, इसी क्रम से विशाखा के आसपास होने से वैशाख मास, ज्येष्ठा के आसपास होने से ज्येष्ठ मास, पूर्वाषाढ़ा से आषाढ़, श्रवण से श्रावण, पूर्वाभाद्रपदा से भाद्रपद, अश्विन से आश्विन, कृत्तिका से कार्तिक, मृगशीर्ष से मार्गशीर्ष, पुष्य से पौष, मघा से माघ, उत्तराफाल्गुनी से फाल्गुन हुए। ये चैत्रादि मासों के अन्वर्थक नाम हैं। सूर्योदय के समय जो चन्द्रकला होगी उसे ही १-२-३ इत्यादि क्रम से पंचांग में लिखते हैं, और जब तक वह कला पूर्ण होगी तब तक समय उसके आगे लिखते हैं। चन्द्रगति ज्यादा होने से कोई तिथि भी सूर्योदय के समय नहीं भी रहती तब तिथि का क्षय हुआ कहते हैं। ऐसे प्रसंग में पक्ष १४ दिनों का होता है। ऐसे ही चन्द्रगति कम होने से दो दिन सूर्योदय के समय जब वही तिथि रहती है तब उसे वृद्धा तिथि कहते हैं, और ऐसे प्रसंगों में पक्ष १५ दिनों का होता है। तिथि क्षय के माने वह तिथि रहती ही नहीं ऐसा नहीं, अपितु किसी भी सूर्योदय के समय वह तिथि

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

का अर्थ है। इसी प्रकार जो नक्षत्र या योग भी किसी सूर्योदय के समय न रहेंगे तो उनका भी क्षय हुआ कहेंगे, परन्तु उनके क्षय या वृद्धि से पक्ष घटता या बढ़ता है। दो सूर्योदय के समय होने से यह वृद्धा तिथि होती है और पक्ष १६ दिनों का होता है।

नक्षत्र- चन्द्र जिस दिन, जिस नक्षत्र में आकाश में दिखने वाला है उस नक्षत्र को उस दिन पंचांग में लिखते हैं। यह पंचांग का तीसरा अंग नक्षत्र है। सूर्योदय से कितने बजे तक चन्द्र उस नक्षत्र में रहेगा यह पंचांग में नक्षत्र के आगे लिखते हैं। ये कुल २७ है।

योग- स्पष्ट सूर्य और स्पष्ट चन्द्र, दोनों का योग जब-जब ८०० कला होता है तब-तब एक योग बनता है, उसका समाप्तिकाल सूर्योदय से पंचांग में लिखते हैं। यह पंचांग का चौथा अंग हैं। ये भी कुल २७ हैं। इनमें व्यतीपात, वैधृति पूर्ण अशुभ हैं। विष्कुंभ तथा वज्र की आरंभ की तीन-तीन घटी, परिण आधा, शूलयोग की पाँच घटी, गंड व अतिगंड की छः घटी, व्याघात योग की ९ घटी अशुभ होती है। क्रान्तिसाम्य को भी व्यतीपात, वैधृति कहते हैं परन्तु वस्तुतः क्रान्तिसाम्य का नाम महापात है। वह भी सब शुभ कामों में वर्ज्य है। यह महापात का उक्त २७ योगों से पृथक् है। गोल पर सब ग्रह घूमते रहते हैं अतः ये सब पंचांग के अंग भी घूम-घूमकर बार-बार आते हैं।

करण- सूर्य से अंश चन्द्र आगे जाता है तब एक करण होता है। सूर्योदय काल में कौन सा करण है और वह कब तक रहेगा यह पंचांग में लिखते हैं। दिन में दो करण होते हैं। इनमें से एक ही करण सूर्योदय के समय रहेगा। करण कुल ११ हैं, इनमें ७ चर करण हैं जो महीने में ८-८ बार घूमकर आते हैं शेष ४ करण महीने में एक ही बार आने से उन्हें स्थिर करण कहते हैं। यह पंचांग का ५वाँ अंग है। चर करणों में भद्रा करण अशुभ है, स्थिर करणों के चारों ही करण अशुभ हैं। वर्षा विचार में करणों का बहुत उपयोग होगा। चन्द्रराशि समाप्ति काल, सूर्योदय, सूर्यास्त, बंगला तारीख दोनों सावन हैं, पंचांग में क्रम से देने की पद्धति है। किस दिन, क्या सर्वार्थसिद्धि आदि सुयोग, भद्रा, वैधृति, व्यतीपातादि कुयोग कब तक हैं, संक्षेप में उसमें क्या करना, न करना इत्यादि उस दिन के आगे लिखते हैं, उस लाइन में पूरा न आने से चिह्न से चिह्न मिलाकर देखें। बाद में रूल के आगे विशेष पर्व लिखे हैं। भारत के सभी प्रान्तों के व्रत, पर्व, उत्सवादि जो विभिन्न नामों से प्रसिद्ध है, वे यहाँ मिलेंगे, कारण *बैद्यनाथ* पंचांग' भारत के सभी प्रान्तों के लाखों-लाखों लोग सादर देखते हैं। कौन महीने में कौन सा गोल, अयन ऋतु आदि है यह भी आपको पंचांग के शीर्ष के ऊपर लिखा मिलेगा। इसी के सामने हर प्रतिपदा अष्टमी के स्पष्ट ग्रहों के चक्र के प्रथमादि क्रम से अंक-राशि अंश, कला, विकला में दिया गया है। 'व' के माने, यह उल्टा चल रहा है, जानें। आरंभ से पंचांग का इतिहास, उपयोग व देखने की विधि, राजा मंत्री अन्वेषित, अनेक विषयप्रतिपादक चित्र है, वर्षफल, मासफल, राशिफल, आय-व्यय-चक्र, ग्रहण विचार ग्रहों के उदयास्त, वक्री मार्गी समय विविध स्वरूप व उपयोग, शुद्धातिशुद्ध उपनयन, विवाह, बसनामुहूर्त्ता, यात्रा मुहूर्त्त, राशि बोधक चक्र, रामशलाका आदि विषय है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

श्री संवत् २०५९ का वर्ष-फल

पूर्व सम्पादक :- न्यायशास्त्र चूड़ामणि प्राध्यापक, ज्योतिषशास्त्र धुरन्धर,
ज्योतिषाचार्य, न्यायरत्न, पण्डितभूषण, आचार्य स्व. श्रीजनार्दनशास्त्री खुण्टे,
वर्तमान सम्पादक :- ज्योतिषाचार्य, ज्योतिषमणि, पं. नरहरि जनार्दन शास्त्री खुण्टे एवं
ज्योतिषशास्त्री, ज्योतिषविद् पं. भक्तवत्सल जनार्दनशास्त्री खुण्टे,
के. १८/१८ "खुण्टेप्रासाद" धनधान्येश्वर, वाराणसी, फोन : ३३१३२५, ३३६७६४

जयति जगतः प्रसूतिर्विश्वात्मासहजभूषणं नमसः ।
द्रुतकनकसदृशः दशशतमयूखमालार्चित सविता ।।

विश्व का एकमेव हिन्दू राष्ट्र नेपाल सहित धार्मिक अखण्ड भारत में वर्षारम्भ प्रान्त भेद से है । जैसे कहीं चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से, कहीं कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा से, कहीं वैशाखी से इत्यादि, परन्तु हमारी अखण्ड भारत की धार्मिक एकता यह है कि सम्पूर्ण भारत के राजा तथा उसका मन्त्री मण्डल का कार्यारम्भ एक ही दिन से होता है । वह शुभ दिन है चैत्र शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा । उस दिन से नववर्षारम्भ का वर्ष पति राजा और वैशाखी पर्व का वर्ष पति प्रधानमन्त्री और उसका पूर्ण मन्त्री मण्डल कार्यरत होता है । तदनुसार भारतीय नववर्षारम्भ चैत्र शुक्लपक्ष प्रतिपदा शनिवार १३ अप्रैल सन् २००२ से १ अप्रैल मंगलवार २००३ तक राजा शनि व प्रधान मन्त्री रवि का वर्चस्व रहेगा ।

१३ अप्रैल से ही उत्तर भारत में धार्मिक, सामाजिक, व्यापारिक, राजकीय, राजनैतिक सभी कार्यों में मन्मथ नाम के संवत्सर का तथा दक्षिण भारत में नल नाम के संवत्सर का जनता उपयोग करेगी ।

मन्मथ नाम के संवत्सर का फल - धान्य, परिपूर्ण होगा, मंत्रियों में विरोध उत्पन्न होगा । चैत्र में कहीं-कहीं वर्षा होगी, अन्न सस्ता होगा, आगे खाद्यान्न के दामों में तेजी आयेगी, नये-नये रोग उत्पन्न होंगे, वस्त्र सस्ते होंगे । सावन में वर्षा कम होगी भाद्रपद मास में वर्षा अच्छी होगी ।

राजा शनि के कारण राजशासन की तरह प्रायः एक तन्त्री शासन चलेगा । अखण्ड भारत में वर्षा सामान्य ही होगी, परन्तु कहीं-कहीं बहुत तेज वर्षा होने से जन-धन की हानि होगी और कहीं सूखा पड़ने की सम्भावना है, टिड्डी दल, मूषक सक्रिय होकर फसल को नुकसान पहुंचायेंगे । शीत खूब पड़ेगा, तथा किसी विशेष रोग से जन हानि हो सकती है । आंधी-तूफान से काफी नुकसान होगा । बाहरी शत्रु आक्रमण कर सकता है, सावधान रहना चाहिए, गृहकलह से जनता त्रस्त होगी, आतंकवादी कहीं-कहीं अराजकता फैलाने में सफल हो सकते है । शान्तिवार्ता सफल होगी। लोहे का व्यापार बढ़ेगा । धान्य वस्त्र और शस्त्र महंगे होंगे । बिजली, गैस, अरहर, मूंग, चना, रेशमी वस्त्र, ऊँख आदि के दाम बढ़ेंगे । शासन द्वारा धीरे-धीरे परन्तु कोई ठोस कार्य होने से यश बढ़ेगा । विश्व में भारत की शक्ति प्रख्यात होगी । विश्व की कोई शक्ति भारत को नीचा नहीं दिखा सकती । शत्रु को नष्ट करना होगा । आर्थिक स्थिति कुछ जरुर सुधरेगी । परराष्ट्र से व्यापार अच्छा होगा । नये-नये अनेक कारखाने बनेंगे। विज्ञान में प्रगति होगी । प्रगति की ओर ले जाने के लिए नया आविष्कार प्राप्त होगा। शत्रु पैदा होंगे परन्तु वह नष्ट भी होंगे। बड़े-बड़े राष्ट्रों का शान्ति स्थापन के विषय में मतैक्य होगा, व्यापारिक समझौते होंगे । पाकिस्तान में गृह कलह होने की सम्भावना है । पूर्व देशों में भूचाल आने की सम्भावना है । रेलवे तथा बड़े कारखानों में भयंकर अपघात से जन-धन की हानि होने की सम्भावना है । देश के महान नेता का स्वर्गारोहण होगा । सोने के दामों में उतार-चढ़ाव होता रहेगा । मुस्लिम देशों से सभी देश सावधान रहने का सोचेंगे । कहीं भूकम्प आ सकता है, कहीं के कास्तकार प्रसन्न होंगे, तथा कहीं के किसान काफी दुःखी रहेंगे, सरकार कोरा आश्वासन देती रहेगी । चोरी, डकैती, लूट हत्या, अपहरण की घटना अधिक होने से व्यापारी वर्ग दुःखी रहेगा । भारत का वैभव अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में बना रहेगा, पड़ोसी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

देश कुछ उपद्रव कर सकता है किन्तु वह पराजित होगा। सारा भारत एक होकर रहेगा, पूर्व-धान्य, अग्र-धान्य प्रचुर होगा। निर्माण कार्य खूब होगा, अनेक बांध बनेंगे, और नहरें निकलेंगी। अर्थ व्यवस्था सुधरेगी, सेना दक्ष रहेगी, आतंरिक सुरक्षा होगी, न्याय विभाग दक्षता से कार्यरत होगा, विदेशों से मैत्री बढ़ेगी। युद्ध नीति शत्रु को भयभीत रखेगी, विज्ञान क्षेत्र की उन्नति होगी, कला-कौशल में विजय मिलेगी, अनेक योजनाएं बनेंगी। ये योजना अवश्य लाभदायक होगी। बाढ़ के कारण कहीं-कहीं नुकसान होगा, वर्षा अच्छी होगी।

मन्त्री सूर्य होने के कारण- व्यापारियों को लाभ होगा, अधिकारियों का प्रजा के प्रति क्रूर व्यवहार, चोरी, डकैती, की घटनाएं अधिक होंगी। अन्नों की पैदावार अच्छी होगी। पूर्व धान्येश बुध, मेघेश शनि, रसेश गुरु, फलेश शुक्र, ये अपने काम ठीक करेंगे।

ज्ञान के क्षेत्र में भारत का गौरव बढ़ेगा। केतु तोड़-फोड़ हड़ताल, असहयोग द्वारा कार्य बिगाड़ना चाहता है किन्तु शासन कड़ाई से बचाने का प्रयत्न करेगा। राजनीति में ऊतार-चढ़ाव बनेगा। विदेशों से भरपूर सहयोग प्राप्त होगा। भारत का वर्चस्व बढ़ेगा। निर्माण कार्य में तेजी आयेगी। दैवी प्रकोप से सरकार चिन्तित होगी। किसी विशिष्ट व्यक्ति की हानि होगी। कुछ-कुछ मतभेद होते रहेंगे। सीमा पर युद्ध जैसी स्थिति उत्पन्न होगी। सरकार कड़ाई से जवाब देगी। बाद में समझौते का प्रयास भी करेगी। सूचना एवं संचार विभाग में उन्नति होगी। नई-नई योजनाऐं बनेंगी। देश के विकास के लिए सभी बातें करेंगे। वर्षा अच्छी होने से कास्तकार प्रसन्न होंगे। शासक जनता के हित में कार्य होने के लिए योजनाएँ बनायेंगे। खाद्यान्न के दाम बढ़ने से आक्रोश होगा। रेल तथा यान दुर्घटना से सरकार चिन्तित होगी। उग्रवादी लोग हत्या करेंगे। देश में मांगलिक व धार्मिक कार्य अधिक होंगे। भारत पड़ोसी देशों से सम्बन्ध मधुर बनाना चाहेगा। सभी प्रकार के संघर्ष में देश को विजय मिलेगी। प्रचुर धान्य पैदा होगा। वैदेशिक नीति में भारत पूर्ण सफल रहेगा। व्यापार की दृष्टि से दूसरे राष्ट्रों से सम्बन्ध सुधरेगा। अधिकांश कार्य शान्ति से पूर्ण होने का योग है। न्यायपालिका के प्रभावों में वृद्धि होगी। देश के विकास में सबको सहयोग करना चाहिए। हड़ताल, तोड़फोड़, घेराव करके देश की उन्नति में बाधा नहीं पहुँचानी चाहिए। आगजनी वगैरह करने से देश का यानि आप अपना ही नुकसान करते है। देश की एकता बरकरार रखें। देश में शान्ति हो व कोई बाधा न आये, शत्रु पराजित हो इसके लिए सभी को संकल्प के साथ यज्ञ, पूजा करना चाहिए।

ईश्वर सबको खुश व निरोग रखें।

भारतीय नववर्ष संवत् २०५९ पर हमारी शतशत मंगल शुभकामनाऐं :- *- भक्तवत्सल खुण्टे*

श्री संवत् २०७९ में मेषादि द्वादश राशियों का फल

मेष- (चु, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ) मेष राशि वालों को साढ़ेसाती चल रही है। १६ जुलाई २००२ तक शनि वृष राशि में रहेंगे। आर्थिक कष्ट, पारिवारिक तनाव व रोग होने की भी संभावना है। १६ जुलाई २००२ से ११ जनवरी २००३ तक शनि मिथुन राशि में रहेंगे। इस समय तक आप साढ़ेसाती से बचे रहेंगे। परन्तु सावधान रहना होगा, दुर्घटना होने की सम्भावना है। ११ जनवरी २००३ के बाद शनि पुनः वृष राशि में चले जायेंगे। कुसंगति से बचें, धन हानि की सम्भावना है। किसी-किसी काम में बहुत मन लगेगा किसी में बिलकुल ही नहीं लगेगा। आपसी खट-पट चलेगी। पदोन्नति होगी। मंगलकार्य यशस्वी होंगे। सज्जन मित्र, पुत्र, वाहन, अलंकार सम्मान मिलेगा। अग्नि प्रकोप तथा दुष्ट जंतुओं से कष्ट होगा। आलस्य से काम बिगड़ेगा। मकान विषयक चिन्ता दूर होगी। इस वर्ष आप द्वारा नया व्यापार शुरु होने की सम्भावना है, जो लाभप्रद सिद्ध होगा। आप संवेदनशील व रोमांटिक रहेंगे। इस वर्ष नौकरी में थोड़ी मेहनत के बाद पदोन्नति की आशा है।

वृषभ – (इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वु, वो) वृष राशि वालों को भी साढ़ेसाती चल रही है। जुलाई के बाद काम में सफलता मिलेगी, रुके काम होने लगेंगे। व्यापार में उन्नति तथा नौकरी में पदोन्नति होगी आत्मविश्वास

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection, Jammu. Digitized by eGangotri

बढ़ाना होगा । सन्तान की दृष्टि से थोड़ा कष्ट होगा । वृष राशि वालों के लिए यह वर्ष संघर्ष के बाद सफलता प्राप्ति वाला है । न्याय, अधिकारों तथा मान-सम्मान के लिए लड़ेंगे । सामाजिक कार्यों के प्रति आप पूरी तरह समर्पित रहेंगे । धर्म-कार्य में बाधा उत्पन्न होगी । धन हानि भी हो सकती है । रोग व शारीरिक पीड़ा होने की सम्भावना है । खून की जांच करके उपाय करें अन्यथा उसमें फिजूल खर्च होगा । सूझ अच्छी रहेगी, व्यापार बढ़ेगा । संयत रहने से धन की सुरक्षा होगी । स्त्री द्वारा अच्छा धन लाभ होगा । बड़ों का आशीर्वाद लाभ दायक है ।

मिथुन– (का, की, कू, घ, ङ, छ, के, को, हा) आपको भी साढ़ेसाती चल रही है । व्यापार में हानि व पारिवारिक क्लेश होने की सम्भावना है । न्यायालय सम्बन्धित परेशानियां आ सकती हैं । कार्य आपके पक्ष में हो इसके लिए कड़ा संघर्ष व प्रयत्न करना होगा । ३ जुलाई बाद कुछ सुधार होगा । व्यापार में उन्नति, अर्थिक लाभ प्राप्त होगा । पेट की शिकायत रहेगी । कर्ज बढ़ेगा । परन्तु ईश्वर आराधना करें तो सभी कष्ट दूर होकर आगे सफलता मिलेगी, सम्मान-राज सम्मान भी मिल सकता है । और बातों में वर्ष मध्यम है । स्त्री को शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ेगा । खूब स्नेह, श्रद्धा पूर्वक ईश्वर आराधना से सम्मान व धन की सुरक्षा होगी । पैसा अच्छा कमायेंगे, स्त्री सुखी रहेगी । सभी काम आसानी से होते रहेंगे । आप पर कोई झूठा आरोप लगा सकता है जिससे मनस्ताप व धन हानि हो सकती है । भाइयों का पूर्ण सहयोग रहेगा । आप कोई भी बात अपने पक्ष में मोड़ने में कामयाब होंगे । "श्री राम" लिखकर बिल्व पत्र शिव को चढ़ावें, सुखी रहेंगे ।

कर्क– (ही, हू, हे, हो, उ, डी, डू, डे, डो) लौहपाद का शनि आपको कुछ लाभ दिलायेगा, यश बढ़ेगा, व्यापार व नौकरी में लाभ होगा । परन्तु स्वास्थ के प्रति लापरवाही न करें, कष्ट हो सकता है । धन हानि होने की सम्भावना है, बहुत दिनों से सताने वाला शत्रु परास्त होगा । नये कार्य से लाभ होगा । परीक्षा में सुयश मिलेगा । स्त्री का सहयोग भरपूर मिलेगा । राजकीय संकट आने की सम्भावना है । पुत्रों के सद्वृत्तों से सन्तोष, समाधान रहेगा । स्त्री के तथा खुद के गुप्त रोगों से आप चिन्तित होंगे, उपाय होने में अड़चन आयेगी । कार्य क्षेत्र में अव्यवस्था दूर कर पूर्ण व्यवस्था कायम करेंगे । व्यक्तिगत व व्यापारिक मामलों में नियन्त्रण स्थापित करेंगे । मौन रहने से लाभ होगा ।

सिंह– (मा, मी, मू, मे, टा, टी, टू, टे) नये सम्पर्क से आप लाभ उठा सकते हैं, परन्तु इसके लिए परिश्रम करना होगा । मानसिक तनाव व पारिवारिक कष्ट । जीवन में आई चुनौती को आप स्वीकार करेंगे जिससे शीघ्र ही सफलता आपको मिलेगी । कार्य क्षेत्र में शत्रुओं से सावधान रहे, खेल, कूद, कला से आपको लाभ मिलेगा । पैसा गिलने में थोड़ी देरी लगेगी, परन्तु लाभप्रद सिद्ध होगा । धन की सुरक्षा, स्थान की स्थिरता, बुद्धि की तीक्ष्णता, अनेक लोगों से कलह का बचाव होने के लिए आप को गुरु कृपा प्राप्त करनी होगी । आरोग्य बना रहेगा । कुछ चल सम्पत्ति नष्ट होगी । व्यापार करने के पहले तीर्थ यात्रा करें, गाय व मछली को चारा दें प्रचुर लाभ होगा ।

कन्या– (टो, पा, पी, पू, ष, ठा, ठ, पे, पो) कन्या राशि वालों के लिए यह वर्ष सामान्य लाभ प्रद है । बेकार की बाते विचार करने से मानसिक कष्ट होगा । सकारात्मक बातें सोचकर कार्य करें तो लाभ अवश्य मिलेगा, धूर्तो की बातों में फँसकर अर्थ हानि होगी । स्त्री व संतान के कारण फिजूल खर्च बढ़ेगा । शरीर पीड़ा होगी । गृह कलह से शान्ति भंग होगी । सांम्पत्तिक विषयों से मित्रों में मन-मुटाव होगा । आपकी प्रतिष्ठा बनी रहेगी, नौकरी में पदोन्नति होगी । व्यापार में पहले से अच्छा लाभ होगा, राम रक्षा का पाठ किया करें । मानसिक शान्ति मिलेगी ।

तुला– (रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तु, ते) आपको शनि की ढ़ैया चल रही है । जो अपना प्रभाव तो दिखायेगी । आलस्य रहेगा, किसी काम में मन नहीं लगेगा, पारिवारिक कष्ट भी होगा परन्तु आगे कुछ सुधार होगा । व्यापार में सामान्य लाभ होगा, अपने आरोग्य के प्रति सावधान रहें, रोग होने की सम्भावना है । नये शत्रु

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

निर्माण होंगे। वाहन से चोट लगने की सम्भावना है। शुभ कामों में व्यय होगा। नये सहयोगी मिलेंगे, स्त्री का सहयोग मिलेगा। आलस्य का त्याग करेंगे तभी व्यापार में लाभ मिलेगा। पुत्र का सहयोग मिलेगा। नौकरी में पदोन्नति होगी, सत्संगति से मानसिक शान्ती मिलेगी। ईश्वर आराधना करें व माता-पिता को रोज प्रणाम किया करें सभी रोग व कष्ट दूर होंगे।

वृश्चिक- (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू) वृश्चिक राशि वालों को भी शनि के कारण आर्थिक कष्ट, मानसिक तनाव, किसी काम में मन नहीं लगेगा, आलस्य बना रहेगा। मगर बीच-बीच में कुछ सुधार होता रहेगा, लाभ भी होगा, कुछ रुके काम पूरें होंगे। मन तथा बुद्धि में तालमेल नहीं रहेगा, किसी निर्णय में जल्दबाजी न करें। कुछ अच्छे कार्य करने से सौभाग्य वृद्धि होगी। भयभीत रहेंगे। खेती की उपज उत्तम होगी। नये मित्र के सहयोग से तरक्की होगी। आप आर्थिक और व्यापारिक योजनाएं नियोजित कर खामियों को ढ़ाकने में सफल होंगे। रुकावट दूर करने और कार्य की अधिकता में व्यस्त रहेंगे। पैसा अनेक मार्गो से आयेगा परन्तु बचेगा नहीं। पुराने झगड़े बढ़ेंगे। पुत्रों के यश के साथ आपका यश बढ़ेगा। भूमि वाहन का सुख उत्तम हैं ईश्वर आराधना से बाधा दूर होगी कार्य पूर्ण होंगे।

धनु- (ये, यो, भा, भी, भू, था, फ़, ढ़ा, ये) चिन्ता थोड़ी कम होगी, व्यापार- धन्धे में उन्नति होगी, भाग्योदय व पारिवारिक सहयोग पूरा मिलेगा। किसी कार्य को करने के पहले उस पर विचार कर लें। यात्रा का योग है। आपको व सह धर्मचारिणी को शरीर सुख श्रेष्ठ है। आपके घर मंगल कार्य होगा। राज सम्मान मिलेगा, रोग होने की सम्भावना है। दक्षता आदि गुणों का यश फैलेगा। दुष्ट संगति से कुटिलता बढ़ेगी। पुत्र तथा मित्र से झगड़ा हो सकता है। स्थान लाभ होगा, बड़ों के आशीर्वाद से ही उन्नति होने वाली है। मित्र बल बढ़ेगा। काम-धन्धा व्यवसाय में भी लाभ होने लगेगा। हनुमान चालिसा का पाठ नित्य करें।

मकर- (भो, जा, जी, जू, जे, जो, खा, खी, खू, खे, खो, गा, गी) मकर राशि वालों को आशातीत धनागम होगा, अकल्पित अपव्यय भी होगा। राज सम्मान से कीर्ति को चार चांद लगेंगे। सभ्य मित्रों की वृद्धि होगी। सभी परिवार सुखी होगा। शत्रु नाश व गृह निर्माण होगा। वाणी की चतुराई के कारण आपका कोई काम नहीं रुकेगा। स्वास्थ के प्रति सावधानी बरतें। आपको वायुरोग सतायेगा। राजनीति से भी आपको लाभ मिलेगा। व्यापार व नौकरी में पदोन्नति होगी। संतान के कारण थोड़ा कष्ट होगा, अपमान भी हो सकता है। कलह के कारण मानसिक चिन्ता बनी रहेगी। ईश्वर चिन्तन करने से स्वास्थ ठीक रहेगा।

कुम्भ- (गु, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा) कुम्भ राशि वालों को बड़ो के आशीर्वाद से स्थिर सम्पत्ति होगी। आप खुद अपने वचन का पालन करें। पुत्र प्राप्ति का योग है। स्त्री को शारीरिक पीड़ा होगी। जमीन के क्रय-विक्रय से लाभ, वाणी की कठोरता से दुश्मनों की बढ़ोत्तरी होगी, वाणी पर नियन्त्रण रखें। नौकरी में लाभ हो सकता है। आप जिनका भला करेंगे वे ही आपकी बुराई करेंगे। आपका कोई कुछ नहीं कर सकेगा, ईश्वर कृपा आप पर बनी रहेगी। कृषि से लाभ होगा। नौकरी में कुछ बाधा आ सकती है। आपको शनि के कारण कष्ट होगा, शनि की ढैय्या, कर्ज में वृद्धि, मानसिक क्लेश, दुर्घटना वगैरह कराती है। हनुमान चालिसा का पाठ करने से लाभ होगा, कष्ट कम होगा।

मीन- (दी, दू, थ, झ, त, द, दो, चा, ची) शिक्षा के क्षेत्र में तथा व्यापार- धन्धे में लाभ होता रहेगा। पुरुषार्थ में वृद्धि होगी। शासकीय कार्मों में सफलता मिलेगी। ३ जुलाई तक चौथा गुरु कष्ट देगा शत्रु भय बना रहेगा, आर्थिक कष्ट भी होगा। ३ जुलाई के बाद पंचम गुरु सब ठीक करेगा। आरोग्य अच्छा रहेगा फिर भी बिगड़ने की शंका से मन भयभीत रहा करेगा, अकस्मात व्यापार में अच्छा धन लाभ होगा। अपमान होने की सम्भावना है। शान्ती की तलाश में अशान्ति ही मिलेगी। पुत्रों की उन्नति में बाधा उत्पन्न होगी। नई सम्पत्ति बढ़ेगी, दुश्मनों के षड्यन्त्र विफल होंगे। आप की कार्य शक्ति में वृद्धि होगी। न्यायालय सम्बन्धित विवाद आपके पक्ष में होगा। यात्रा का लाभ मिलेगा, व्यापार से लाभ होने लगेगा। ईश्वर चिन्तन करने से सभी बाधा दूर होगी।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

संवत् २०५९ में ग्रहण कहां है

सूर्यग्रहण :– ज्येष्ठ कृष्ण ३०, ता. १० जून २००२ को आंशिक सूर्य ग्रहण, आस्ट्रेलिया, कम्बोडिया, क्यूबेन, चीन, कनाड़ा, जापान, कोरिया, हांगकांग, इन्डोनेशिया, मेक्सिको, फिलिपिन्स, उत्तरी अमेरिका, वियतनाम में दिखाई देगा। भारत में यह सुदूर पूर्वी भागों में कुछ स्थानों पर सूर्योदय के बाद ५ से १५ मिनट दिखाई देगा।

दुसरा मार्गशीर्ष कृष्ण ३०, ता. ४ दिसम्बर २००२ को यह पूर्ण सूर्य ग्रहण आस्ट्रेलिया, अंगोला, कमरुन, कांगो, वोत्सवाना, केन्या, मैडागास्कर मोझांबीक, नामीबिया, नाइजिरियां, दक्षिण अफ्रीका, युगांडा, झायेरे, झांबिया, जिम्बाब्वे आदि स्थानों में दिखाई पड़ेगा।

यह सूर्य ग्रहण भारत में दृष्य नहीं है।

नोट :– इस वर्ष चन्द्रग्रहण नहीं है।

विविध मुहूर्ता:

कुआं, तालाब और बावली खुदवाना :– शुभ नक्षत्र अनु., ह, तीनों उ, रो, ध, श, मघा, पूर्वाषाढ़ा, रे, पुष्य, मृगशिरा। चन्द्रमा मकर के उत्तरार्द्ध, मीन या कर्क में हों, बुध या गुरु लग्न में हो, शुक्र १० स्थान में हो और पापग्रह निर्बल हो, शुभ है।

दुकान करना :– शुभ नक्षत्र– मृ, रे, चि, अनु, तीनों उत्तरा, रो, ह, अ, पुष्य, अभि। शुभ तिथियां– १, २, ३, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १५, ३०।

शुभ वार :– रवि, सोम, बुध, गुरु, शुक्र और शनि।

शुभ लग्न :– कुम्भ को छोड़कर सब शुभ हैं। जब तक शुक्र चन्द्रमा लग्न में हों, ८, १२ स्थानों में पापग्रह न हों व २, १०, ११ स्थानों में शुभ ग्रह हों।

बीज बोने का मुहूर्त :– राहु जिस नक्षत्र में हो, उससे गिनें। प्रथम ८ नक्षत्र शुभ हैं, बाद के ३ नक्षत्र अशुभ हैं। इसी प्रकार क्रम से १ शुभ, ३ अशुभ, १ शुभ, ३ अशुभ, १ शुभ, ३ अशुभ एवं ४ शुभ होते हैं। मंगलवार को तथा चौथ, नवमी, चतुर्दशी, अमावास्या इन तिथियों को बीज नहीं बोना चाहिए। जिस दिन बीज बोना है, उस दिन का नक्षत्र राहु से गिनने पर कैवां होता है, देखें। बाद राहु नक्षत्र से वह शुभ है या अशुभ देखकर शुभ नक्षत्र में बोआई करें प्रचुर फसल होगी। शुभ लग्न व शुभ तिथि भी रहे।

जल पूजन मुहूर्त :– विवाह के बाद व सौरी के बाद जल पूजा करनी होती है। उसके लिए चन्द्र, बुध, गुरुवार तथा २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३ तिथियां मृगशिर्ष, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, अनुराधा, नक्षत्र में तथा बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्र इन शुभ ग्रह स्वामिक ३-६, ९-१२, २-७, ४ लग्नों में जल पूजा करें भद्रा, व्यतीपात, वैधृति, महापात आदि कुयोग न हों।

पंचतारा ग्रहों में उदयास्त वक्री-मार्गी आदि विवरण

मंगल :– वर्षारम्भ में मंगल वृष राशि में रहेगा। २२ जून को पश्चिम में अस्त होगा। २६ सितम्बर को मंगल पूर्व में उदित होगा। वर्ष के अन्त में मंगल धनु राशि में रहेगा।

बुध :– वर्षारम्भ में बुध मेष राशि में रहेगा। तारीख १७ अप्रैल को बुध पश्चिम में उदय होगा। तारीख १२ मई को बुध वक्री होगा। तारीख २० मई को पश्चिम में अस्त होगा। तारीख ३ जून को बुध मार्गी होगा।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

तारीख ७ जून को पूर्व में उदित होगा। तारीख ११ जुलाई को पूर्व में अस्त होगा। तारीख ३ अगस्त को पश्चिम में उदय होगा। तारीख ६ सितम्बर को वक्री होगा। तारीख १५ सितम्बर को पश्चिम में अस्त होगा। तारीख २६ सितम्बर को मार्गी होगा। तारीख २ अक्टूबर को पूर्व में उदित होगा। तारीख २८ अक्टूबर को पूर्व में अस्त होगा। तारीख ८ दिसम्बर को पश्चिम में उदय होगा। तारीख २६ दिसम्बर को वक्री होगा। तारीख ७ जनवरी २००३ को पश्चिम में अस्त होगा। तारीख १६ जनवरी को पूर्व में उदित होगा। तारीख २१ जनवरी को मार्गी होगा। तारीख २६ फरवरी को पूर्व में अस्त होगा। तारीख १ अप्रैल को पश्चिम में उदय होगा। वर्ष के अन्त में बुध मेष राशि में रहेगा।

गुरु :– वर्षारम्भ में गुरु मिथुन राशि में रहेगा। तारीख ३ जुलाई से कर्क राशि में रहेगा। ता. ५ जुलाई को पश्चिम में अस्त होगा। तारीख १ अगस्त को पूर्व में उदित होगा। तारीख ४ दिसम्बर को वक्री होगा। वर्ष के अन्त में गुरु कर्क राशि में रहेगा।

शुक्र :– वर्षारम्भ में शुक्र मेष राशि में रहेगा। तारीख ३ अक्टूबर को वक्री होगा। तारीख २१ अक्टूबर को पश्चिम में अस्त होगा। तारीख २८ अक्टूबर को पूर्व में उदित होगा। तारीख १४ नवम्बर को मार्गी होगा। वर्ष के अन्त में शुक्र कुम्भ राशि में रहेगा।

शनि :– वर्षारम्भ में शनि वृष राशि में रहेगा। तारीख २४ मई को पश्चिम में अस्त होगा। तारीख २६ जून को पूर्व में उदित होगा। तारीख १६ जुलाई को मिथुन राशि में रहेगा। तारीख ५ अक्टूबर को वक्री होगा। तारीख ११ जनवरी २००३ को वृष राशि में रहेगा। तारीख २८ फरवरी को शनि मार्गी होगा। वर्ष के अन्त में शनि वृष राशि में रहेगा।

इस वर्ष का आय-व्यय तथा बचत का विचार

आपकी जो राशि हों नीचे के दोनों चक्र में देखें, उसमें नीचे के दो अंक जोड़ दे, १ घटाकर ८ का भाग दें जो शेष बचें उसका फल क्रमशः १ में लाभ, २ में सौख्य, ३ में क्लेश, ४ में रोग, ५ में अपवाद, ६ में सम्मान, ७ में विजय, तथा ० में हानि होगी।

उदाहरणार्थ :- भरत की राशि धनु है, कल्पना करें कि ये २१ अक्षांश के उत्तर में रहते है। अतः उत्तर देश के चक्र में धनु राशि के नीचे ५ और ११ अंक है। इसका योग १६ हुआ, इसमें १ घटाया और ८ का भाग दिया तो शेष ७ बचा तो इसका फल विजय हुआ। ऐसे ही अभय की राशि मेष है। कल्पना करे की ये २१ अक्षांश के दक्षिण में रहते है। अतः दक्षिण देश के चक्र में मेष राशि के नीचे १४ और १४ अंक है, इसका योग २८ हुआ, इसमें से १ घटाया व ८ से भाग दिया तो शेष ३ बचा, इसका फल क्लेश हुआ। इसी प्रकार अपने-अपने राशि के फल होते है। दोनों राशि के आयों का योग ५ + १४ = १६ हुआ तथा दोनों राशि के व्ययों का योग ११ + १४ = २५ हुआ। अतः धनु एवं मेष राशि वालों ६ व्यय होगा। इसी प्रकार अपनी-अपनी राशि देखें।

२१ उत्तर अक्षांश के उत्तर देश में रहने वालों का आय-व्यय चक्र

राशि-	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
आय-	८	२	८	२	५	८	२	८	५	१४	१४	५
व्यय-	२	१४	११	५	५	११	१४	५	११	११	११	११

२१ उत्तर अक्षांश के दक्षिण देश में रहने वालों का आय-व्यय चक्र

राशि-	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
आय-	१४	८	११	५	८	११	८	१४	२	५	५	२
व्यय-	१४	८	५	५	१४	५	८	१४	८	३	२	८

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

विश्व में अपनी-अपनी राशि वालों का बचत कर्जा पट

राशि-	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
आय-	२२	१०	१६	७	१३	१६	१०	२२	७	१६	१६	७
व्यय-	१६	२२	१६	१०	१६	१६	२२	१६	१६	१३	१३	१६

मेषादि बारह राशियों का आय-व्यय तथा बचत पट

मेष, मकर, कुम्भ को ६ आय होगा।
वृषभ, तुला, धनु, मीन को १२ व्यय होगा।
मिथुन, कन्या, वृश्चिक को ३ आय होगा।
कर्क को ३ व्यय तथा सिंह को ६ व्यय होगा।
सबसे ज्यादा ६ आय मेष, मकर, कुम्भ राशि वालों को होगी।
सबसे ज्यादा १२ व्यय वृषभ, तुला, धनु, मीन राशि वालों को होगा।

ज्योतिष क्या है ? उसके लाभ क्या है ?

ज्योतिष शास्त्र की तीन शाखाएँ हैं, १- गणित अर्थात् विज्ञान, इसके परिणाम सब कोई प्रत्यक्ष देखते हैं। २- संहिता विज्ञान जिसे समझ नहीं सकता कारण यह विज्ञान के ऊपर का विचार है, इसमें मुहूर्त, शकुन, जीवों के लक्षण और उसके संयोग से होने वाले फल आदि हैं। मुहूर्त प्रायः प्रसिद्ध है परंतु उस पर श्रद्धा कम करके मुहूर्त का उपयोग करने का नाटक खेलवाड हो रहा है। रविवार है, धर्मशाला खाली है, बाजा वाला मिल रहा है अतः किसी रविवार को ही विवाह कर लें, विहित नक्षत्र, वार, लग्न बिना देखे ही सुधारक तथा कथित समाजसेवी और प्राचीन शास्त्र सम्मत कार्यों के महत्व को बिना पढ़े, बिना जाने, टिकाकर खुद न मानें कुछ तो भी करके मुहूर्त की टिंगल करने वाले अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारते है।

सूर्य नमस्कार

अथ ध्यानम् - ध्येयः सदा सवित्र मण्डल मध्यवर्ती नारायणः सरसिजासनसनिविष्टः। केयूरवान् मकर कुण्डल वान् किरीटी। हारी हिरण्मयवर्पु-धृतशङ्खचक्रः १ ॐ मित्राय नमः २ ॐ रवये नमः ३ ॐ सूर्याय नमः ४ ॐ भानवे नमः ५ ॐ खगाय नमः ६ ॐ पूष्णे नमः ७ ॐ हिरण्यगर्भाय नमः ८ ॐ भानवे नमः ९ ॐ आदित्याय नमः १० ॐ सवित्रे नमः ११ ॐ अकीय नमः १२ ॐ भास्कराय नमः ।। आदित्याय नमस्कारान् ये कुर्वन्ति दिने-दिने। जनमान्तर सहस्त्रेषु दारिद्रयं नोप जायते ।।१।।

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम्। सूर्यपादोदकं तीर्थे जठरे धारयाम्यम्।

पंचांग में दिए गए कुछ सांकेतिक अक्षरों के पूर्ण रूप

नक्षत्र नाम

अः अश्विनी। भः भरिणी। कृः कृत्तिका। रोः रोहिणी। मृः मृगशीर्ष। आः आर्द्रा। पुनः पुनर्वसु। पुः पुष्य। श्लेः आश्लेषा। मः मघा। पूः पूर्वाफाल्गुनी। उः उत्तराफाल्गुनी। हः हस्त। चिः चित्रा। स्वाः स्वाती। विः विशाखा। अः अनुराधा। ज्येः ज्येष्ठा। मूः मूल। पूः पूर्वाषाढ़ा। उः उत्तराषाढ़ा। श्रः श्रवण। धः धनिष्ठा। शः शततारका। पूः पूर्वाभाद्रपदा। उः उत्तराभाद्रपदा। रेः रेवती।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

चन्द्रराशिनाम

मे: मेष । वृ: वृषभ । मि: मिथुन । क: कर्क । सिं: सिंह । कं: कन्या । तु: तुला । वृ: वृश्चिक । ध: धनु । म: मकर । कुं: कुम्भ । मी: मीन ।

योगनाम

वि: विष्कुंभ । प्री: प्रीति । आ: आयुष्मान । सौ: सौभाग्य । शो: शोभन । अ: अतिगण्ड । सु: सुकर्मा । धृ: धृति । शू: शूलं । गं: गण्ड । वृ: वृद्धि । ध्रु: ध्रुव । व्या: व्याघात । ह: हर्षण । व: वज्रं । सि: सिद्धि । व्य: व्यतीपात (महापात) । व: वरीयान् । प: परीध । शि: शिव । सि: सिद्ध । सा: साध्य । शु: शुभ । शु: शुक्ल । ब्र: ब्रह्म । ऐं: ऐन्द्र । वैधृति (महापात) । स्पष्ट ग्रहों के चक्र में व: वक्री लिखा है । वह ग्रह उल्टा चल रहा है ।

करणनाम

व: बव । बा: बालव । कौ: कौलव । तै: तैतिल । ग: गर । व: वणिक् । भ: भद्रा । श: शकुनि । च: चतुष्पाद । ना: नाग । किं: किस्तुघ्न ।

सभी प्रकार से, दिन शुद्धि आदि रहते हुए भी कार्यारंभ में अपशकुन हुआ तो कार्य बिगड़ता है अत: शकुन की जानकारी जरुरी है । प्रथम अपशकुन होने पर एक प्राणायाम करके तक आगे कार्यारंभ करें । दोबारा अपशकुन होने पर आठ बार प्राणायाम करके तब आगे कार्यारंभ करें । चार बार अपशकुन होने पर वह कार्यारंभ छोड़ दे । निश्चित बुरा फल होता है । अपशकुन के बाद भी मनोत्साह रहे तो सबसे बड़ा शकुन है । कार्यारंभ करके मनुष्य सफल होगा । "निमित्ता शकुनादिभ्य: प्रधानों हि मनोजय" ।

गुरु-शुक्र का उदय अस्त कब कब

गुरु :- ६ जुलाई सन् २००२ को पश्चिम में अस्त होगा । ३१ जुलाई सन् २००२ को गुरु पूर्व में उदित होगा ।
शुक्र :- ३१ अक्टूबर सन् २००२ को शुक्र पश्चिम में अस्त होगा । ४ नवम्बर सन् २००२ को शुक्र पूर्व में उदित होगा ।

दोनों ही गुरु-शुक्र अस्त के पहले ३ दिन वृद्ध तथा उदय के ३ दिन बाद बाल रहते हैं । शेष विहित दिनों में उपनयन विवाहादि मंगल कार्य हो सकेंगे ।

पल्ली-पतन का शुभाशुभ फल

छिपकली यदि सिर पर गिरे तो राज्य प्राप्ति, ललाट पर बन्धु दर्शन, भौहों के बीच, नासाग्र पर रोग-कष्ट, दाहिने कान पर आयु वृद्धि, बायें कान पर प्रचुर-लाभ, नेत्रों पर बंधन, दक्षिण भुजा पर नृपतृल्यता, वाम भुजा पर राज्य-भय, कंठ पर शत्रु नाश, दोनों स्तनों पर दुर्भाग्य प्राप्ति, पेट पर भूषण लाभ, पीठ पर बुद्धिनाश दोनों जंघों पर शुभागमन, दोनों हाथों पर वस्त्र-लाभ, कंधे पर विजय, नाभि पर प्रचुर धन-प्राप्ति, कमर पर अश्व-लाभ दाहिनें पहुंचे पर मनस्ताप, बायें पर कीर्ति नाश, हृदय पर धन-लाभ, मुख पर मिष्ठान-भोजन, तलवों पर स्त्री नाश, एडी पर बंधन, केशान्त पर निश्चित मृत्यु, दाहिने पर यात्रा, बायें पर हानि और पैर के अंत में मृत्यु होती है । सफेद छिपकली गिरने से ही फल होगा । काली छिपकली का कोई फल नहीं होता । शुभाशुभ कोई फल होने वाली सफेद पल्ली पतन होने पर पहने हुए कपड़ों सहित स्नान करके श्री शिव को घी का दीप जलाना चाहिए ।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

श्री संवत् २०५९ के शुभ तथा शुद्ध विवाह एवं उपनयन मुहूर्त

उपनयन मुहूर्त

चैत्र शुक्ल पक्ष :- ५ बुधवार, १७ अप्रैल, मृगशीर्ष नक्षत्र शुद्ध है। मिथुन लग्न में ५ ग्रह इष्ट हैं। शुक्र, चन्द्र का दान करके। कर्क लग्न में ६ ग्रह इष्ट हैं, केतु, गुरु का दान करके।

वैशाख कृष्ण पक्ष :- ३ सोमवार २६ अप्रैल, अनुराधा नक्षत्र शुद्ध है। कर्क लग्न में ५ ग्रह इष्ट हैं। केतु, गुरु, चन्द्र का दान करके।

५ बुधवार १ मई, मूल नक्षत्र शुद्ध है। कर्क लग्न में ५ ग्रह इष्ट हैं। गुरु, चन्द्र, केतु का दान करके।

वैशाख शुक्ल पक्ष :- ५ शुक्रवार, १७ मई, पुनर्वसु नक्षत्र शुद्ध है। कर्क लग्न में ५ ग्रह इष्ट हैं। गुरु, शुक्र, चन्द्र, केतु का दान करके।

११ बुधवार २२ मई, उ.फा. नक्षत्र शुद्ध है। कर्क लग्न में ५ ग्रह इष्ट हैं। गुरु, शुक्र का दान करके।

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष :- १० गुरुवार २० जून, चित्रा नक्षत्र शुद्ध है। सिंह लग्न में ५ ग्रह इष्ट हैं। शुक्र का दान करके। ११ शुक्रवार २१ जून, स्वाती नक्षत्र शुद्ध है। सिंह लग्न में ५ ग्रह इष्ट है। शुक्र का दान करके।

माघ शुक्ल पक्ष :- २ सोमवार, ३ फरवरी, शततारका नक्षत्र शुद्ध है। मीन लग्न में ६ ग्रह इष्ट हैं। चन्द्र का दान करके। १० मंगलवार, ११ फरवरी रोहिणी नक्षत्र शुद्ध है। मीन लग्न में ७ ग्रह इष्ट हैं।

फाल्गुन कृष्ण पक्ष :- २ मंगलवार १८ फरवरी, पू.फा. नक्षत्र शुद्ध है। मीन लग्न में ५ ग्रह इष्ट हैं। चन्द्र का दान करके। ३ बुधवार १६ फरवरी, उ.फा. नक्षत्र शुद्ध है। मीन लग्न में ५ ग्रह इष्ट हैं।

चैत्र कृष्ण पक्ष :- २ गुरुवार २० मार्च, चित्रा नक्षत्र शुद्ध है। कर्क लग्न में ७ ग्रह इष्ट हैं। केतु का दान करके।

विवाह मुहूर्त

विशेष :- मंगलवार विवाह के लिए निषिद्ध है अतः मंगलवार के मुहूर्त नहीं दिये गये हैं।

चैत्र शुक्ल पक्ष :- १० सोमवार, २२ अप्रैल २००२ मघा नक्षत्र शुद्ध है। दिवा मिथुन लग्न में ५ ग्रह इष्ट हैं शुक्र, शनि का दान करके। दिवा कर्क लग्न में ५ ग्रह इष्ट हैं, बुध, गुरु का दान करके।

१२ बुधवार, २४ अप्रैल २००२ दिवा मिथुन लग्न में ५ ग्रह इष्ट हैं। शुक्र, शनि का दान करके। दिवा कर्क लग्न में ५ ग्रह इष्ट हैं। बुध, गुरु का दान करके।

१५ शनिवार, २७ अप्रैल २००२ स्वाति नक्षत्र शुद्ध है। दिवा कर्क लग्न में ६ ग्रह इष्ट हैं। गुरु का दान करके। दिवा कन्या लग्न में ६ ग्रह इष्ट हैं।

वैशाख कृष्ण पक्ष :- ५ बुधवार, १ मई २००२ मूल नक्षत्र शुद्ध है। दिवा कन्या लग्न में ६ ग्रह इष्ट हैं।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

११ बुधवार ८ मई २००२ उ.भा. नक्षत्र शुद्ध है। रात्रौ मकर लग्न में ५ ग्रह इष्ट हैं। रात्रौ कुम्भ लग्न में, ५ ग्रह इष्ट हैं। १२ गुरुवार ९ मई २००२ रात्रौ मकर लग्न में ५ ग्रह इष्ट हैं। रात्रौ कुम्भ लग्न में ५ ग्रह इष्ट हैं।

वैशाख शुक्ल पक्ष :– ७ रविवार १९ मई २००२ रात्रौ मीन लग्न में ७ ग्रह इष्ट हैं। चन्द्र का दान करके।

८ सोमवार २० मई २००२, मघा नक्षत्र शुद्ध है। दिवा कर्क लग्न में ६ ग्रह इष्ट हैं। गुरु, शुक्र का दान करके।

११ बुधवार २२ मई २००२ उ.फा. नक्षत्र शुद्ध है। दिवा कर्क लग्न में ५ ग्रह इष्ट हैं। गुरु, शुक्र का दान करके।

१३ शुक्रवार २४ मई २००२, स्वाती नक्षत्र शुद्ध है। दिवा कन्या लग्न में ५ ग्रह इष्ट हैं, मंगल का दान करके। रात्रौ मीन लग्न में ६ ग्रह इष्ट हैं, चन्द्र का दान करके।

१५ रविवार २६ मई २००२ अनुराधा नक्षत्र शुद्ध है। रात्रौ मकर लग्न में ५ ग्रह इष्ट है। शुक्र का दान करके। रात्रौ मीन लग्न में ६ ग्रह इष्ट हैं।

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष :– १ सोमवार, २७ मई २००२ मूल नक्षत्र शुद्ध है। रात्रौ मीन लग्न में ६ ग्रह इष्ट हैं।

११ गुरुवार ६ जून २००२ रेवती नक्षत्र शुद्ध है। दिवा तुला लग्न में ५ ग्रह इष्ट है। चन्द्र का दान करके।

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष :– ६ रविवार १९ जून २००२ मघा नक्षत्र शुद्ध है। दिवा कर्क लग्न में ५ ग्रह इष्ट हैं। गुरु का दान करके। दिवा तुला लग्न में ५ ग्रह इष्ट हैं। बुध का दान करके।

९ बुधवार १९ जून २००२ हस्त नक्षत्र शुद्ध है। दिवा कर्क लग्न में ५ ग्रह इष्ट है। गुरु का दान करके।

११ शुक्रवार, २१ जून २००२ स्वाती नक्षत्र शुद्ध हैं। दिवा कन्या लग्न में ५ ग्रह इष्ट हैं। मंगल का दान करके।

१२ शनिवार, २२ जून २००२ अनुराधा नक्षत्र शुद्ध है। दिवा तुला लग्न में ५ ग्रह इष्ट हैं। बुध का दान करके। रात्रौ मीन लग्न में ५ ग्रह इष्ट हैं। रात्रौ मेष लग्न में ६ ग्रह इष्ट हैं।

आषाढ़ कृष्ण पक्ष :– ६ सोमवार १ जुलाई २००२ उ.भा. नक्षत्र शुद्ध है। रात्रौ मेष लग्न में ६ ग्रह इष्ट हैं। चन्द्र का दान करके।

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष :– १ बुधवार २० नवम्बर २००२, उ.भा. नक्षत्र शुद्ध है। रात्रौ कर्क लग्न में ५ ग्रह इष्ट हैं। शुक्र, शनि का दान करके। २ गुरुवार २१ नवम्बर २००२, रोहिणी नक्षत्र शुद्ध है। दिवा मेष लग्न में ५ ग्रह इष्ट हैं। बु.शु. मंगल का दान करके। रात्रौ कर्क लग्न में ५ ग्रह इष्ट हैं। शुक्र, शनि का दान करके।

९ गुरुवार २८ नवम्बर २००२, उ.फा. नक्षत्र शुद्ध है। रा. कर्क लग्न में ५ ग्रह इष्ट है। शनि का दान करके। रात्रौ कन्या लग्न में ५ ग्रह इष्ट हैं। चन्द्र का दान करके।

माघ कृष्ण पक्ष :– २ सोमवार २० जनवरी २००३, मघा नक्षत्र शुद्ध है। सायं गोधुलि में शुभ है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

shells-180-98

गर्मियों में शरीर के लिये प्राकृतिक शीतलता

ग्रीष्म ऋतु की शुरआत, समय है बैद्यनाथ गुलकंद की शुरआत का। गुलाब की पंखुडियों से निर्मित इस असली गुलकंद में है, सदीयों से शरीर को शीतलता पहुंचाने के लिये विख्यात प्रवाल, यह आम्लता, कब्जीयत, आँखों में जलन आदि से आराम दिलाता है. आज ही बैद्यनाथ गुलकंद असली ही ले आइये

बैद्यनाथ
गुलकंद
प्रवाल से समृध्द
आपके शरीर को रखे शीतल

पेट की गैस?

गैसान्तक बटी लीजिए शीघ्र आराम पाईए।

पेट की गैस, खट्टी डकारें, गैस की तकलीफ से होनेवाली बेचैनी, घबराहट और अपचन आदि उदर विकारों के लिये लीजियें।

बैद्यनाथ
गैसान्तक बटी
अपचन और गैस की सुप्रसिध्द बटी

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

रात्रौ तुला लग्न में ६ ग्रह इष्ट हैं।

४ बुधवार २२ जनवरी २००३, उ.फा. नक्षत्र शुद्ध है। गोधुलि में शुभ है। रात्रौ तुला लग्न में ५ ग्रह इष्ट हैं। चन्द्र का दान करके। ८ शनिवार २५ जनवरी २००३, स्वाती नक्षत्र शुद्ध है। रात्रौ कन्या लग्न में ५ ग्रह इष्ट हैं। शुक्र का दान करके।

१२ बुधवार २६ जनवरी २००३, स्वाती नक्षत्र शुद्ध है। रात्रौ कन्या लग्न में ५ ग्रह इष्ट हैं। शुक्र का दान करके। रात्रौ तुला लग्न में ६ ग्रह इष्ट हैं।

माघ शुक्ल पक्ष :- ४ बुधवार ५ फरवरी २००३, उ.भा. नक्षत्र शुद्ध है। रात्रौ धनु लग्न में ५ ग्रह इष्ट हैं। गुरु का दान करके। ५ गुरुवार ६ फरवरी २००३, उ.भा. नक्षत्र शुद्ध है। रात्रौ धनु लग्न में ५ ग्रह इष्ट हैं। गुरु का दान करके।

९ सोमवार १० फरवरी २००३ रोहिणी नक्षत्र शुद्ध है। सायं गोधुलि में, रात्रौ कन्या लग्न में ५ ग्रह इष्ट हैं।

११ बुधवार १२ फरवरी २००३, मृगशिरा नक्षत्र शुद्ध है। सायं गोधुलि में। १४ रविवार १६ फरवरी २००३, मघा नक्षत्र शुद्ध है। रात्रौ तुला लग्न में ५ ग्रह इष्ट हैं। शुक्र का दान करके। रात्रौ धनु लग्न में, ५ ग्रह इष्ट हैं। गुरु का दान करके।

फाल्गुन कृष्ण पक्ष :- १ सोमवार १७ फरवरी २००३, मघा नक्षत्र शुद्ध है। दिवा मीन लग्न में ५ ग्रह इष्ट हैं। चन्द्र का दान करके। रात्रौ कन्या लग्न में ६ ग्रह इष्ट हैं। चन्द्र का दान करके।

३ बुधवार १९ फरवरी २००३, उ.फा. नक्षत्र शुद्ध है। रात्रौ धनु लग्न में ५ ग्रह इष्ट हैं। गुरु का दान करके।

११ गुरुवार २७ फरवरी २००३, उ.षा. नक्षत्र शुद्ध है। रात्रौ तुला लग्न में ७ ग्रह इष्ट हैं।

१२ शुक्रवार २८ फरवरी २००३, उ.षा. नक्षत्र शुद्ध है। दिवा मीन लग्न में ५ ग्रह इष्ट हैं। मंगल, बुध का दान करके।

फाल्गुन शुक्ल पक्ष :- २ बुधवार ५ मार्च २००३, रेवती नक्षत्र शुद्ध है। रात्रौ तुला लग्न गें ६ ग्रह इष्ट हैं। चन्द्र का दान करके।

३ गुरुवार ६ मार्च २००३, रेवती नक्षत्र शुद्ध है। दिवा मेष लग्न में ५ ग्रह इष्ट हैं। चन्द्र का दान करके।

श्री संवत् २०५९ के चैत्रादि मासों में होने वाली घटनाएँ (मासफल)

अमान्त चैत्र :- (१३ अप्रैल से १२ मई तक) अनाज महंगा होगा, जनता में परस्पर विरोध उत्पन्न होगा। राष्ट्रों में युद्ध जैसी स्थिति उत्पन्न हो सकती है। ब्राह्मण वर्ग को पीड़ा, रोगों की अधिकता, चौपायों को कष्ट, रोहिणी के शुक्र होने से रोगों पर नियन्त्रण होगा। वृक्षों की हानि। बलशाली राष्ट्रों को शान्ति स्थापनार्थ अपने बल का परिचय देना होगा। शान्ति हुई सी दिखेगी। शत्रु पक्ष बल वृद्धि का मार्ग स्वीकारेगा। पूर्व देशों में भूचाल आने की सम्भावना है। कहीं-कहीं सामान्य वर्षा का योग है। खाद्यान्न के दामों में स्थिरता रहेगी। फलों को नुकसान हो सकता है। पशु रोगी होंगे।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

अमान्त वैशाख :- (१३ मई से १० जून तक) समय के पूर्व वर्षा होने की सम्भावना, नदियों का जल कम होगा, बड़े-बड़े नेताओं को कष्ट का सामना करना पड़ेगा। आगजनी की घटनाएं घट सकती है, घी के दाम तेज होंगे। उपद्रव होने की भी सम्भावनाएं हैं। कहीं विस्फोट होने की सम्भावना है, धान्य के दामों में उतार-चढ़ाव रहेगा, आंधी-तूफान से नुकसान होगा। चौपायों को रोग होगा। सीमावर्ती क्षेत्रों में तनाव जैसी स्थिति बनेगी। सर्वत्र लू व गरम हवा चलेगी। बिजली की आंख मिचौली से जनता त्रस्त रहेगी। श्वेत पदार्थ के दाम बढ़ेंगे।

अमान्त ज्येष्ठ :- (११ जून से १० जुलाई तक) कहीं-कहीं अच्छी वर्षा होगी तथा कहीं सूखा पड़ेगा। सूत, तिल्ली, रुई के दामों में तेजी आयेगी। शासक वर्ग को कष्ट का सामना करना पड़ेगा। दक्षिण व पूर्व में झगड़े, लूट, व अराजकता की-सी स्थिति आयेगी। आंधी-तूफान से जन-धन की हानि होगी। लाल पदार्थ महंगे होगे। साग-सब्जी के दामों में भी तेजी आयेगी। कृषि कार्य गें तेजी आयेगी। इमारती सामान महंगे होंगे। कहीं-कहीं सामान्य वर्षा से राहत मिलेगी। पशु रोगाक्रान्त होंगे। सर्राफा बाजार में तेजी का रुख रहेगा।

अमान्त आषाढ़ :- (११ जुलाई से ८ अगस्त तक) युद्ध जैसी स्थिति उत्पन्न होगी। सीमा पर तनाव बना रहेगा। पशुओं के दामों में वृध्दि होगी। रुई, नमक, लोहा, कपास, तिल, गुड़ महंगे होंगे। वर्षा का योग है। तेज हवा के साथ अच्छी दर्षा का योग है। कास्तकार प्रसन्न होंगे। आंधी-तूफान से नुकसान होगा। भूडोल आने की सम्भावना दिखती है। पश्चिमी देशों में युद्ध जैसी स्थिति व आक्रमण होने की सम्भावना है। कहीं-कहीं बाढ़ के कारण काफी नुकसान होगा। फसल नष्ट होगी। साग-सब्जी के दामों में कमी आयेगी।

अमान्त श्रावण :- (९ अगस्त से ७ सितम्बर तक) शासन सत्ता में परिवर्तन होने की सम्भावना है। अनर्थकारी घटना घटने की सम्भावना है। सत्ता परिवर्तन या कोई अनिष्टकारी घटना घटने की सम्भावना है। दुसरे राष्ट्रों के बीच आपस गें सन्धियाँ होंगी। कुछ नेता अलग होंगे। पार्टियों के आपसी तनाव बढ़ेंगे। सरसो, तीसी, मटर, मूंग, गेहूं इत्यादि के दामों में तेजी आयेगी। वर्षा कहीं-कहीं अधिक होगी। बाढ़ से जन-धन की हानि होगी। बिजली की समस्या बनी रहेगी। सर्राफा बाजार सामान्य रहेगा।

अमान्त भाद्रपद :- (८ सितम्बर से ६ अक्टूबर तक) फसल अच्छी होने से कास्तकार प्रसन्न होंगे। तेलहन के दामों में तेजी आयेगी। दुष्टों की क्रूरता का अतिरेक, आग लगाने की प्रवृत्ति, शासन का लडकपन महंगी, रोग का आक्रमण, जन हानि फसल की कमजोरी देखकर सर्वत्र चिन्ता व्याप्त होगी। धार्मिक वृत्ति जग सकती है। सोना, चांदी, लोहा, ताम्बा के दामों में तेजी आयेगी। यान दुर्घटना होने की सम्भावना है। डाकुओं व उग्रवादियों पर नियन्त्रण होगा। कुछ लोग आत्मसमर्पण भी कर सकते है।

अमान्त आश्विन :- (७ अक्टूबर से ४ नवम्बर तक) सीमाओं पर तनाव जैसी स्थिति उत्पन्न होगी। खाद्य पदार्थ के दामों में सस्ती का रुख रहेगा। रंगीन पदार्थ के दाग तेज होंगे। खाद्यान्न के दाम कम होंगे। चोरी, डकैती, अपहरण की घटनाएँ घटित होंगी। वस्त्र के दामों में थोड़ी तेजी आयेगी।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

सर्राफा बाजार में उतार-चढ़ाव रहेगा। शासन की निन्दा व प्रशंसा दोनों होगी। गुण्डों के आपसी झगड़े आरम्भ होने से जनता को राहत मिलेगी। रोग होने की सम्भावना है। सोना चांदी के दामों में स्थिरता रहेगी।

अमान्त कार्तिक :- (५ नवम्बर से ४ दिसम्बर तक) बाजार भाव सामान्य रहेगा। साग-सब्जी के दामों में तेजी रहेगी। दुर्घटना की संभावना है। महंगी के विरुद्ध आन्दोलन आरम्भ होगा। दुष्ट दमन कड़ाई से होगा। ठंडी हवा चलेगी। वित्त व्यवस्था में थोड़ा सुधार होगा। विद्या क्षेत्र में रुचि बढ़ेगी। कपास के दाम व लकड़ी के दाम बढ़ेंगे। धान्य के दाम तेज होंगे। शासक वर्ग पर अनेक नेता अनुचित दबाव डालेंगे। मन्त्री मण्डल में थोड़ा बदलाव आने की सम्भावना है।

अमान्त मार्गशीर्ष :- (५ दिसम्बर से २ जनवरी तक) ऊनी वस्त्र, मेवा इत्यादि के दामों में तेजी आयेगी। कहीं-कहीं सामान्य वर्षा होने की सम्भावना है। पीले पदार्थ के दाम तेज होंगे। सर्वत्र शीत लहर चलेगी। ठण्ड बढ़ेगी, कहीं-कहीं सामान्य वर्षा का योग है। कई नये परिवर्तन राजनीति में होंगे। कानूनों का कड़ाई से पालन होगा। मजदूर संगठनों में तनाव बढ़ेगा। रुई, कपास, काष्ठ, कोयला के दामों में तेजी आयेगी। खाद्यान्न के दामों में कमी आयेगी। साग-सब्जी के दाम कम होंगे। सर्राफा बाजार सामान्य रहेगा।

अमान्त पौष :- (३ जनवरी से १ फरवरी तक) शीतलहरी, उपलवृष्टि, आंधी आने की सम्भावना है। पश्चिम के राज्यों में तनाव जैसी स्थिति उत्पन्न हो सकती है। बड़े-बड़े राष्ट्रों का शान्ति स्थापन के विषयमें मतैक्य होगा। व्यापारिक समझौते होंगे, सहयोग व सह अस्तित्व अच्छा लगेगा, मुस्लिम राष्ट्रों में गृहकलह होने की सम्भावना है। साग-सब्जी के दामों में कमी आयेगी, खाद्यान्न के दाम सामान्य रहेंगे। कहीं-कहीं वर्षा का योग है। शीतलहर से जन- धन की हानि होगी। परिक्षा में छात्र बाधा उत्पन्न करेंगे।

अमान्त माघ :- (२ फरवरी से ३ मार्च तक) बड़े अधिकारियों को कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। जनता में भय तथा आतंक बनेगा। बड़े-बड़े कारखानों, बस सर्विस या रेलवे में ४-५ दिन की हड़ताल हो सकती है। बरसाती छातों की तरह पार्टियां दिखाई देने लगेंगी। शासन व्यवस्था के झूठे दोष निकालकर अपना पक्ष प्रबल करने में अशान्ति फैलेगी। फल तथा सब्जी के दामों में सामान्य तेजी आयेगी। दूध के दाम बढ़ेंगे। घी, तेल, गुड़, चीनी के दाम बढ़ेंगे। सोने-चांदी के दाम कुछ तेज होंगे। किसी विशिष्ट व्यक्ति की क्षति होगी। शीत का प्रभाव बढ़ेगा।

अमान्त फाल्गुन :- (४ मार्च से १ अप्रैल तक) तेलहन, दलहन के दामों में कमी आयेगी। कहीं-कहीं सामान्य वर्षा का योग है। बुद्धिमानों की प्रतिभा शक्ति जागृत होगी। नवीन आविष्कारों के कारण देश की कीर्ति बढ़ेगी। घूसखोरी में अनेक व्यवसायी व शासक पदभ्रष्ट होंगे। सीमा पर युद्ध जैसी स्थिति उत्पन्न हो सकती है। खाद्यान्न में गेहूं, चना, बाजरा, चावल इत्यादि के दामों में कमी आयेगी। यज्ञ-याज्ञादि अधिक होंगे।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

साढ़ेसाती आदि किसको ? उससे बचने के उपाय

साढ़ेसाती :- शनि को एक राशि चलने में २½ वर्ष लगते हैं। तद्नुसार अपनी राशि से आगे पीछे और अपनी राशि पर मिलकर तीन राशियों में शनि को चलने में शनि को ७½ वर्ष लगते हैं। जब तक इन राशियों में शनि रहेगा साढ़ेसाती कही जायेगी। प्रायः ये दिन ऋण, रोग, दारिद्र, झगड़ा, झंझट के होते है। ऐसे ही अपनी राशि से चौथे, और आठवें राशि में शनि रहेगा तब भी साढ़ेसाती जैसा ही फल मिलता है। उसकी शान्ति के लिए पीपल प्रदक्षिणा, हनुमद् आराधना, श्री राम नाम का जप, नीलम रत्न धारण, सात्विक सादा भोजन, तिल तथा तिल के तेल का उपयोग करना उपाय है। सुखी होंगे। वर्षारम्भ में शनि वृष राशि पर रहने से तुला और कुम्भ राशि वालों को अढ़ैय्या रहेगी तथा मेष तथा मिथुन राशि वालों को साढ़ेसाती रहेगी।

राहु :- पूरे वर्ष राहु वृष राशि में रहेगा। इससे कोई काम सहज, सुलभ नहीं होगा। आलस्य बढ़ेगा, अड़ंगे लगेंगे, निद्रा और घूमना अच्छा लगेगा। अतः "श्री राम सेवकाय हनुमते नमः" अथवा "ह्रीं रां राहवे नमः" रोज १८०० जपा करें। कंगलों को उड़द की खिचड़ी, मछली को गोली, गाय को गो ग्रास, कौव्वे को चावल, चीटी को चारा दिया करें। बड़ों का आशीर्वाद लें, आज्ञाधारक बनें। राहु पीड़ा से शान्ति मिलेगी।

केतु :- वर्षारम्भ से केतु वृश्चिक राशि पर पूरे वर्ष रहेगा। इससे सभी कार्मों में अड़चन, अड़ंगे लगेंगे। प्रयास से कार्य पूर्ण होगा। अपयश होगा, लोग असूया करेंगे, उदर या मस्तक विकार होंगे। उससे बचने के लिए "ह्रीं कें केतवे नमः" २१०० रोज जपा करें। बड़ों का आशीर्वाद लें। विद्यार्थी, सन्यासियों, ब्राह्मणों को अन्न दान दें। अग्नि में भोजन के पहले भात की पांच आहुति दिया करें। गाय को गो ग्रास दें। केतु पीड़ा नहीं होगी, शान्ति मिलेगी।

कन्या के विवाह में बाधा आती हो तो इस मंत्र का जाप करें

बहुत से लोग कन्या के विवाह में देर हो रही है, बात पक्की होते-होते छूट जाती है ऐसी परेशानी लेकर चिन्तित रहते हैं और हमारे कार्यालय में पत्र भेजकर या खुद आकर इसका निराकरण जानना चाहते हैं। उन्हीं के लिए एक छोटा अनुष्ठान नीचे दे रहे है उसको करने से निश्चित ही सफलता मिलेगी ऐसा मेरा विश्वास है।

मन्त्र :-

कात्यायनी महामाये महायोगिन्यधीश्वरि।
नन्द गोप सुतं देवि पतिं मे कुरूते नमः।।

इस मन्त्र का १ माला रोज जाप करें। जप करते समय शुद्धता से रहें। और गुरुवार को केले के पेड़ का पूजन करें व पीला खाद्य खायें व पीला वस्त्र धारण करें।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

श्रीचैत्रशुक्लपक्ष :- श्री संवत् २०५९, शाके १९२४, ईसवी सन् २००२

यास्य-सौम्यगोल:, उत्तरायणं, वसंततुं:।

(१३ अप्रैल से २७ अप्रैल तक)

वा.	तिथि			नक्षत्र			योग			करण			योगाः	चन्द्रचार			दिनमान		सूर्योदय		सूर्यास्त		दिनांक				वा.	
नाम	मिति	बजके	मिनटतक	नाम	बजके	मिनटतक	नाम	बजके	मिनटतक	नाम	घटी	पल	आनंदादि	राशि	बजके	मिनटतक	घटी	पल	बजकर	मिनटपर	बजकर	मिनटपर	मु.	बंगला	सांपातिक	अंग्रेजी	वार	
श.	१	१	५४	अ.	४	५२	वि.	५	०	किं.	१८	१८	सौम्य	मे.	पू	र्ण	३१	२४	५	४३	१८	१७	२८	२९	२३	१३	श.	नववर्षारम्भ, मन्मथ नाम संवत्सरारम्भ, अभ्यंग स्नान, वासन्त नवरात्रारम्भ, कलश स्थापना, A
र.	२	३	१०	भ.	पू	र्ण	प्री.	४	५४	बा.	२२	४	कालदंड	मे.	पू	र्ण	३१	२८	५	४३	१८	१७	२९	३०	२४	१४	र.	चन्द्रदर्शन, मु. १५ फलंमहर्घता, खरमास समाप्त, सतुवा संक्रान्ति, अम्बेडकर जयंती। वैशाखी।
चं.	३	४	१	भ.	६	४०	आ.	४	३०	तै.	२४	४२	चर	वृ.	१२	५९	३१	३१	५	४२	१८	१८	३०	१	२५	१५	सो.	गणगौरी व्रत (राजस्थान में प्रसिद्ध), सौभाग्य सुन्दरी व्रत, मत्स्यावतार, मन्वादि ३, D
मं.	४	४	१६	कृ.	८	२	सौ.	३	४१	व.	२६	९	गद	वृ.	पू	र्ण	३१	३५	५	४१	१८	१९	१	२	२६	१६	मं.	वैनायकी अंगारकी चतुर्थी, भद्रा दि. ४/१० से रा. ४/१७ तक। D उमामहेश्वर दोलोत्सव, G
बु.	५	४	२	रो.	८	५२	शो.	२	२६	बव.	२६	१३	शुभ	मि.	२०	५८	३१	३८	५	४०	१८	२०	२	३	२७	१७	बु.	कल्पादि ५, श्री रामराज्य महोत्सव, मिथुन का चन्द्र रात्रौ ८/५८ बजे।
गु.	६	३	२०	मृ.	९	१३	अति.	२४	५०	कौ.	२५	४	मृत्यु	मि.	पू	र्ण	३१	४२	५	४०	१८	२०	३	४	२८	१८	गु.	श्री सूर्यषष्ठी व्रत (बिहार), श्री स्कन्द दमनकोत्सव, मन्वादि ३।
शु.	७	२	९	आ.	९	५	सु.	२२	५१	गर.	२२	४४	पद्म	क.	२	३६	३१	४५	५	३९	१८	२१	४	५	२९	१९	शु.	भद्रा रात्रौ २/११ से, कर्क का चन्द्र रा. २/३६ बजे। G वृष का चन्द्र १२/५९ बजे।
श.	८	२४	३६	पुन.	८	३२	धृ.	२०	३३	भ.	१९	२२	छत्र	क.	पू	र्ण	३१	४९	५	३८	१८	२२	५	६	३०	२०	श.	भद्रा दि. १/१८ तक, भवानी की उत्पत्ति, दुर्गाष्टमी, अन्नपूर्णा परिक्रमा, अशोक कलिका प्राशन।
र.	९	२२	४३	पु.	७	३६	शूल.	१८	०	बा.	१५	५	श्रीवत्स	क.	पू	र्ण	३१	५२	५	३८	१८	२२	६	७	१	२१	र.	श्रीराम नवमी, मध्याह्न में राम जन्मोत्सव। B श्रृंगार दर्शन, विद्याव्रतारम्भ, पंचांग फल श्रवण, C
चं.	१०	२०	३३	श्ले.	६/४	२२/५६	ग.	१५	१०	तै.	१०	५	सौम्य	सिं.	६	२०	३१	५६	५	३६	१८	२४	७	८	२	२२	सो.	नवमी का पारणा, सिंह का चन्द्र ६/२० बजे। C निम्बपत्र प्राशन, कल्पादि १।
मं.	११	१८	१५	पू.	३	२०	वृ.	१२	१३	व.	४	३२	धूम्र	सिं.	पू	र्ण	३१	५९	५	३६	१८	२४	८	९	३	२३	मं.	कामदा एकादशी व्रत सबका, विष्णु दोलोत्सव, भद्रा दि. ७/२६ से सायं ६/१८ तक।
बु.	१२	१५	५०	उ.	१	४०	ध्रु.	९	११	बा.	२५	३९	प्रवर्ध	कं.	८	५१	३२	२	५	३६	१८	२४	९	१०	४	२४	बु.	प्रदोष व्रत, वामन द्वादशी, विष्णु दमनकोत्सव, कन्या का चन्द्र दिवा ८/५१ बजे।
गु.	१३	१३	२४	ह.	२४	१	व्या.	६/३	५/२	तै.	१९	३२	रक्ष	कं.	पू	र्ण	३२	६	५	३५	१८	२५	१०	११	५	२५	गु.	महावीर जयन्ती। A ध्वजा फहरावें, गुड़ीपाडवा, श्री धनधान्येश्वर महादेव का काशी में भव्य B
शु.	१४	११	१	चि.	२२	२७	ह.	२४	१	व.	१३	३८	मुसल	तु.	११	१०	३२	९	५	३४	१८	२६	११	१२	६	२६	शु.	व्रत की पूर्णिमा, भद्रा दि. ११/३ से रा. ९/५६ तक, तुला का चन्द्र ११/१० बजे।
श.	१५	८	४७	स्वा.	२१	५	सि.	२१	१४	बव.	८	४	सिद्धि	तु.	पू	र्ण	३२	१२	५	३४	१८	२६	१२	१३	७	२७	श.	हनुमान जयन्ती (महाराष्ट्र), स्नान-दान की पूर्णिमा, वैशाख स्नानारम्भ, मन्वादि १५।

१ पंक्ति १३ अप्रैल, शनिवार के स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	१	०	२	०	१	१	७
२९	४	९	१४	२२	१७	२६	२६
४४	५९	९	४४	५१	१९	५४	५४
११	५७	६	९	२०	४९	५२	५२
५८	४१	१०३	७	७३	६	३	३
४४	३	४२	४२	१५	२२	११४.	११४.

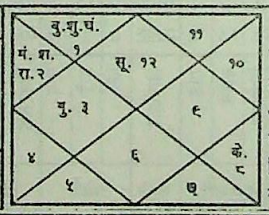

पाक्षिक फल– देश की आर्थिक स्थिति का जनमानस पर बुरा असर पड़ेगा। खाद्य पदार्थों के तथा साग सब्जी के दाम तेज होंगे। लूट-पाट, आगजनी, ट्रेन दुर्घटना से जन-धन प्रभावित होगा। सर्राफ बाजार में सामान्य तेजी आयेगी। राजनैतिक स्थिति बिखराव पूर्ण रहने की सम्भावना है। कहीं-कहीं सामान्य वर्षा होनें की सम्भावना हैं।

२ पंक्ति २० अप्रैल, शनिवार के स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	१	०	२	१	१	१	७
६	९	२०	१५	१	१८	२६	२६
३४	४५	४४	४१	२१	४	२९	२९
२९	२४	२६	५२	३७	२९	३८	[illegible]
५८	४०	९२	८	७२	६	३	[illegible]
२८	२९	२४	३६	३८	२३	११४.	११

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

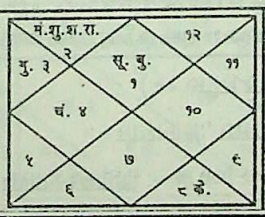

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

वैशाखकृष्णपक्ष :- श्री संवत् २०५९, शाके १९२४, ईसवी सन् २००२

सौम्यगोलः, उत्तरायणं, वसंतर्तुः।

(२८ अप्रैल से १२ मई तक)

वा.	तिथि			नक्षत्र			योग			करण			योगाः	चन्द्रचार			दिनमान		सूर्योदय		सूर्यास्त		दिनांक				वा.	
नाम	मिति	बजके	मिनटतक	नाम	बजके	मिनटतक	नाम	बजके	मिनटतक	नाम	घटी	पल	आनंदादि	राशि	बजके	मिनटतक	घटी	पल	बजकर	मिनटपर	बजकर	मिनटपर	मु.	बंगला	सांपातिक	अंग्रेजी	वार	
र.	१	६	४६	वि.	१६	५८	ब्र.	१८	४०	कौ.	३	२	उत्पात	वृ.	१४	१०	३२	१५	५	३३	१८	२७	१४	१४	८	२८	र.	वैशाख मासभर विष्णु को गलन्तिका बांधे, धर्म, घट, फल, पंखा, सत्तू, दक्षिणा दान दें, A
चं.	२	५ ३	३८	अनु.	१६	१४	व.	१६	२०	व.	२६	५८	मानस	वृ.	पू	र्ण	३२	१८	५	३२	१८	२८	१५	१५	६	२६	सो.	भद्रा दि.४/१६ से रा.३/३७ तक। A पीपल वृक्ष का सेचन करें, प्याऊ चलावें, B
मं.	४	३	४१	ज्ये.	१८	४६	प.	१४	१८	बव.	२३	५८	मुद्गर	ध.	१८	४३	३२	२१	५	३२	१८	२८	१६	१६	१०	३०	मं.	अंगारकी संकष्ट गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रा.१०/३ बजे, धनु का चन्द्र रा.६/४३ बजे।
बु.	५	२	१०	मू.	१८	५३	शि.	१२	३६	कौ.	२२	१२	केतु	ध.	पू	र्ण	३२	२५	५	३१	१८	२६	५७	५७	११	१	बु.	मजदूर दिवस, मई ५। B तुलसी जी से मासभर विष्णु जी का पूजन करें, वृश्चिक का C
गु.	६	२	११	पू.	१६	२६	सि.	११	२०	गर.	२१	३४	धाता	म.	१	३४	३२	२८	५	३१	१८	२६	१८	१८	१२	२	गु.	भद्रा रात्रौ २/१० से, मकर का चन्द्र रात्रौ १/३४ बजे। C चन्द्र दिवा २/१० बजे।
शु.	७	२	४४	उ.	२०	२६	सा.	१०	२८	भ.	२२	१८	आनन्द	म.	पू	र्ण	३२	३१	५	३०	१८	३०	१६	१६	१३	३	शु.	भद्रा दिवा २/२६ तक, चेहल्लुम।
श.	८	३	४५	श्र.	२१	५८	शुभ	६	५८	बा.	२४	१६	स्थिर	म.	पू	र्ण	३२	३४	५	२६	१८	३१	२०	२०	१४	४	श.	शीतलाष्टमी।
र.	९	५	११	ध.	२३	५८	शु.	६	५३	तै.	२७	२२	मातङ्ग	कुं.	१०	५३	३२	३७	५	२६	१८	३१	२१	२१	१५	५	र.	कुम्भ का चन्द्र दिवा १०/५३ बजे, पंचक प्रारम्भ दिवा १०/५३ बजे से।
चं.	१०	पू	र्ण	श.	२	२०	ब्र.	६	४२	व.	३१	२८	अमृत	कुं.	पू	र्ण	३२	४०	५	२८	१८	३२	२२	२२	१६	६	सो.	भद्रा सायं ६/२ से, पंचक।
मं.	१०	६	५६	पूषा.	४	५४	ऐ.	१०	३४	म.	३	४४	करण	मी.	२२	६	३२	४३	५	२८	१८	३२	२३	२३	२७	७	मं.	भद्रा प्रातः ६/५८ तक, मीन का चन्द्र रात्रौ १०/६ से, पंचक।
बु.	११	८	३५	उषा.	पू	र्ण	वै.	११	६	वा.	७	४६	लुम्ब	मी.	पू	र्ण	३२	४६	५	२७	१८	३३	२४	२४	१८	८	बु.	वरुथिनी एकादशी व्रत सबक्र, पंचक।
गु.	१२	११	२	उषा.	७	३०	वि.	११	४५	तै.	१३	५६	छत्र	मी.	पू	र्ण	३२	४६	५	२६	१८	३४	२५	२५	१६	९	गु.	प्रदोष व्रत, पंचक।
शु.	१३	१२	५८	रे.	१०	२	प्री.	१२	२०	व.	१८	४६	श्रीवत्स	मे.	९	५४	३२	५१	५	२६	१८	३४	२६	२६	२०	१०	शु.	पंचक समाप्ति दिवा ९/५४ बजे, मेष का चन्द्र दिवा ९/५४ बजे, मासशिवरात्रि, D
श.	१४	१४	३७	अ.	१२	४७	आ.	१२	४०	श.	२२	५८	सौम्य	मे.	पू	र्ण	३२	५४	५	२५	१८	३५	२७	२७	२१	११	श.	D भद्रा दिवा १२/५७ से रा.१/४७ तक।
र.	३०	१५	५३	म.	१४	१२	सौ.	१२	४२	ना.	२६	६	कालदंड	वृ.	२०	२६	३२	५७	५	२५	१८	३५	२८	२८	२२	१२	र.	स्नान-दान-श्राद्ध की अमावस्या, वृष का चन्द्र रात्रौ ८/२६ बजे।

३ पंक्ति २८ अप्रैल रविवार के स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	१	१	२	१	१	१	७
१४	१५	२	३६	११	३९	२६	२६
२१	९	९	५१	२	२	४	४
१३	३६	४३	२४	४१	२०	१२	१२
५८	४०	७४	९	७२	७	३	३
११	२९	२९	३१	३८	२२	११४.	११४.

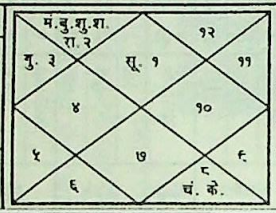

पाक्षिक फल– पश्चिमी तथा उत्तरी दिशा में अधिक तापमान रहेगा। पश्चिम में उपद्रव हो सकता है। सफेद पदार्थ के दाम तेज होंगे। साग-सब्जी के दाम बढ़ने की सम्भावना है। विद्युत समस्या से जनता परेशान रहेगी। गावों का विकास होगा। गेहूँ, चना के दामों में थोड़ी कमी आने की सम्भावना है।

४ पंक्ति ४ मई. शनिवार के स्पष्ट ग्रह

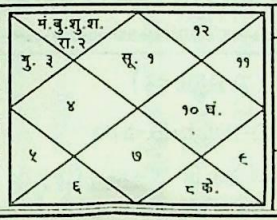

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	१	१	२	१	१	१	७
२०	९९	८	४७	९८	९८	२५	२५
९	११	३५	४८	९८	४६	४५	४५
५८	५७	३१	४१	२९	३२	७	७
५८	४०	४९	९	७२	७	३	३
१	२६	५९	३२	३८	२२	११४.	११४.

वा.	तिथि			नक्षत्र			योग			करण			योगाः	चन्द्रचार			दिनमान		सूर्योदय		सूर्यास्त		दिनांक				वा.
नाम	मिति	बजके.	मिनटतक	नाम	बजके	मिनटतक	नाम	बजके	मिनटतक	नाम	घटी	पल	आनंदादि	राशि	बजके	मिनटतक	घटी	पल	बजकर	मिनटपर	बजकर	मिनटपर	मु.	बंगला	सांपातिक	अंग्रेजी	वार
चं.	१	१६	४०	कृ.	१५	३६	शो.	१२	२३	बव.	२८	६	स्थिर	वृ.	पू	र्ण	३२	५६	५	२४	१८	३६	२६	२६	२३	१३	सो.
मं.	२	१६	५६	रो.	१६	३८	अति.	११	४२	कौ.	२८	५०	मातङ्ग	मि.	४	४४	३३	२	५	२४	१८	३६	१	३०	२४	१४	मं.
बु.	३	१६	४०	मृ.	५७	४	सु.	१०	३४	गर.	२८	१३	अमृत	मि.	पू	र्ण	३३	५	५	२३	१८	३७	२	१	२५	१५	बु.
गु.	४	१५	५६	आ.	५७	२	धृ.	६	३	भ.	२६	२२	काण	मि.	पू	र्ण	३३	७	५	२३	१८	३७	३	२	२६	१६	गु.
शु.	५	१४	४५	पुन.	१६	३४	शू.	७/४	१०/५८	बा.	२३	२५	तुम्ब	क.	१०	३२	३३	१०	५	२२	१८	३८	४	३	२७	५७	शु.
श.	६	१३	११	पु.	१५	४४	वृ.	२	३०	तै.	१६	३२	मित्र	क.	पू	र्ण	३३	१२	५	२२	१८	३८	५	४	२८	१८	श.
र.	७	११	१६	श्ले.	१४	३४	बु.	२३	४६	व.	१४	४६	वज्र	सिं.	१४	२६	३३	१४	५	२१	१८	३६	६	५	२६	१६	र.
चं.	८	६	८	म.	१३	१०	आ.	२१	५२	बव.	६	२४	ध्वांक्ष	सिं.	पू	र्ण	३३	५७	५	२१	१८	३६	७	६	३०	२०	सो.
मं.	९	६/४	४७/२१	पू.	११	३४	ह.	५७	४६	कौ.	३	३३	धूम्र	कं.	५७	२	३३	१६	५	२०	१८	४०	८	७	३१	२१	मं.
बु.	११	१	५२	उ.	६	५६	वज्र.	१५	४६	व.	२४	२४	प्रवर्ध	कं.	पू	र्ण	३३	२१	५	२०	१८	४०	६	८	१	२२	बु.
गु.	१२	२३	२८	ह.	८	१६	सि.	११	४४	बव.	१८	१६	रक्ष	तु.	१६	२१	३३	२३	५	१६	१८	४१	१०	६	२	२३	गु.
शु.	१३	२१	१६	चि.	६/५	४०/१६	व्य.	८	२२	कौ.	१२	३०	मुसल	तु.	पू	र्ण	३३	२५	५	१६	१८	४१	११	१०	३	२४	शु.
श.	१४	१६	८	चि.	४	६	व.	५/३	५६/१८	गर.	७	५	शुभ	वृ.	२२	१६	३३	२७	५	१६	१८	४१	१२	११	४	२५	श.
र.	१५	५७	२१	अनु.	३	१६	शि.	२४	५६	भ.	२	१६	मृत्यु	वृ.	पू	र्ण	३३	२६	५	१८	१८	४२	१३	१२	५	२६	र.

वैशाखशुक्लपक्ष :- श्री संवत् २०५६, शाके १९२४, ईसवी सन् २००२

सौम्यगोलः, उत्तरायणं, वसंत-ग्रीष्मर्तुः।

(१३ मई से २६ मई तक)

चन्द्रदर्शन, मु. ४५ फलसुभिक्षता। A मु.३० फलसमता।

शिवाजी जयन्ती,मिथुन का चं.रा.४/४४ बजे,श्री परशुराम जयन्ती प्रदोष काल में, A

अक्षय तृतीया,कल्पादि ३,श्री बद्री केदार यात्रा,समुद्र स्नान,चन्दन से विष्णु का पूजन, B

भद्रा दिवा ३/५६ तक, वैनायकी चतुर्थी। B भद्रा रात्रौ ४/१७ से।

श्रीशंकराचार्य जयन्ती, कर्क का चन्द्र दिवा १०/३२ बजे।

गंगा सप्तमी।

भद्रा दिवा ११/१६ से रात्रौ १०/१२ बजे तक, सिंह का चन्द्र दिवा २/२६ बजे।

सीता नवमी, जानकी जन्मोत्सव।

कन्या का चन्द्र सायं ५/२ बजे।

मोहिनी एकादशी व्रत स्मार्तों का, भद्रा दिवा ३/६ से रात्रौ १/५२ तक।

मोहिनी एकादशी व्रत वैष्णवों का। C बारावफ़ात।

प्रदोष व्रत। D भद्रा प्रातः ६/१४ तक।

नृसिंह जयन्ती, सायं नृसिंह अवतार, भद्रा रा.७/८ से, वृश्चिक का चं.रा.१०/१६ बजे, C

बुद्ध पूर्णिमा, स्नान-दान व्रत की पूर्णिमा, वैशाख स्नान समाप्ति, कूर्म जयन्ती, D

५ पंक्ति १३ मई, सोमवार के स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	१	१	२	१	१	१	७
२८	२५	१२	९८	२९	२०	२५	२५
५०	१३	३९	२३	१०	५२	१६	१६
५०	४४	३०	४३	५९	५४	३०	३०
५७	४०	४	११	७२	७	३	३
४३	३	५४व.	९८	१	२३	११व.	११व.

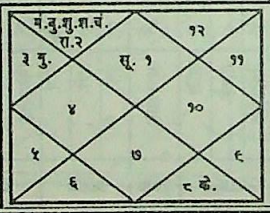

पाक्षिक फल– खाद्य पदार्थों के दाम जैसे- चावल, दलहन, चना, गेहूँ के दाम तेज होंगे। राजनैतिक दलों के बीच अस्थिरता का वातावरण बना रहेगा। आन्तरिक मतभेद गहरे होंगे। स्टील, सिमेन्ट एवं अन्य धातुओं में तेजी का रुख रहेगा। सर्वत्र गरम हवा बहेगी। विद्युत समस्या हल करने के लिए आन्दोलन होने लगेगा।

६ पंक्ति २० मई, सोमवार के स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	१	२	२	१	१	७
५	२९	६	२०	७	२१	२४	२४
३४	५३	५८	४२	३५	५०	५४	५४
१३	३८	५३	४९	१	३	१५	१५
५७	३९	४३	११	७२	८	३	३
२९	५४	अस्त.	९८	०	२२	११व.	११व.

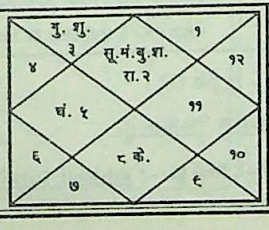

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

ज्येष्ठकृष्णपक्ष :– श्री संवत् २०५९, शाके १९२४, ईसवी सन् २००२
सौम्यगोल:, उत्तरायणं, ग्रीष्मर्तुः।
(२७ मई से १० जून तक)

वा.	तिथि			नक्षत्र			योग			करण			योगाः	चन्द्रचार			दिनमान		सूर्योदय		सूर्यास्त		दिनांक				वा.	
नाम	मिति	बजके	मिनटतक	नाम	बजके	मिनटतक	नाम	बजके	मिनटतक	नाम	घटी	पल	आनंदादि	राशि	बजके	मिनटतक	घटी	पल	बजकर	मिनटपर	बजकर	मिनटपर	मु.	बंगला	सांपातिक	अंग्रेजी	वार	
चं.	१	१५	५५	ज्ये.	२	४६	सि.	२२	५२	कौ.	२६	३२	पद्म	ध.	२	४०	३३	३१	५	१८	१८	४२	१४	१३	६	२७	सो.	धनु का चन्द्र रात्रौ २/४० बजे।
मं.	२	१४	५४	मू.	२	४२	सा.	२१	८	गर	२३	५८	छत्र	ध.	पू	र्ण	३३	३३	५	१७	१८	४३	१५	१४	७	२८	मं.	भद्रा रात्रौ २/३८ से।
बु.	३	१४	२२	पू.	३	८	शुभ	१६	४८	भ.	२२	३६	श्रीवत्स	ध.	पू	र्ण	३३	३५	५	१७	१८	४३	१६	१५	८	२९	बु.	संकष्ट चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात्रौ ९/४३ बजे।
गु.	४	१४	२०	उ.	४	६	शु.	१८	५२	वा.	२२	३५	सौम्य	म.	६	१६	३३	३७	५	१७	१८	४३	१७	१६	९	३०	गु.	मकर का चन्द्र दिवा ६/१६ बजे।
शु.	५	१४	४८	श्र.	पू	र्ण	ब्र.	१८	२१	तै.	२३	४६	धूम्र	म.	पू	र्ण	३३	३८	५	१६	१८	४४	१८	१७	१०	३१	शु.	A पंचक प्रारम्भ सायं ६/२३ से।
श.	६	१५	४६	श्र.	५	३२	ऐ.	१८	११	व.	२६	१३	स्थिर	कुं.	१८	२३	३३	४०	५	१६	१८	४४	१९	१८	११	१	श.	जून ६, भद्रा दिवा ३/४६ से रात्रौ ४/२६ तक, कुम्भ का चन्द्र सायं ६/२३ बजे, A
र.	७	१७	११	ध.	७	२६	वै.	१८	२३	बव.	२६	४७	मातङ्ग	कुं.	पू	र्ण	३३	४२	५	१६	१८	४४	२०	१९	१२	२	र.	भानु सप्तमी, पंचक।
चं.	८	१८	५६	श.	९	४२	वि.	१८	४८	बा.	१	५६	अमृत	कुं.	पू	र्ण	३३	४३	५	१५	१८	४५	२१	२०	१३	३	सो.	शीतलाष्टमी, पंचक।
मं.	९	२०	५४	पूभा.	१२	१४	प्री०	१९	२६	तै.	६	४०	काण	मी.	५	२९	३३	४४	५	१५	१८	४५	२२	२१	१४	४	मं.	मीन का चन्द्र प्रातः ५/२९ बजे, पंचक।
बु.	१०	२२	५७	उभा.	१४	५२	आ.	२०	६	व.	११	४२	लुम्ब	मी.	पू	र्ण	३३	४६	५	१५	१८	४५	२३	२२	१५	५	बु.	भद्रा दिवा ९/५६ से रात्रौ १०/५७ तक, पंचक।
गु.	११	१	२	रे.	१७	२६	सौ.	२०	४२	बव.	१६	३८	मित्र	मे.	१७	१९	३३	४७	५	१५	१८	४५	२४	२३	१६	६	गु.	अचला एकादशी व्रत सबका, पंचक समाप्ति सायं ५/२६ बजे, मेष का चन्द्र B
शु.	१२	२	३०	अ.	१९	४५	शो.	२१	५	कौ.	२१	४	वज्र	मे.	पू	र्ण	३३	४८	५	१४	१८	४६	२५	२४	१७	७	शु.	B सायं ५/२६ बजे। C वृष का चन्द्र रात्रौ ४/३ बजे।
श.	१३	३	४५	भ.	२१	४५	अति	२१	१३	गर	२४	४२	ध्वांक्ष	वृ.	४	३	३३	४९	५	१४	१८	४६	२६	२५	१८	८	श.	शनि प्रदोष व्रत, पुत्र प्राप्ति के लिए शनि प्रदोष विधान से करें, भद्रा रा. ३/४५ से, C
र.	१४	४	३४	कृ.	२३	१८	सु.	२०	५६	भ.	२७	१७	धूम्र	वृ.	पू	र्ण	३३	५०	५	१४	१८	४६	२७	२६	१९	९	र.	मासशिवरात्रि, भद्रा दिवा ४/८ तक।
चं.	३०	४	५१	रो.	२४	२३	धृ.	२०	२३	च.	२९	४०	प्रवर्ध	वृ.	पू	र्ण	३३	५१	५	१४	१८	४६	२८	२७	२०	१०	सो.	सोमवती अमावास्या, स्नान-दान-श्राद्ध की अमावास्या, बौड़ो का वटसावित्री व्रत।

७ पंक्ति २७ मई, सोमवार के स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	२	१	२	२	१	१	७
१२	४	४	२२	१५	२२	२४	२४
१६	३२	३०	२	५४	४८	३२	३२
८	५६	२२	४४	४७	३७	०	०
५७	३९	४०	१२	७०	८	३	३
१९	५४	१५व.	५	४०	२३	११व.	११व.

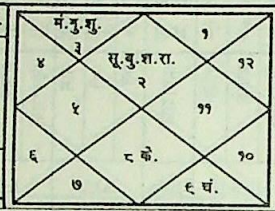

पाक्षिक फल– किसी-किसी राज्य में नेतृत्व परिवर्तन की सम्भावना होगी। अपहरण की घटना से व्यापारी वर्ग चिन्तित होगा। यान व ट्रेन दुर्घटना होने की सम्भावना है। सीमा पर तनाव से सरकार चिन्तित होगी। सर्वत्र लू से जन- धन की हानि होगी। खाद्य पदार्थ के दाम सामान्य रहेंगे। शेयर बाजार में तेजी आने की सम्भावना है। साग-सब्जी महंगी होगी।

८ पंक्ति ३ जून, सोमवार स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	२	१	२	२	१	१	७
१८	९	१	२३	२४	२३	२४	२४
५६	१२	५०	३०	७	४७	९	९
५४	१४	५३	२८	४२	१८	४५	४५
५७	३९	०	१३	७०	८	३	३
१०	५४	१०मा	३	१	२३	११व.	११व.

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

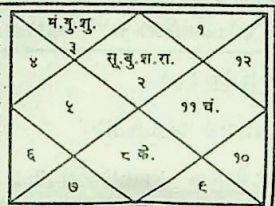

वा.	तिथि			नक्षत्र			योग			करण			योगाः	चन्द्रचार			दिनमान		सूर्योदय	सूर्यास्त	दिनांक				वा.	ज्येष्ठशुक्लपक्ष :- श्री संवत् २०५६, शाके १९२४, ईसवी सन् २००२
नाम	मिति	बजके	मिनटतक	नाम	बजके	मिनटतक	नाम	बजके	मिनटतक	नाम	घटी	पल	आनंदादि	राशि	बजके	मिनटतक	घटी	पल	बजकर	मिनटपर	बजकर	मिनटपर	मु.	बंगला	सांपातिक	अंग्रेजी	वार	सौम्यगोलः, उत्तरायणं, ग्रीष्मर्तुः। (११ जून से २४ जून तक)
मं.	१	४	३८	पू.	२४	५६	शू.	१६	२२	किं.	२८	४४	रक्ष	मि.	१२	३४	३३	५२	५	१४	१८	४६	२६	२८	२१	११	मं.	करवीर व्रत, दशहरा प्रारम्भ, मिथुन का चन्द्र दिवा १२/३४ बजे।
बु.	२	३	५२	आ.	२४	५८	ध.	४७	५६	बा.	२७	३०	मुसल	मि.	पू	र्ण	३३	५३	५	१३	१८	४७	३०	२६	२२	१२	बु.	चन्द्रदर्शन, मु.१५ फलंगहर्षता।
गु.	३	२	४१	पुन.	२४	३६	वृ.	१६	८	तै.	२५	८	सिद्धि	क.	१८	३६	३३	५४	५	१३	१८	४७	१	३०	२३	१३	गु.	रम्भा व्रत,रवि उत्सानी मास प्रारम्भ,कर्क का चन्द्र सा.६/३६ बजे,महाराणा प्रताप जयन्ती।
शु.	४	१	८	पु.	२३	५२	शु.	१३	५८	व.	२१	४२	उत्पात	क.	पू	र्ण	३३	५४	५	१३	१८	४७	२	३१	२४	१४	शु.	वैनायकी गणेश चतुर्थी, भद्रा दिवा १/५४ से रात्रौ १/७ तक, उमावतार।
श.	५	२३	१३	श्ले.	२३	३३	आ.	११	३५	वव.	२७	२२	मानस	सिं.	२२	४२	३३	५५	५	१३	१८	४७	३	३२	२५	१५	श.	सिंह का चन्द्र रात्रौ १०/४२ बजे, मु. १५ फलंगहर्षता।
र.	६	२१	३	म.	२१	२३	ह.	८	५५	कौ.	१२	१६	मुद्गर	सिं.	पू	र्ण	३३	५५	५	१३	१८	४७	४	१	२६	१६	र.	A विल्वत्रि रात्रि व्रत, कबीर जयन्ती।
चं.	७	१८	४२	पू.	१६	५०	चि.	६/३	३/३	गर	६	३७	केतु	कं.	१	२३	३३	५६	५	१३	१८	४७	५	२	२७	१७	सो.	कन्या का चन्द्र रात्रौ १/२३ बजे, भद्रा सायं ६/४२ से।
मं.	८	१६	१६	उ.	१७	१२	चि.	२४	०	भ.	०	३८	धाता	कं.	पू	र्ण	३३	५६	५	१३	१८	४७	६	३	२८	१८	मं.	भद्रा प्रातः ५/२६ तक।
बु.	९	१३	४६	ह.	१६	३२	स्वा.	२०	५६	कौ.	२१	२२	आनन्द	तु.	३	४०	३३	५६	५	१३	१८	४७	७	४	२६	१६	बु.	तुला का चन्द्र रात्रौ ३/४० बजे।
गु.	१०	११	२०	चि.	१४	५४	प.	१७	५८	गर.	१५	१६	चर	तु.	पू	र्ण	३३	५७	५	१३	१८	४७	८	५	३०	२०	गु.	भद्रा रा.१०/११ से, गंगा दशहरा, गंगा स्तोत्र पाठ समाप्त, रामेश्वर प्रतिष्ठा दिवस।
शु.	११	९	१	स्वा.	१३	२८	शि.	१५	९	भ.	९	३२	बव	तु.	पू	र्ण	३३	५७	५	१३	१८	४७	९	६	३१	२१	शु.	निर्जला एकादशी व्रत सबका, भद्रा दिवा ९/२ तक।
श.	१२	६/५	५७/८	वि.	१२	१३	शि.	१२	२९	बा.	४	१८	शुभ	वृ.	६	२९	३३	५७	५	१३	१८	४७	१०	७	१	२२	श.	शनि प्रदोष व्रत, वृश्चिक का चन्द्र प्रातः ६/२९ बजे। पुत्रार्थि शनि प्रदोष विधान से करें।
र.	१४	३	४१	अनु.	११	१८	सा.	९	५	गर.	२७	५९	मृत्यु	वृ.	पू	र्ण	३३	५७	५	१३	१८	४७	११	८	२	२३	र.	भद्रा रात्रौ ३/४१ से।
चं.	१५	२	३८	ज्ये.	१०	४३	शुभ	७	५८	भ.	२४	५०	पद्म	ध.	१०	४१	३३	५६	५	१३	१८	४७	१२	९	३	२४	सो.	भद्रा दि.३/१० तक,स्नान-दान व्रत की पूर्णिमा,जलयात्रा,दक्षिणात्यों का वट सावित्री व्रत, A

९ पंक्ति ११ जून, मंगलवार के स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	२	१	२	३	१	१	७
२६	१४	५	२५	३	२४	२३	२३
३३	२७	६	१४	२७	५४	४४	४४
४४	०	२५	५२	५०	२२	९८	९८
५७	३९	५०	१३	७०	८	३	३
२	९६	११	३	१	२३	११४.	११४.

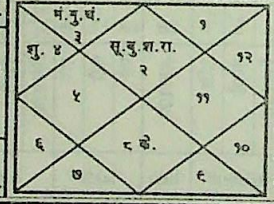

पाक्षिक फल– कहीं-कहीं सामान्य वर्षा होगी। विद्युत समस्या सुलझाने में सरकार प्रयत्नशील रहेगी। आंधी-तूफान से जन-धन की हानि। राजनैतिक उपद्रव होने की सम्भावना है। तिलहन, दलहन के दामों में कमी आयेगी। सोना, चांदी स्टील एवं अन्य धातु तेज होंगे। अच्छी फसल से कास्तकार प्रसन्न होंगे। लू चलने से जनता परेशान रहेगी। कुछ अनिष्ट हो सकता है।

१० पंक्ति १८ जून, मंगलवार के स्पष्ट ग्रह

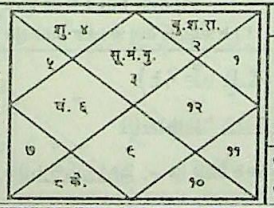

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	१	२	३	१	१	७
३	९६	१२	२६	११	२५	२३	२३
१२	१	२३	४६	३४	५३	२२	२२
३७	५२	९८	७७	२७	३	३	३
५६	३६	७७	१३	६९	८	३	३
५८	९६	४९	४	१२	२३	११४.	११४.

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

आषाढ़कृष्णपक्ष :- श्री संवत् २०५९, शाके १९२४, ईसवी सन् २००२

सौम्यगोलः, उत्तरायणं, ग्रीष्मर्तुः।

(२५ जून से १० जुलाई तक)

वा.	तिथि			नक्षत्र			योग			करण			योगाः	चन्द्रचार			दिनमान		सूर्योदय		सूर्यास्त		दिनांक				वा.	
	मिति	बजके	मिनटतक	नाम	बजके	मिनटतक	नाम	बजके	मिनटतक	नाम	घटी	पल	आनंदादि	राशि	बजके	मिनटतक	घटी	पल	बजकर	मिनटपर	बजकर	मिनटपर	मु.	बंगला	सांपातिक	अंग्रेजी	वार	
मं.	१	२	३	मू.	१०	३४	शु.	६/४	१२/४८	वा.	२२	४७	छत्र	ध.	पू	र्ण	३३	५६	५	१३	१८	४७	१३	१०	४	२५	मं.	चरित्रवान् बनने के लिए सात्विक बनें।
बु.	२	१	५८	पू.	१०	५३	ऐ.	३	४८	तै.	२१	५८	श्रीवत्स	म.	१७	४	३३	५६	५	१३	१८	४७	१४	११	५	२६	बु.	मकर का चन्द्र सायं ५/४ से।
गु.	३	२	२६	उ.	११	४२	वै.	३	१२	व.	२२	२५	सौम्य	म.	पू	र्ण	३३	५६	५	१३	१८	४७	१५	१२	६	२७	गु.	भद्रा दिवा २/१२ से रात्रौ २/२३ तक।
शु.	४	२	५५	श्र.	१३	३	वि.	२	५६	बव.	२३	३६	धूम्र	कुं.	१	५६	३३	५५	५	१३	१८	४७	१६	१३	७	२८	शु.	संकष्ट चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात्रौ ९/५४ बजे, पंचक प्रारम्भ रात्रौ १/५६ से, A
श.	५	६	४२	ध.	१४	५०	प्री.	३	८	कौ.	२६	२८	प्रवर्ध	कुं.	पू	र्ण	३३	५५	५	१३	१८	४७	१७	१४	८	२९	श.	प्रवर्ध मान योग, पंचक।
र.	६	पू	र्ण	श.	१०	२	आ.	३	३२	गर.	३०	५१	रक्ष	कुं.	पू	र्ण	३३	५४	५	१३	१८	४७	१८	१५	९	३०	र.	पंचक। A कुम्भ का चन्द्र रात्रौ १/५६ बजे।
चं.	६	६	२६	पूभा.	१९	३०	सौ.	४	८	व.	२	५९	मुसल	मी.	१२	५४	३३	५३	५	१३	१८	४७	१९	१६	१०	१	सो.	जुलाई ७, भद्रा प्रा.६/२६ से रा.७/२८ तक, मीन का च.दि.१२/५४ बजे, पंचक।
मं.	७	८	२३	उभा.	२२	७	शो.	४	५०	बव.	७	५३	सिद्धि	मी.	पू	र्ण	३३	५३	५	१३	१८	४७	२०	१७	११	२	मं.	पंचक।
बु.	८	१०	२५	रे.	२४	४३	अति.	पू	र्ण	कौ.	१२	५८	उत्पात	मे.	२४	४३	३३	५२	५	१४	१८	४६	२१	१८	१२	३	बु.	शीतलाष्टमी, पंचक समाप्ति रात्रौ १२/४३ बजे, मेष का चन्द्र रात्रौ १२/४३ बजे।
गु.	९	१२	२०	अ.	३	८	अति.	५	२६	गर.	१७	४३	मानस	मे.	पू	र्ण	३३	५१	५	१४	१८	४६	२२	१९	१३	४	गु.	भद्रा रात्रौ १/९ से।
शु.	१०	१४	०	भ.	५	१३	सु.	५	५३	भ.	२१	५६	मुद्गर	मे.	पू	र्ण	३३	५०	५	१४	१८	४६	२३	२०	१४	५	शु.	भद्रा दिवा २/१ तक।
श.	११	१५	१५	कृ.	पू	र्ण	धृ.	६	३	वा.	२५	१	केतु	वृ.	११	३७	३३	४९	५	१४	१८	४६	२४	२१	१५	६	श.	योगिनी एकादशी व्रत सबका, वृष का चन्द्र दिवा ११/३७ बजे।
र.	१२	१६	५	कृ.	६	५०	शू.	५	५३	तै.	२७	५	धूम्र	वृ.	पू	र्ण	३३	४८	५	१४	१८	४६	२५	२२	१६	७	र.	प्रदोष व्रत।
चं.	१३	१६	२४	रो.	८	२	ग.	५/४	२२/२६	व.	२७	५२	प्रवर्ध	मि.	२०	२४	३३	४६	५	१५	१८	४५	२६	२३	१७	८	सो.	मासशिवरात्रि, भद्रा सा.४/२२ से रा.४/१६ तक, मिथुन का चन्द्र रा.८/२४ बजे।
मं.	१४	१६	१२	मृ.	८	४३	ध्रु.	३	५	श.	२७	२०	रक्ष	मि.	पू	र्ण	३३	४५	५	१५	१८	४५	२७	२४	१८	९	मं.	समय बन्धन उन्नति का मार्ग है।
बु.	३०	१५	३०	आ.	८	५४	व्या.	१	२०	नाग	२५	३५	मुसल	क.	२	४२	३३	४४	५	१५	१८	४५	२८	२५	१९	१०	बु.	स्नान–दान–श्राद्ध की अमावस्या, कर्क का चन्द्र रात्रौ २/४२ बजे।

११ पंक्ति २५ जून, मंगलवार के स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
[illegible]	२	१	२	३	१	१	७
[illegible]	२३	२२	२८	१९	२६	२२	२२
५०	३६	१९	१७	३६	५१	५९	५९
५६	४४	२	४५	०	४३	४८	४८
५६	३९	९३	१३	६८	८	३	३
५२	१६	३१	४	४३	२२	११व.	११व.

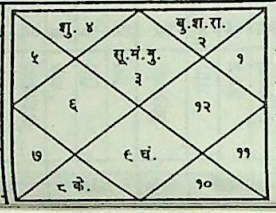

पाक्षिक फल– मन्त्री मण्डल में फेर-बदल होने की सम्भावना है। कहीं-कहीं वर्षा अच्छी होगी, कहीं सूखा रहेगा। उग्रवादी लोग हत्या, लूट करके भय पैदा करेंगे। बच्चों में रोग होने की सम्भावना है। घी, गुड़, नमक के दाम तेज होंगे। सौन्दर्य सामग्री के दाम बढ़ेंगे। फलों के दाम तेज होंगे।

१२ पंक्ति ३ जुलाई, बुधवार के स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	२	३	३	१	१	७
१७	२८	५	०	२८	२७	२२	२२
२५	५०	२९	४	४१	५८	३४	३४
४४	४९	३४	४१	३२	३९	२२	२२
५६	३९	१०३	१३	६८	८	३	३
५०	१५	४१	५२	४	२२	११व.	११व.

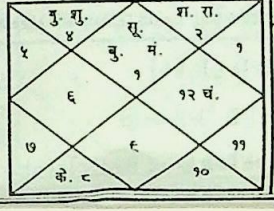

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

वा.	तिथि			नक्षत्र			योग			करण			योगाः	चन्द्रचार			दिनमान		सूर्योदय		सूर्यास्त		दिनांक				वा.
नाम	मिति	बजके	मिनटतक	नाम	बजके	मिनटतक	नाम	बजके	मिनटतक	नाम	घटी	पल	आनन्दादि	राशि	बजके	मिनटतक	घटी	पल	बजकर	मिनटपर	बजकर	मिनटपर	मु.	बंगला	सांपातिक	अंग्रेजी	वार
मु.	१	१४	२०	पुन.	८	३७	ह.	२३	१६	बव.	२२	४१	सिद्धि	क.	पू	र्ण	३३	४२	५	१५	१८	४५	२६	२६	३०	११	गु.
शु.	२	१२	४८	पु.	७	५६	वज्र.	२०	५५	कौ.	१८	४८	उत्पात	क.	पू	र्ण	३३	४१	५	१६	१८	४४	१	२७	२१	१२	शु.
श.	३	१०	५५	श्ले.	६	५४	सि.	१८	४७	गर	१४	५	मानस	सिं.	६	५६	३३	३६	५	१६	१८	४४	२	२८	२२	१३	श.
र.	४	८	४५	म.	५/४	३६/५	व्य.	१५	२७	म.	८	४२	मुग्दर	सिं.	पू	र्ण	३३	३८	५	१६	१८	४४	३	२९	२३	१४	र.
चं.	५	६/४	२६/२३	उ.	२	२८	ब.	१२	३०	वा.	२	५०	श्रीवत्स	कं.	९	४३	३३	३६	५	४७	१८	४३	४	३०	२४	१५	सो.
मं.	७	३	३०	ह.	२४	४६	प.	६	२८	गर	२४	५	सौम्य	कं.	पू	र्ण	३३	३४	५	४७	१८	४३	५	३१	२५	१६	मं.
बु.	८	२१	२६	चि.	२३	८	शि.	६/३	२४/२४	म.	४७	२५	वज्रदंड	तु.	११	५८	३३	३२	५	४७	१८	४३	६	३२	२६	१७	बु.
गु.	९	२०	४४	स्वा.	२१	४०	शा.	२४	३२	वा.	११	२८	स्थिर	तु.	पू	र्ण	३३	३०	५	१८	१८	४२	७	१	२७	१८	गु.
शु.	१०	१८	३७	वि.	२०	२२	शुभ.	२१	५०	तै.	५	५६	मातङ्ग	वृ.	१४	४३	३३	२६	५	१८	१८	४२	८	२	२८	१९	शु.
श.	११	१६	४८	अनु.	१९	२२	शु.	१९	२३	व.	०	५९	अमृत	वृ.	पू	र्ण	३३	२७	५	१९	१८	४१	९	३	२९	२०	श.
र.	१२	१५	२१	ज्ये.	१८	४२	ब्र.	४७	१२	वा.	२५	३	करण	ध.	१८	४४	३३	२५	५	१९	१८	४१	१०	४	३०	२१	र.
चं.	१३	१६	१३	मू.	१८	२६	ऐ.	१५	२१	तै.	२२	१३	लुम्ब	ध.	पू	र्ण	३३	२२	५	१९	१८	४१	११	५	३१	२२	सो.
मं.	१४	१३	३६	पू.	१८	४०	वै.	१३	५३	व.	२०	३९	मित्र	म.	२४	५२	३३	२०	५	२०	१८	४०	१२	६	१	२३	मं.
बु.	१५	१३	३०	उ.	१९	२३	वि.	१२	४८	बव.	२०	२०	वज्र	म.	पू	र्ण	३३	१८	५	२०	१८	४०	१३	७	२	२४	बु.

आषाढ़शुक्लपक्ष :- श्री संवत् २०५९, शाके १९२४, ईसवी सन् २००२

सौम्यगोलः, उत्तर-दक्षिणायणं, ग्रीष्म-वर्षतुः।

(११ जुलाई से २४ जुलाई तक)

चन्द्रदर्शन, मु.३० फलसमता, टेम्बे स्वामी समाधि दिन।

रथयात्रा,श्रीराम रथोत्सव,जगन्नाथ,बलभद्र,सुभद्रा की पुरी में यात्रा,जमादिअव्वल मासप्रारम्भ।

वैनायकी चतुर्थी, भद्रा रात्रौ ६/५० से, सिंह का चन्द्र प्रातः ६/५६ बजे।

भद्रा दिवा ८/४५ तक।

स्कन्द षष्ठी, कुमार षष्ठी, कन्या का चन्द्र दिवा ९/४३ बजे।

भद्रा रात्रौ १/२९ से। A दैत्यों का दिन तथा देवों की रात्रि आरम्भ, बुधाष्टमी।

भद्रा दि.१२/१६ तक,तुला का च.दि.११/५८ बजे, मु.३० फलसमता, दक्षिणायन प्रारम्भ, A B सायं ४/४७ तक, विष्णु शयनोत्सव।

मन्वादि १०, वृश्चिक का चन्द्र दि.२/४३ बजे। C धनु का चन्द्र सायं ६/४४ बजे।

विष्णुशयनी एकादशी व्रत सबका, चार्तुमास्य प्रारम्भ, भद्रा प्रातः ५/४३ से B

प्रदोष व्रत, शाक व्रतारम्भ, वामन पूजा, चार्तुमास्य के व्रत नियम का आरम्भ, C

लुम्ब योग। D कोकिला व्रत, मकर का चन्द्र रात्रौ १२/५२ बजे।

व्रत की पूर्णिमा, शिव शयनोत्सव, भद्रा दिवा १/३६ से रात्रौ १/३२ तक, D

मन्वादि १५, स्नान-दान की पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा, गुरु पूजा।

१३ पंक्ति ११ जुलाई गुरुवार के स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	३	२	३	४	१	१	७
२५	४	५९	१	७	२९	२२	२२
०	४	४९	५५	४०	१	८	८
३३	४९	२४	४३	५२	१५	५६	५६
५६	३९	१०९	१३	६७	७	३	३
५३	१५	७७	५३	१३	३२	११४.	११४.

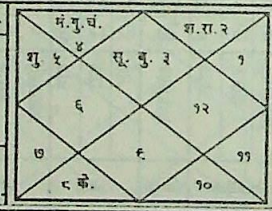

पाक्षिक फल– कहीं-तेज तथा कहीं सामान्य वर्षा होने का योग है। सराफा बाजार में सामान्य सस्ती आयेगी। साग-सब्जी के दामो मे तेजी आयेगी। सीमा पर तनाव जैसी स्थिति उत्पन्न होगी। किसी विशिष्ट व्यक्ति की हानि सम्भव है। विद्युत समस्या कुछ कम होगी। खाद्यान्न के दामों में स्थिरता रहेगी।

१४ पंक्ति १७ जुलाई, बुधवार के स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	३	३	४	१	१	७
०	८	०	३	१४	२९	२१	२१
४१	०	५३	५९	२१	४५	४९	४९
५६	२	३	१	३५	२८	५२	५२
५६	३९	१११	१३	६६	७	३	३
५६	११	५६	५३	५९	२२	११४.	११४.

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

श्री वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन प्रा. लि.

वा.	तिथि			नक्षत्र			योग			करण			योगाः	चन्द्रचार			दिनमान		सूर्योदय		सूर्यास्त		दिनांक				वा.
नाम	मिति	बजकर	मिनटतक	नाम	बजकर	मिनटतक	नाम	बजकर	मिनटतक	नाम	घटी	पल	आनंदादि	राशि	बजकर	मिनटतक	घटी	पल	बजकर	मिनटपर	बजकर	मिनटपर	मु.	बंगला	सांगातिक	अंग्रेजी	वार
रवि.	१	१३	५४	श्र.	२०	३७	प्री.	१२	८	कौ.	२१	२२	केतु	म.	पू	र्ण	३३	१६	५	२१	१८	३६	१४	८	३	२५	गु.
सोम.	२	१४	४८	ध.	२२	५७	आ.	११	५०	गर	२३	३५	धाता	कुं.	६	३०	३३	१४	५	२१	१८	३६	१५	६	४	२६	शु.
मंग.	३	१६	१०	श.	२४	२४	सौ.	११	५४	म.	२६	५८	आनन्द	कुं.	पू	र्ण	३३	११	५	२२	१८	३८	१६	१०	५	२७	श.
बुध.	४	५७	५२	पूभ्र.	२	४६	शो.	१२	१५	वा.	३१	१३	चर	मी.	२०	१६	३३	६	५	२२	१८	३८	५७	११	६	२८	र.
गुरु.	५	१६	५०	उभ्र.	पू	र्ण	अति.	१२	३६	कौ.	३२	४०	वद	मी.	पू	र्ण	३३	६	५	२३	१८	३७	१८	१२	७	२६	सो.
शुक्र.	६	२१	५१	उभ्र.	५	२५	सु.	१३	२८	गर.	८	३८	सिद्धि	मी.	पू	र्ण	३३	४	५	२३	१८	३७	१६	१३	८	३०	मं.
शनि.	७	२३	४६	रे.	८	३	पृ.	१४	७	भ.	१३	३५	उत्पात	मे.	८	६	३३	१	५	२४	१८	३६	२०	१४	६	३१	बु.
रवि.	८	१	३०	ज.	१०	३०	शू.	१४	३४	वा.	१८	५	मानस	मे.	पू	र्ण	३२	५८	५	२४	१८	३६	२१	१५	१०	१	गु.
सोम.	९	२	५०	भ.	१२	४०	गण्ड	१४	५०	तै.	२१	५०	मुग्दर	वृ.	१६	८	३२	५६	५	२५	१८	३५	२२	१६	११	२	शु.
मंग.	१०	३	४०	कृ.	१४	२४	वृ.	१४	४०	व.	२४	३५	केतु	वृ.	पू	र्ण	३२	५३	५	२५	१८	३५	२३	१७	१२	३	श.
बुध.	११	४	३	रो.	१५	४३	मृ.	१४	१६	बव.	२६	४	धाता	मि.	४	६	३२	५०	५	२६	१८	३४	२४	१८	१३	४	र.
गुरु.	१२	३	५३	मृ.	१६	३१	व्या.	१३	२१	कौ.	२६	१६	आनन्द	मि.	पू	र्ण	३२	४७	५	२६	१८	३४	२५	१९	१४	५	सो.
शुक्र.	१३	३	१४	आ.	१६	४८	ह.	१२	६	गर	२५	१७	चर	मि.	पू	र्ण	३२	४५	५	२७	१८	३३	२६	२०	१५	६	मं.
शनि.	१४	२	७	पुन.	१६	३७	वज्र.	१०	२४	भ.	२३	३	वद	क.	१०	४१	३२	४२	५	२७	१८	३३	२७	२१	१६	७	बु.
रवि.	३०	२४	३७	पु.	१५	५८	सि.	८	२५	च.	१६	४५	शुभ	क.	पू	र्ण	३२	३६	५	२८	१८	३२	२८	२२	१७	८	गु.

श्रावणकृष्णपक्ष :- श्री संवत् २०५६, शाके १९२४, ईसवी सन् २००२

सौम्यगोलः, दक्षिणायणं, वर्षतुः।

(२५ जुलाई से ८ अगस्त तक)

अशून्य शयन व्रत, चन्द्रोदय ७/४८ बजे।

कुम्भ का चन्द्र दि.९/३० बजे, पंचक प्रारम्भ दि.९/३० बजे, भद्रा रा.३/२७ से।

संकष्ट चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात्रौ ९/२ बजे, भद्रा दिवा ४/९ तक, पंचक।

मीन का चन्द्र रात्रौ ८/१६ बजे, पंचक।

श्रावण के सोमवार व्रत शुरु, मरुस्थलियों की नागपंचमी, पंचक।

गौरीपूजन, दुर्गायात्रा, भद्रा रात्रौ ९/५१ बजे, पंचक।

मेष का चन्द्र दि.८/६ बजे, भद्रा दि.१०/५० तक, पंचक समाप्ति दिवा ८/६ बजे।

अगस्त ८, मन्वादि ८, तिलक पुण्य तिथि।

वृष का चन्द्र रात्रौ ७/८ बजे।

भद्रा दिवा ३/१५ से रात्रौ ३/४० तक।

कामदा एकादशी व्रत, मिथुन का चन्द्र रात्रौ ४/९ बजे।

श्रावण सोमवार व्रत दूसरा। A भद्रा रात्रौ ३/१४ से।

भौम प्रदोष व्रत, ऋणमोचनार्थ भौम प्रदोष विधान से करें, गौरी पूजन, दुर्गायात्रा, A

मासशिवरात्रि, भद्रा दिवा २/४० तक, कर्क का चन्द्र दिवा १०/४१ बजे।

स्नान-दान-श्राद्ध की अमावास्या, गुरु-पुष्य योग, मन्वादि ३०।

१५ पंक्ति २५ जुलाई, गुरुवार के स्पष्ट ग्रह

गु.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	३	३	४	२	१	७
१३	१५	५	२३	०	२१	२१	
५७	११	४७	१०	५	४४	२४	२४
४७	४०	८	५	२८	२४	२६	२६
५७	३८	११०	२३	६५	७	३	३
३	४९	५४	५३	४	२३	११४	११४

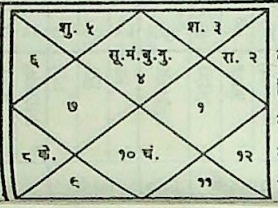

पाक्षिक फल– सरसों का तेल, ईमारती सामान, लकड़ी के दामों में तेजी आयेगी। चौपाये को रोग होंगे, किसी विशिष्ट व्यक्ति की हानि होगी। सर्वत्र अच्छी वर्षा होगी। कहीं बाढ़ की वजह से खेती व जन-धन की हानि होगी। दुर्घटना व उपद्रव होने की भी सम्भावना है। कास्तकार लोग कुछ परेशान रहेंगे।

१६ पंक्ति १ अगस्त, गुरुवार के स्पष्ट ग्रह

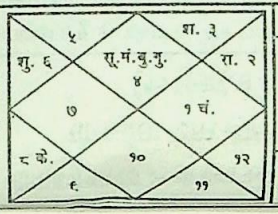

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	३	३	५	२	१	७
१४	१७	२८	६	०	१	२१	२१
५७	४३	३४	४७	३३	३३	२	२
३०	२३	१०	१६	३२	५५	१०	१०
५७	३८	१०६	१३	६२	६	३	३
११	४९	४६	५३	४४	२२	११४	११४

श्रावणशुक्लपक्ष :- श्री संवत् २०५९, शाके १९२४, ईसवी सन् २००२

सौम्यगोलः, दक्षिणायणं, वर्षाऋतुः ।

(९ अगस्त से २२ अगस्त तक)

वा.	तिथि			नक्षत्र			योग			करण			योगाः	चन्द्रचार			दिनमान		सूर्योदय		सूर्यास्त		दिनांक				वा.	
नाम	मिति	बजके	मिनटतक	नाम	बजके	मिनटतक	नाम	बजके	मिनटतक	नाम	घटी	पल	आनंदादि	राशि	बजके	मिनटतक	घटी	पल	बजकर	मिनटपर	बजकर	मिनटपर	मु.	बंगला	सांपातिक	अंग्रेजी	वार	
शु.	१	२२	४७	श्ले.	१५	९	व्य.	६/३	६/३०	किं.	१५	३२	मृत्यु	सिं.	१५	६	३२	३६	५	२९	१८	३१	२९	२३	१८	९	शु.	इस मास में प्रति बुध व गुरुवार को भण्डार घर में बुध-गुरु की पूजा से भण्डार भरपूर A
श.	२	२०	४०	म.	१३	४६	प.	२४	४१	बा.	१०	३४	पद्म	सिं.	पू	र्ण	३२	३३	५	२९	१८	३१	३०	२४	१९	१०	श.	चन्द्रदर्शन, मु. ३० फलसमता । A होता है, सिंह का चन्द्र दिवा ३/६ बजे ।
र.	३	१८	२१	पू.	१२	२१	शि.	२१	४४	तै.	५	१	छत्र	कं.	१७	५८	३२	३०	५	३०	१८	३०	१	२५	२०	११	र.	जमादि उस्सानी मास प्रारम्भ, मधुश्रवा तीज, भद्रा रा.शे.५/७ बजे से, कन्या का चन्द्र B
सो.	४	१५	५५	उ.	१०	४४	सि.	१८	४२	व.	२६	१	श्रीवत्स	कं.	पू	र्ण	३२	२७	५	३०	१८	३०	२	२६	२१	१२	सो.	श्रावण सोमवार व्रत तीसरा, वैनायकी चतुर्थी, भद्रा दिवा ३/५४ से ।
मं.	५	१३	२७	ह.	९	४	सा.	१५	३८	बा.	१६	४९	सौम्य	तु.	२०	१५	३२	२४	५	३१	१८	२९	३	२७	२२	१३	मं.	नागपंचमी, तक्षक पूजा, गुड़िया ५, गौरीपूजन-दुर्गायात्रा, कल्क्यावतार, C
बु.	६	११	२	चि.	७	२६	शुभ	१२	३७	तै.	१३	४३	कालदंड	तु.	पू	र्ण	३२	२१	५	३२	१८	२८	४	२८	२३	१४	बु.	B सायं ५/५८ बजे, ठकुराणी जयन्ती, सौभाग्य सुन्दरी व्रत ।
गु.	७	८	४३	स्वा.	५/४	५३/३१	शु.	१०	६	व.	७	५६	स्थिर	वृ.	२२	५२	३२	१८	५	३२	१८	२८	५	२९	२४	१५	गु.	गोस्वामी तुलसीदास जयं., भद्रा दि.८/४२ से रा.७/३८ तक, स्वतन्त्रता दिवस ५६वां, D
शु.	८	६/४	३७/४६	अनु.	३	३०	ब्र.	७/४	२१/४६	बव.	२	३८	रक्ष	वृ.	पू	र्ण	३२	१५	५	३३	१८	२७	६	३०	२५	१६	शु.	F ४/५५ बजे से, कुम्भ का चन्द्र सायं ४/५५ बजे, अमरनाथ यात्रा, हयग्रीवोत्पत्ति ।
श.	१०	३	१८	ज्ये.	२	४२	वै.	२	३४	तै.	२६	८	मुसल	ध.	२	४२	३२	११	५	३४	१८	२६	७	३१	२६	१७	श.	धनु का चन्द्र रात्रौ २/४२ बजे । C तुला का चन्द्र रात्रौ ८/१५ बजे ।
र.	११	२	१९	मू.	२	२०	वि.	२४	४	व.	२२	५१	सिद्धि	ध.	पू	र्ण	३२	८	५	३४	१८	२६	८	१	२७	१८	र.	भद्रा दिवा २/४२ से रात्रौ २/८ तक, पुत्रदा एकादशी व्रत सबका ।
सो.	१२	१	३२	पू.	२	२६	प्री.	२२	३९	बव	२०	३९	उत्पात	ध.	पू	र्ण	३२	५	५	३५	१८	२५	९	२	२८	१९	सो.	श्रावण सोमवार व्रत चौथा, दधि व्रतारम्भ । D वृश्चिक का चं.रा.१०/५२ बजे ।
मं.	१३	१	२४	उ.	३	२	आ.	२१	२८	कौ.	१९	४०	मानस	म.	८	३४	३२	२	५	३६	१८	२४	१०	३	२९	२०	मं.	मकर का चन्द्र दि.८/३४ बजे, भौम प्रदोष व्रत, ऋणमोचनार्थ भौम प्रदोष विधान E
बु.	१४	१	४७	श्र.	४	७	सौ.	२०	४०	गर	१९	५८	छत्र	म.	पू	र्ण	३१	५८	५	३६	१८	२४	११	४	३०	२१	बु.	भद्रा रात्रौ १/४६ से, ऋग्वेदियों की श्रावणी । E से करें, गौरी पूजन-दुर्गायात्रा ।
गु.	१५	२	४०	ध.	पू	र्ण	शो.	२०	१८	व.	२१	३२	श्रीवत्स	कुं.	१६	५५	३१	५५	५	३७	१८	२३	१२	५	३१	२२	गु.	रक्षाबन्धन, स्नान-दान व्रत की पूर्णिमा, भद्रा दि.२/१० से, पंचक प्रारम्भ सायं F

१७ पंक्ति ९ अगस्त, शुक्रवार के स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
[illegible]	३	४	३	५	२	१	७
[illegible]	२२	१२	८	८	२	२०	२०
[illegible]	५३	३२	३७	४८	२४	३६	३६
[illegible]	४	६	५८	३०	५१	४४	४४
५७	३८	९९	१२	६०	६	३	३
२१	२८	४६	५९	८	२१	११व.	११व.

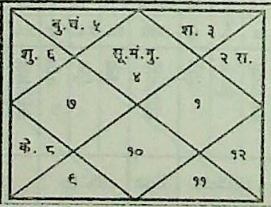

पाक्षिक फल– फलों के दाम बढ़ेंगे । साग सब्जी के दाम सामान्य तेज रहेंगे । वर्षा अच्छी होगी । कहीं सूखे की स्थिति भी रहेगी । बाढ़ के कारण कृषि को हानि होगी । अपहरण की घटना से व्यापारी वर्ग दुःखी रहेगा । राष्ट्रों में तनाव जैसी स्थिति बनेगी । सीमा पर जनता भयभीत होगी । उग्रवादी लूट, हत्या करेंगे ।

१८ पंक्ति १६ अगस्त, शुक्रवार के स्पष्ट ग्रह

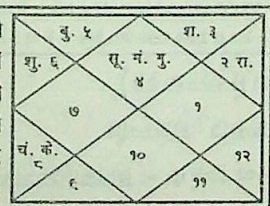

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	४	३	५	२	१	७
२९	२७	२३	१०	१५	३	२०	२०
१७	२२	३९	८	४२	६	१४	१४
२७	१७	९	५१	३७	४	२९	२९
५७	३८	८८	१२	५७	५	३	३
३२	२७	६	५९	३१	२१	११व.	११व.

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

भाद्रपदकृष्णपक्ष :– श्री संवत् २०५९, शाके १९२४, ईसवी सन् २००२

सौम्यगोल:, दक्षिणायणं, वर्षाऋतुः।

(२३ अगस्त से ७ सितम्बर तक)

वा.	तिथि			नक्षत्र			योग			करण			योगाः	चन्द्रचार			दिनमान		सूर्योदय		सूर्यास्त		दिनांक				वा.	
नाम	मिति	बजके	मिनटतक	नाम	बजके	मिनटतक	नाम	बजके	मिनटतक	नाम	घटी	पल	आनंदादि	राशि	बजके	मिनटतक	घटी	पल	बजकर	मिनटपर	बजकर	मिनटपर	मु.	बंगला	सांपातिक	अंग्रेजी	वार	
शु.	१	४	१	ध.	५	४२	अति.	२०	१४	वा.	२४	१७	धाता	कुं.	पू	र्ण	३१	५२	५	३७	१८	२३	१३	६	१	२३	शु.	इस मास में कोई एक अन्न खाने से धन-धान्य पुत्रादि की प्राप्ति होती है, पंचक।
श	२	पू	र्ण	श.	७	४३	सु.	२०	३२	तै.	२८	५	आनन्द	मी.	३	२८	३१	४८	५	३८	१८	२२	१४	७	२	२४	श.	अशून्य शयन व्रत चन्द्रोदय रात्रौ ७/४० बजे, विन्ध्याचल जयन्ती, रतजग्गा, A
र	२	५	४५	पूभा.	१०	५	धृ.	२१	३	गर	०	१३	चर	मी.	पू	र्ण	३१	४५	५	३९	१८	२१	१५	८	३	२५	र.	विशालाक्षी यात्रा, भद्रा सा.६/४६ से, पंचक। A मीन का चं.रा.३/२८ बजे, पंचक।
चं	३	७	४३	उभा.	१२	५०	शू.	२१	४०	भ.	५	७	गद	मी.	पू	र्ण	३१	४२	५	४०	१८	२०	१६	९	४	२६	सो.	भद्रा दि.७/४३ तक,संकष्टी बहुला चतुर्थी व्रत,चन्द्रो.रा.८/३६ बजे, कज्जली तीज, पंचक।
मं	४	९	४६	रे.	१५	२७	गं.	२२	१७	बा.	१०	१४	शुभ	मे.	१५	१४	३१	३८	५	४०	१८	२०	१७	१०	५	२७	मं.	पंचक समाप्ति दिवा ३/१४ बजे, मेष का चन्द्र दिवा ३/१४ बजे।
बु	५	११	४६	अ.	१७	४६	वृ.	२२	४६	तै.	१५	१०	मृत्यु	मे.	पू	र्ण	३१	३५	५	४१	१८	१९	१८	११	६	२८	बु.	रक्षापंचमी (उड़ीसा)।
गु	६	१३	३०	भ.	२०	०	ध्रु.	२३	३	व.	१९	२७	पद्म	वृ.	२	२६	३१	३१	५	४२	१८	१८	१९	१२	७	२९	गु.	हलषष्ठी,ललही छठ व्रत,भद्रा दि.१/२९ से रा.२/१० तक,वृष का चं.दि.२/२६ बजे।
शु	७	१४	५१	कृ.	२१	५२	व्या.	२३	०	बव.	२२	५२	छत्र	वृ.	पू	र्ण	३१	२८	५	४२	१८	१८	२०	१३	८	३०	शु.	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी स्मार्तों की।
श.	८	१५	४७	रो.	२३	१७	ह.	२२	३६	कौ.	२५	८	श्रीवत्स	वृ.	पू	र्ण	३१	२४	५	४३	१८	१७	२१	१४	९	३१	श.	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी वैष्णवों की, दूर्वाष्टमी।
र.	९	१६	१३	मृ.	२४	१३	वज्र.	२१	४९	रा.	२६	१०	सौम्य	मि.	११	४१	३१	२१	५	४४	१८	१६	२२	१५	१०	१	र.	सितम्बर ६, भद्रा रात्रौ ४/७ से, गोगा नवमी, मिथुन का चन्द्र दिवा ११/४१ बजे।
चं.	१०	१६	७	आ.	२४	३६	सि.	२०	३५	भ.	२५	५३	कालदंड	मि.	पू	र्ण	३१	१७	५	४४	१८	१६	२३	१६	११	२	सो.	भद्रा सायं ४/६ तक।
मं.	११	१५	३०	पुन.	२४	३१	व्य.	१८	५९	बा.	२४	२१	स्थिर	क.	१८	२९	३१	१४	५	४५	१८	१५	२४	१७	१२	३	मं.	जया एकादशी व्रत सबका, कर्क का चन्द्र सायं ६/२९ बजे।
बु.	१२	१४	२६	पु.	२३	५९	व.	१७	१	तै.	२१	३९	मातङ्ग	क.	पू	र्ण	३१	१०	५	४६	१८	१४	२५	१८	१३	४	बु.	प्रदोष व्रत, वत्स द्वादशी। C कन्या का चन्द्र रा.२/१ बजे।
गु.	१३	१२	५७	श्ले.	२२	६	प.	१४	४५	व.	१७	५७	अमृत	सिं.	२३	५	३१	७	५	४६	१८	१४	२६	१९	१४	५	गु.	मासशिवरात्रि, भद्रा दि.१२/५५ से रा.१२/१ तक, सिंह का चन्द्र रा.११/५ तक।
शु.	१४	११	८	म.	२१	५६	शि.	१२	१२	श.	१३	२४	काण	सिं.	पू	र्ण	३१	३	५	४७	१८	१३	२७	२०	१५	६	शु.	श्राद्ध की अमावास्या। B से कुश छेदें, आज के छेदें कुश वर्ष भर बासी नहीं होते, C
श.	३०	६	३	पू.	२०	३०	सि.	१२	२६	ना.	८	६	लुम्ब	कं.	२	१	३१	०	५	४८	१८	१२	२८	२१	१६	७	श.	स्नान-दान की अमावास्या, पिठोरा व्रत, कुशोत्पाटिनी अमावास्या, ॐ हुंफट् मन्त्र B

१९ पंक्ति २३ अगस्त, शुक्रवार के स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	५	३	५	२	१	७
६	[illegible]	३	११	२२	३	१९	१९
०	५१	७	३९	१६	४३	५२	५२
५३	२३	४५	४४	५०	३१	१४	१४
५७	३८	७०	१२	५२	५	३	३
४४	२७	४१	५८	५९	२१	११व.	११व.

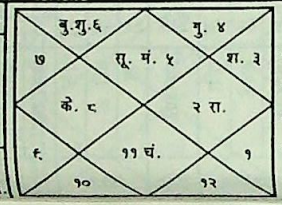

पाक्षिक फल– देश के अनेक भागों में वर्षा व बाढ़ का प्रकोप रहेगा। सोने, चांदी, लोहे का दाम सामान्य तेजी की ओर। सरकार को परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। साम्प्रदायिक उपद्रव होने की सम्भावना है। खाद्य पदार्थ के दाम स्थिर रहेंगे। चोरी, डकैती होती ही रहेगी। साग-सब्जी के दाम घटेंगे।

२० पंक्ति ३१ अगस्त, शनिवार के स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	५	३	५	२	१	७
१३	६	१०	१३	२९	४	१९	१९
४३	५८	४१	२३	६	२३	२६	२६
४९	५९	३४	९	१८	५६	४८	४८
५८	३८	३६	१२	४९	४	३	३
२	२७	१	५२	२६	२१	११व.	११व.

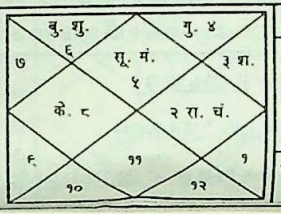

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

भाद्रपदशुक्लपक्ष :- श्री संवत् २०५९, शाके १९२४, ईसवी सन् २००२

सौम्यगोल:, दक्षिणायणं, वर्षा-शरदर्तु:।

(८ सितम्बर से २१ सितम्बर तक)

वा.	तिथि			नक्षत्र			योग			करण			योगाः	चन्द्रचार			दिनमान		सूर्योदय		सूर्यास्त		दिनांक				वा.	
[illegible]	मिति	बजके	मिनटतक	नाम	बजके	मिनटतक	नाम	बजके	मिनटतक	नाम	घटी	पल	आनंदादि	राशि	बजके	मिनटतक	घटी	पल	बजकर	मिनटपर	बजकर	मिनटपर	मु.	बंगला	सांपातिक	अंग्रेजी	वार	
र.	१	६/४	४८/२३	उ.	१७	५६	सा.	६/३	२६/२६	बव.	२	२६	मित्र	कं.	पू	र्ण	३०	५६	५	४६	१८	११	२९	२२	१७	८	र.	बलभद्रावतार, चन्द्रदर्शन, मु. ४५ फलंसुभिक्षता।
सो.	३	१	५७	ह.	१७	१६	शु.	२४	२०	तै.	२३	२०	वज्र	तु.	४	१९	३०	५३	५	४६	१८	११	१	२३	१८	९	सो.	हरितालिका तीज,मन्वादि ३,वाराहवतार,रज्जब मास प्रारम्भ,तुला का चन्द्र रा.४/१९ बजे।
मं.	४	२३	३२	चि.	१५	३७	ब्र.	२१	१८	व.	१७	१५	ध्वांक्ष	तु.	पू	र्ण	३०	४९	५	५०	१८	१०	२	२४	१९	१०	मं.	वैनायकी वरद गणेश चतुर्थी,ढेला चौथ,चौथ चन्द्र,आज चन्द्रमा का दर्शन निषिद्ध है, A
बु.	५	२१	१६	स्वा.	१४	३	ऐ.	१८	२०	बव.	११	२२	धूम्र	तु.	पू	र्ण	३०	४५	५	५१	१८	९	३	२५	२०	११	बु.	ऋषिपंचमी। A चन्द्रास्त रा.८/४१ बजे, भद्रा दिवा १२/४५ से रात्रौ ११/३२ तक।
गु.	६	१९	८	वि.	१२	३७	वै.	१५	३२	कौ.	५	५१	प्रवर्ध	वृ.	६	५१	३०	४२	५	५२	१८	८	४	२६	२१	१२	गु.	लोलार्क छठ, कार्तिकेय दर्शन, लोलार्क कुण्ड स्नान, ज्येष्ठा देवी आवाहन, B
शु.	७	१७	२०	अनु.	११	२८	वि.	१२	५५	गर	०	५७	रक्ष	वृ.	पू	र्ण	३०	३८	५	५२	१८	८	५	२७	२२	१३	शु.	मुक्ताभरण सप्तमी,सन्तान ७,महालक्ष्मी व्रतारम्भ,ज्येष्ठा देवी पूजन,भद्रा दि.५/२० से C
श.	८	१५	५१	ज्ये.	१०	३८	प्री.	१०	३४	बव.	२४	५२	मुसल	ध.	१०	३१	३०	३४	५	५३	१८	७	६	२८	२३	१४	श.	राधाष्टमी, ज्येष्ठा देवी विसर्जन, धनु का चन्द्र दि.१०/३१ बजे। C रा.४/३४ तक।
र.	९	१४	४६	मू.	१०	१०	आ.	८	३०	कौ.	२२	६	सिद्धि	ध.	पू	र्ण	३०	३१	५	५४	१८	६	७	२९	२४	१५	र.	श्रीचन्द्र जयन्ती (उदासीन सम्प्रदाय का उत्सव)। B वृश्चिक का चं.प्रा.६/५१ बजे।
सो.	१०	१४	७	पू.	१०	८	सौ.	६/५	[illegible]/२७	गर	२०	३०	उत्पात	म.	१६	६	३०	२७	५	५४	१८	६	८	३०	२५	१६	सो.	भद्रा रात्रौ २/१ से, मकर का चन्द्र सायं ४/६ बजे।
मं.	११	१३	५८	उ.	१०	३७	अति.	४	३२	म.	२०	७	मानस	म.	पू	र्ण	३०	२३	५	५५	१८	५	९	३१	२६	१७	मं.	पद्मा एकादशी व्रत सबका, विश्वकर्मा पूजा, भद्रा दिवा १/५८ तक।
बु.	१२	१४	२४	श्र.	११	३४	सु.	४	३	वा.	२१	६	छत्र	कुं.	२४	८	३०	२०	५	५६	१८	४	१०	१	२७	१८	बु.	वामन द्वादशी,प्रदोष व्रत,पंचक प्रारम्भ रा.१२/८ से, कुम्भ का चन्द्र रा.१२/८ बजे।
गु.	१३	१५	१८	ध.	१३	३	धृ.	३	५४	तै.	२३	१८	श्रीवत्स	कुं.	पू	र्ण	३०	१६	५	५७	१८	३	११	२	२८	१९	गु.	पंचक। C मीन का चन्द्र दिवा १०/३० बजे।
शु.	१४	१६	३७	श.	१४	५७	शू.	४	४	व.	२६	४०	सौम्य	कुं.	पू	र्ण	३०	१२	५	५७	१८	३	१२	३	२९	२०	शु.	अनन्त चतुर्दशी व्रत, पंचक, भद्रा सायं ४/३७ से रात्रौ ५/२८ तक।
श.	१५	१८	२२	पूभा.	१७	१४	ग.	४	३०	बव.	३०	५७	कालदंड	मी.	१०	३०	३०	९	५	५८	१८	२	१३	४	३०	२१	श.	स्नान-दान व्रत की पूर्णिमा, महालयारम्भ, नान्दी मातामह श्राद्ध, C

२१ पंक्ति ८ सितम्बर, रविवार के स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
[illegible]	४	५	३	६	२	१	७
[illegible]	१२	१२	१५	५	४	१९	१९
[illegible]	६	५०	५	१६	५६	१	१
[illegible]	३५	२३	३१	५५	४२	२२	२२
५८	३८	११	११	४१	३	३	३
१५	२७	२९व.	५९	३७	२०	११व.	११व.

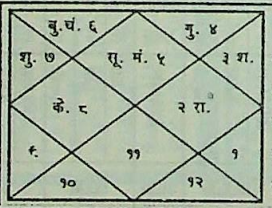

पाक्षिक फल– केन्द्र में अलग-अलग नीतियों के कारण विरोधाभास बढ़ेगा, जिसका प्रभाव राज्य सरकार पर भी पड़ सकता है। तम्बाकू, चीनी तथा चावल के दाम सामान्य तेज होंगे। सर्राफा बाजार सामान्य रहेगा। विदेशी निवेश बढ़ने की सम्भावना उग्रवादियों के आतंक से वहां जनता भयभीत रहेगी।

२२ पंक्ति १४ सितम्बर, शनिवार के स्पष्ट ग्रह

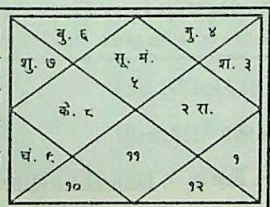

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	५	३	६	२	१	७
२७	१५	१०	१६	९	५	१८	१८
१८	५४	११	१६	१०	१६	४२	४२
५९	३२	५६	२५	१६	९	१७	१७
५८	३७	४५	११	३४	२	३	३
२९	५४	५व.	५	५७	५०	११व.	११व.

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

आश्विनकृष्णपक्ष :– श्री संवत् २०५९, शाके १९२४, ईसवी सन् २००२

सौम्यगोल:, दक्षिणायणं, शरदर्तुः।

(२२ सितम्बर से ६ अक्टूबर तक)

वा.	तिथि			नक्षत्र			योग			करण			योगाः	चन्द्रचार			दिनमान		सूर्योदय		सूर्यास्त		दिनांक				वा.	
नाम	मिति	बजके	मिनटतक	नाम	बजके	मिनटतक	नाम	बजके	मिनटतक	नाम	घटी	पल	आनंदादि	राशि	बजके	मिनटतक	घटी	पल	बजकर	मिनटपर	बजकर	मिनटपर	मु.	बंगला	सांपातिक	अंग्रेजी	वार	
र.	१	२०	२१	उभा.	१६	४५	वृ.	५	४	वा.	३	२५	स्थिर	मी.	पू	र्ण	३०	५	५	५६	१८	१	१४	५	३१	२२	र.	प्रतिपद् श्राद्ध, फसली सन् १४१० आरम्भ, पंचक।
चं.	२	२२	२७	रे.	२२	२२	ध्रु.	५	४२	तै.	८	२०	मातङ्ग	मे.	२२	११	३०	१	६	०	१८	०	१५	६	१	२३	सो.	पंचक समाप्ति रा.१०/११ बजे, अशून्यशयन व्रत चन्द्रोदय रा.७/७ बजे, द्वितीया श्राद्ध, A
मं.	३	२४	२८	अ.	२४	३१	व्या.	पू	र्ण	व.	१३	३७	अमृत	मे.	पू	र्ण	२९	५८	६	०	१८	०	१६	७	२	२४	मं.	ललिता देवी यात्रा, तृतीया श्राद्ध, भद्रा दिवा ११/२७ से रात्रौ १२/२७ तक।
बु.	४	२	१५	भ.	३	१५	व्या.	६	१२	बव.	१८	२०	काण	मे.	पू	र्ण	२९	५४	६	१	१७	५६	१७	८	३	२५	बु.	संकष्ट चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रा.८/१० बजे, चतुर्थी श्राद्ध, भरणी श्राद्ध, गया श्राद्ध फल।
गु.	५	३	४०	कृ.	५	१२	ह.	६	३२	कौ.	२२	१८	लुम्ब	वृ.	६	३२	२९	५०	६	२	१७	५८	१८	९	४	२६	गु.	पंचमी श्राद्ध, वृष का चन्द्र दिवा ९/३२ बजे। A मेष का चन्द्र रात्रौ १०/११ बजे।
शु.	६	४	३८	रो.	पू	र्ण	वज्र	६	३४	गर	२५	१६	मित्र	वृ.	पू	र्ण	२९	४७	६	३	१७	५७	१९	१०	५	२७	शु.	षष्ठी श्राद्ध, भद्रा रात्रौ ४/३७ से, चन्द्र ६ व्रत। B समाप्ति, अष्टमी श्राद्ध।
श.	७	५	५	रो.	६	४४	सि.	६/५	१२/२८	भ.	२७	२	श्रीवत्स	मि.	१९	२	२९	४३	६	३	१७	५७	२०	११	६	२८	श.	सप्तमी श्राद्ध, भद्रा दिवा ४/५२ तक, मिथुन का चन्द्र रात्रौ ७/२ बजे।
र.	८	५	३	मृ.	७	४७	व.	४	२१	वा.	२७	३२	सौम्य	मि.	पू	र्ण	२९	३९	६	४	१७	५६	२१	१२	७	२९	र.	जिवित्पुत्रिका व्रत (जिउतिया), महालक्ष्मी पूजा, गजगौरी जन्म, लक्ष्मी कुण्ड स्नान B
चं.	९	४	३०	आ.	८	१८	प.	२	५०	तै.	२६	४५	कालदंड	क.	२	६	२९	३६	६	५	१७	५५	२२	१३	८	३०	सो.	मातृ नवमी, नवमी श्राद्ध, अविधवा नवमी, खुण्टे जी महाराज पुण्य तिथि, कर्क का C
मं.	१०	३	२८	पुन.	८	२०	शि.	२४	५६	व.	२४	४४	स्थिर	क.	पू	र्ण	२९	३२	६	५	१७	५५	२३	१४	९	१	मं.	अक्टूबर १०, दशमी श्राद्ध, भद्रा दि.३/५७ से रा.३/२६ तक।
बु.	११	२	३	पु.	७	५६	सि.	२२	४२	बव.	२१	३८	मातङ्ग	क.	पू	र्ण	२९	२८	६	६	१७	५४	२४	१५	१०	२	बु.	इन्दिरा एकादशी व्रत, गांधी जयन्ती, एकादशी श्राद्ध। D कन्या का चं.दि.१०/२ बजे।
गु.	१२	२४	१७	श्ले.	७/६	८/१	सा.	२०	१६	कौ.	१७	३७	अमृत	सिं.	६	५४	२९	२४	६	७	१७	५३	२५	१६	११	३	गु.	सन्यासियों का श्राद्ध, द्वादशी श्राद्ध, सिंह का चन्द्र दिवा ६/५४ बजे।
शु.	१३	२२	१५	पू.	४	३९	शुभ	१७	२७	गर	१२	४८	सिद्धि	सिं.	पू	र्ण	२९	२१	६	८	१७	५२	२६	१७	१२	४	शु.	प्रदोष व्रत, मासशिवरात्रि, त्रयोदशी श्राद्ध, भद्रा रा.१०/१२ से। C चं.रा.२/६ बजे।
श.	१४	१९	५८	उ.	३	५	शु.	१४	३०	भ.	७	२४	उत्पात	कं.	१०	२	२९	१७	६	८	१७	५२	२७	१८	१३	५	श.	भद्रा दि.९/५ तक, अपघातों से मरे का श्राद्ध, चतुर्दशी श्राद्ध, भद्रा दि.९/५ तक, D
र.	३०	१७	३५	ह.	१	२६	ब्र.	११	२८	व.	१	३४	मानस	कं.	पू	र्ण	२९	१४	६	९	१७	५१	२८	१९	१४	६	र.	सर्व पितृ अमावास्या, पितृ विर्सजन, स्नान-दान-श्राद्ध की अमावास्या।

२३ पंक्ति २२ सितम्बर, रविवार के स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	४	५	३	६	२	१	७
५	१०	३	१७	१३	५	१८	१८
७	५७	५३	४४	७	३६	१६	१६
५०	४४	१७	५९	५२	४३	५२	५२
५८	३७	३८	११	२२	२	३	३
४६	५४	४३व	४	७	१५	११व.	११व.

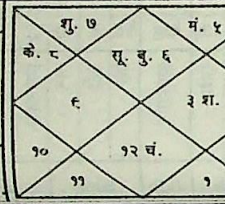

पाक्षिक फल– सर्राफा बाजार में नरमी रहेगी। साम्प्रदायिक तनाव पैदा हो सकता है। बुद्धिमान नेताओं के कारण जनता के हित में काम होगा। विरोधी पार्टी की निन्दा होगी। छात्र उपद्रव करेंगे। चोरी, डकैती, हत्या होती रहेगी। सरकार कुछ ध्यान देगी। रसीले पदार्थ के दामों में सामान्य तेजी आ सकती है।

२४ पंक्ति २९ सितम्बर, रविवार के स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	४	५	३	६	२	१	७
१२	२५	१	१९	१५	५	१७	१७
०	२३	२१	२	६	४७	५४	५४
३	२	१५	२७	२९	४९	३६	३६
५९	३७	२	१०	९	१	३	३
२	५४	५७मा	३९	२२	१७	११व.	११व.

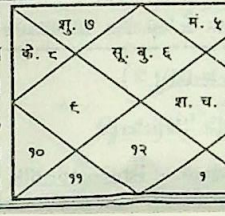

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

पाचनक्रिया नियमित करें
असली द्राक्षयुक्त
अधिक कार्यक्षमता बढ़ाए
रक्त संचार और रक्त निर्मिती में सहायक
स्फुर्ती देकर दिनभर तरो-ताजा रखे।

बैद्यनाथ द्राक्षासव स्पेशल उत्कृष्ट क्वालिटि के ताजे चुने हुये द्राक्षों एंव कई अनमोल जड़ी बुटीयों के मिश्रण से तैयार ऐसा अद्वितीय 'स्पेशल' आयुर्वेदिक टॉनिक है

जो आपके शरीर को देता है 'प्राकृतिक ताजगी' जो की आज के आधुनिक व्यस्त एवं तनाव पूर्ण दिनचर्या में सबसे आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है। यह आपकी रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है।

शक्ति, स्फुर्ती एवं ताजगी के लिए

स्पेशल

बैद्यनाथ द्राक्षासव

नवयौवन की सनसनाती शक्ति का परिपूर्ण अहसास

बैद्यनाथ वीटा एक्स गोल्ड यह आयुर्वेद की शक्तिशाली भस्मों एवं उत्तेजक जडीबुटींयो का पेटेंट फार्मुला है। इसका जोरदार असर नस - नस में नई ताकत जगाता है और जवानी को बरकरार रखता है। केवल बैद्यनाथ वीटा एक्स गोल्ड ही एकमात्र ऐसा आयुर्वेदिक फार्मुला है जो शुध्द सोने से निर्मित स्वर्ण भस्म की असीम शक्ति से परिपूर्ण है, जिसे आधुनिक चिकित्सा शैली भी मान्यता दे रही है।

आज ही वीटा एक्स गोल्ड आजमाएँ और तन-मन में महसूस करें नवयौवन की नवशक्ति का अपूर्व अहसास.

बैद्यनाथ

वीटा-एक्स गोल्ड

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

बैद्यनाथ
सुरक्ता
करे खून की सफाई : दे मुहाँसों से रिहाई

कील मुहाँसों को
जड़ से मिटाये...

...और चेहरे पे लाए एक
भीतरी चमक

कील मुहाँसें व फोड़े फुन्सियाँ वास्तव में रक्त विकारों के ही परिणाम हैं। क्रीम व लोशन इन्हें केवल कुछ समय तक दबा सकते हैं, परन्तु त्वचा को नुकसान भी पहुँचाते हैं। इनका स्थायी उपचार है बैद्यनाथ सुरक्ता, परखी एव प्रमाणित आयुर्वेदिक औषधियों का एक ऐसा बेजोड़ अनुभूत मिश्रण, जो रक्त को साफ कर त्वचा संबंधी शिकायतों से छुटकारा दिलाए और आपकी त्वचा को भीतर से निखारे।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

आश्विनशुक्लपक्ष :– श्री संवत् २०५९, शाके १९२४, ईसवी सन् २००२

सौम्य-याम्यगोलः, दक्षिणायणं, शरदर्तुः।

(७ अक्टूबर से २१ अक्टूबर तक)

वा.	तिथि			नक्षत्र			योग			करण			योगाः	चन्द्रचार			दिनमान		सूर्योदय		सूर्यास्त		दिनांक				वा.	
नाम	मिति	बजके	मिनटतक	नाम	बजके	मिनटतक	नाम	बजके	मिनटतक	नाम	घटी	पल	आनंदादि	राशि	बजके	मिनटतक	घटी	पल	बजकर	मिनटपर	बजकर	मिनटपर	मु.	बंगला	सांपातिक	अंग्रेजी	वार	
सो.	१	१५	१२	चि.	२३	४७	ऐ.	८/५	२२/१६	बव.	२२	३०	मुग्दर	तु.	१२	२१	२९	१०	६	१०	१७	५०	२६	२०	१५	७	सो.	मातामह श्राद्ध, शारदीय नवरात्रारम्भ, अखण्ड दीप व कलश स्थापना, चन्द्रदर्शन, A
मं.	२	१२	४८	स्वा.	२२	१०	वि.	२	१६	कौ.	१६	३२	केतु	तु.	पू	र्ण	२९	६	६	११	१७	४९	१	२१	१६	८	मं.	सावान ८। A तुला का चन्द्र दिवा १२/२१ बजे, मु. ३०।
बु.	३	१०	३२	वि.	२०	४३	प्री.	२३	२०	गर	१०	५२	धाता	वृ.	१४	५०	२९	३	६	११	१७	४९	२	२२	१७	९	बु.	वैनायकी चतुर्थी, भद्रा रात्रौ ९/२८ से, वृश्चिक का चन्द्र दिवा २/५० बजे।
गु.	४	५	३०	अनु.	१९	६	आ.	२०	३७	व.	५	४२	आनन्द	वृ.	पू	र्ण	२८	५९	६	१२	१७	४८	३	२३	१८	१०	गु.	ललिता पंचमी, भद्रा दि.८/२७ तक। B करना चाहिए, बाद में सरस्वती विर्सजन तक C
शु.	५	६/५	४२/१२	ज्ये.	१८	३७	सौ.	१८	१०	बा.	१	८	चर	ध.	१८	१८	२८	५५	६	१३	१७	४७	४	२४	१९	११	शु.	धनु का चन्द्र सायं ६/१८ बजे। C लेखन, अध्ययन, अध्यापन न करें, वर्ज्य है।
श.	७	४	९	मू.	१८	२	शो.	१५	५८	गर	२६	७	गद	ध.	पू	र्ण	२८	५२	६	१४	१७	४६	५	२५	२०	१२	श.	भद्रा दि.४/८ से, मूल में सरस्वती आवाहन, सरस्वती का पुस्तक में आवाहन करके पूजन B
र.	८	३	३२	पू.	१७	५४	अति.	१४	१०	व.	२४	०	शुभ	म.	२३	४१	२८	४८	६	१४	१७	४६	६	२६	२१	१३	र.	दुर्गाष्टमी, महाष्टमी, भद्रा दिवा ३/५० तक, मकर का चन्द्र रात्रौ ११/४१ बजे।
सो.	९	३	५०	उ.	१८	१५	सु.	१२	४२	बा.	२३	३७	मृत्यु	म.	पू	र्ण	२८	४४	६	१५	१७	४५	७	२७	२२	१४	सो.	नवरात्र पारणा, दुर्गानवमी, दुर्गा को बलिदान, मन्वादि ९, बौद्धावतार, सरस्वती विर्सजन।
मं.	१०	३	५२	श्र.	१९	५	धृ.	११	४०	तै.	२३	५८	लुम्ब	म.	पू	र्ण	२८	४१	६	१६	१७	४४	८	२८	२३	१५	मं.	विजया दशमी, अपराजिता पूजा, विजय यात्रा, नीलकण्ठ पक्षी का दर्शन, ध्वजारोपण, शस्त्र पूजा।
बु.	११	४	४७	ध.	२०	२७	शू.	१०	५९	व.	२५	८	मित्र	कुं.	७	२८	२८	३७	६	१६	१७	४४	९	२९	२४	१६	बु.	पापांकुशा एकादशी व्रत सबका, भरत मिलाप, पंचक प्रारम्भ दि.७/२८ बजे से, कुम्भ का D
गु.	१२	६	१२	श.	२२	१६	गं.	१०	४२	बव.	२७	५८	वज्र	कुं.	पू	र्ण	२८	३४	६	१७	१७	४३	१०	३०	२५	१७	गु.	मु.३० फल समता, पंचक। D चन्द्र दि.७/२८ बजे, भद्रा दि.४/१९ से रा.४/४६ तक।
शु.	१३	पू	र्ण	पूभा.	२४	२८	वृ.	१०	४७	कौ.	३१	५४	ध्वांक्ष	मी.	१७	३६	२८	३०	६	१८	१७	४२	११	१	२६	१८	शु.	प्रदोष व्रत, मीन का चन्द्र सा.५/३६ बजे, पंचक। F मासभर तुलसी से विष्णु पूजन।
श.	१३	७	५८	उभा.	२	५७	ध्रु.	११	८	तै.	४	५	धूम्र	मी.	पू	र्ण	२८	२६	६	१९	१७	४१	१२	२	२७	१९	श.	धूम्रयोग, पंचक। E शरद् पूर्णिमा, व्रत की १५, भद्रा दि.९/५६ से रा.१०/५९ तक।
र.	१४	९	५८	रे.	५	३२	व्या.	११	३८	व.	९	६	प्रवर्ध	मे.	५	१४	२८	२३	६	१९	१७	४१	१३	३	२८	२०	र.	मेष का चन्द्र दि.५/१४ बजे, पंचक समाप्ति रा.शे. ५/१४ बजे, कोजागिरी पूर्णिमा, E
सो.	१५	१२	५	अ.	पू	र्ण	ह.	१२	१४	बव.	१४	२२	रक्ष	मे.	पू	र्ण	२८	१९	६	२०	१७	४०	१४	४	२९	२१	सो.	वाल्मिकी जयन्ती, आकाश दीपदान, कार्तिक स्नान के व्रत नियम का आरम्भ, आज से कार्तिक F

२५ पंक्ति ७ अक्टूबर, सोमवार के स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
[illegible]	५	५	३	६	२	१	७
[illegible]	०	४	२०	१४	५	१७	१७
[illegible]	२६	३५	१८	५८	५४	२९	२९
[illegible]	१४	११	३८	२८	१२	१०	१०
५९	३७	४८	९	१२	०	३	३
२०	५४	१	१७	६व	४५व	११व.	११व.

पाक्षिक फल– सत्तापर बैठे लोगों को मुसीबत का सामना पड़ सकता है। खाद्य पदार्थों के दाम सामान्य सस्ते होंगे। सीमा पर तनाव जैसी स्थिति उत्पन्न होगी। साम्प्रदायिक उपद्रव होने की सम्भावना है। रंगीन वस्त्र मंहगे होंगे। चना, ज्वार, चावल के दामों में सामान्य तेजी आयेगी। साग-सब्जी सस्ती होगी।

२६ पंक्ति १३ अक्टूबर, रविवार के स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	५	५	३	६	२	१	७
२५	४	१०	२१	१३	५	१७	१७
४९	१३	१८	१३	११	४९	१०	१०
५७	३८	५०	१०	४५	४२	६	६
५९	३७	७०	८	२३	०	३	३
३३	५४	३६	२४	३९व	४५व	११व.	११व.

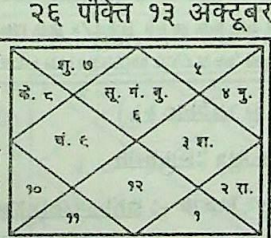

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

कार्तिककृष्णपक्ष :– श्री संवत् २०५९, शाके १९२४, ईसवी सन् २००२

यामयगोल:, दक्षिणायणं, शरदर्तु:।

(२२ अक्टूबर से ४ नवम्बर तक)

वा. नाम	तिथि मिति	तिथि बजके	तिथि मिनटतक	नक्षत्र नाम	नक्षत्र बजके	नक्षत्र मिनटतक	योग नाम	योग बजके	योग मिनटतक	करण नाम	करण घटी	करण पल	योगाः आनंदादि	चन्द्रचार राशि	चन्द्रचार बजके	चन्द्रचार मिनटतक	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय बजकर	सूर्योदय मिनटपर	सूर्यास्त बजकर	सूर्यास्त मिनटपर	दिनांक मु.	दिनांक बंगला	दिनांक सांपातिक	दिनांक अंग्रेजी	वा. वार	
मं.	१	१४	६	अ.	८	८	वज्र	१२	४५	कौ.	१९	३०	अमृत	मे.	पू	र्ण	२८	१६	६	२१	१७	३९	१५	५	३०	२२	मं.	अशून्य शयन व्रत, चन्द्रोदय रा.६/१२ बजे, लक्ष्मी सहित विष्णु पूजन करने से धन-दाम्पत्य A
बु.	२	१५	५९	भ.	१०	३०	सि.	१२	५	गर	२३	५९	काण	वृ.	१६	४२	२८	१२	६	२१	१७	३९	१६	६	१	२३	बु.	भद्रा रात्रौ ४/४२ से, वृष का चन्द्र सायं ४/४२ बजे। A की प्राप्ति होती है।
गु.	३	१७	२५	कृ.	१२	३५	व्य.	१३	१०	भ.	२७	३७	लुम्ब	वृ.	पू	र्ण	२८	९	६	२२	१७	३८	१७	७	२	२४	गु.	करक (करवा चौथ) संकष्ट चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रौ ७/२५ बजे।
शु.	४	१८	२६	रो.	१४	१२	व.	१२	५५	बा.	३०	५	मित्र	मि.	२	२८	२८	५	६	२३	१७	३७	१८	८	३	२५	शु.	मिथुन का चन्द्र रात्रौ २/२८ बजे।
श.	५	१८	५७	मृ.	१५	२२	प.	१२	१७	कौ.	०	४२	वज्र	मि.	पू	र्ण	२८	२	६	२३	१७	३७	१९	९	४	२६	श.	D लीलाकाली जन्म, सुखरात्रि, शेष रात्रि में दरिद्र नि:सारण सायं दीपमालिका, अभ्यंग स्नान, E
र.	६	१८	५४	आ.	१६	०	शि.	११	१६	गर	१	१८	ध्वांक्ष	मि.	पू	र्ण	२७	५९	६	२४	१७	३६	२०	१०	५	२७	र.	भद्रा सायं ६/५२ बजे से। E सोमवती अमावास्या।
चं.	७	१८	२४	पुन.	१६	१२	सि.	९	५०	भ.	०	३५	धूम्र	क.	९	४९	२७	५५	६	२५	१७	३५	२१	११	६	२८	सो.	भद्रा प्रातः ६/३७ बजे तक, अहोई अष्टमी व्रत, कर्क का चन्द्र दिवा ९/४९ बजे।
मं.	८	१७	२२	पु.	१५	५२	सा.	७/५	५९/५०	कौ.	२७	२२	प्रवर्ध	क.	पू	र्ण	२७	५२	६	२५	१७	३५	२२	१२	७	२९	मं.	श्रीकृष्ण वल्लभाचार्य जयन्ती, मथुरा के राधाकुण्ड में बहन का भाई के साथ प्रातः B
बु.	९	१५	५८	श्ले.	१५	१०	शु.	३	२४	गर	२३	५२	रक्ष	सिं.	१४	५०	२७	४९	६	२६	१७	३४	२३	१३	८	३०	बु.	सिंह का चन्द्र दि.२/५० बजे, भद्रा रा.३/६ से। B स्नान का पर्व, श्री राधा जयन्ती।
गु.	१०	१४	१५	म.	१४	८	ब्र.	२४	४२	भ.	१९	२८	मुसल	सिं.	पू	र्ण	२७	४५	६	२७	१७	३३	२४	१४	९	३१	गु.	भद्रा दि.२/१४ तक। C मासशिवरात्रि, तुला का चन्द्र रा.८/२८ बजे, मंगल स्नान।
शु.	११	१२	१४	पू.	१२	४८	ऐ.	२१	४५	बा.	१४	२३	सिद्धि	कं.	१८	६	२७	४२	६	२७	१७	३३	२५	१५	१०	१	शु.	नवम्बर ११, रम्भा एकादशी व्रत सबका, गोवत्स द्वादशी, कन्या का चन्द्र सा.६/६ बजे।
श.	१२	९	५८	उ.	११	१६	वै.	१८	४२	तै.	८	४७	उत्पात	कं.	पू	र्ण	२७	३९	६	२७	१७	३३	२६	१६	११	२	श.	धन त्रयोदशी, धनतेरस, शनि प्रदोष व्रत, कामेश्वरी जयन्ती।
र.	१३	७/५	३९/१६	ह.	९	३८	वि.	१५	३७	व.	२	५२	मानस	तु.	२०	२८	२७	३६	६	२८	१७	३२	२७	१७	१२	३	र.	भद्रा दि.७/३५ से सा.६/२५ तक, नरक चतुर्दशी, प्रातः हनुमान दर्शन, सायं यम को दीपदान, C
चं.	३०	२	५२	चि.	७/६	५७/१६	प्री.	१२	२८	च.	२३	५४	मुग्दर	तु.	पू	र्ण	२७	३२	६	२९	१७	३१	२८	१८	१३	४	सो.	दीपावली, स्नान-दान-श्राद्ध की अमावास्या, द्यूत क्रीड़ा, सायं लक्ष्मी-कुबेर पूजा, अर्धरात्रि में D

२७ पंक्ति २२ अक्टूबर, मंगलवार के स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	[illegible]	५	३	६	२	१	७
४	[illegible]	२२	२२	८	५	१६	१६
४७	५४	१९	२८	२५	४२	४१	४१
१९	४४	७	३९	४९	४९	२९	२९
५९	३७	६०	८	३९	०	३	३
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

पाक्षिक फल– चावल के दाम कम होंगे। तिलहन, दलहन के दामों में तेजी आयेगी। फल, मेवा महंगा होगा। शिक्षा क्षेत्र से जुड़े लोगों को समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। अधिकारियों का रूख कड़ा होगा। पश्चिम देशों में उपद्रव होने की सम्भावना है। रोग बढ़ने से जनता परेशान रहेगी।

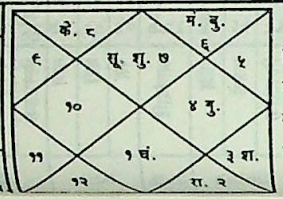

२८ पंक्ति २९ अक्टूबर, मंगलवार के स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	५	६	३	६	२	१	७
११	१४	३	२३	३	५	१६	१६
४७	२०	१६	२१	५५	३२	१९	१९
१८	२	११	५१	२५	४०	१४	१४
६०	३७	६८	७	३३	२	३	३
७	५४	३०	३०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

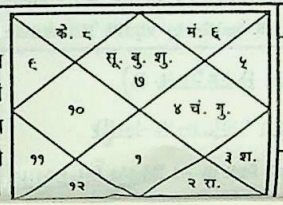

कार्तिकशुक्लपक्ष :- श्री संवत् २०५९, शाके १९२४, ईसवी सन् २००२

यामयगोल:, दक्षिणायणं, शरद्-हेमन्तर्तुः।

(५ नवम्बर से १९ नवम्बर तक)

वा.	तिथि			नक्षत्र			योग			करण			योगाः	चन्द्रचार			दिनमान		सूर्योदय		सूर्यास्त		दिनांक				वा.	
नाम	मिति	बजकर	मिनटतक	नाम	बजकर	मिनटतक	नाम	बजकर	मिनटतक	नाम	घटी	पल	आनंदादि	राशि	बजकर	मिनटतक	घटी	पल	बजकर	मिनटपर	बजकर	मिनटपर	मु.	बंगला	सांपातिक	अंग्रेजी	वार	
मं.	१	२४	४०	वि.	४	४६	आ.	६/६	२२/२२	किं.	१८	६	श्रीवत्स	वृ.	२२	५२	२७	२९	६	३०	१७	३०	२९	१९	१४	५	मं.	गोवर्धन पूजा,अन्नकूट,द्यूत क्रीड़ा,मार्गपाली बन्धन,वृश्चिक का चं.रा.१०/५२ बजे।
बु.	२	२२	३७	अनु.	३	३४	शो.	३	३५	बा.	१२	४८	सौम्य	वृ.	पू	र्ण	२७	२६	६	३१	१७	२९	३०	२०	१५	६	बु.	चन्द्रदर्शन,भाईदूज,यम द्वितीया,चित्रगुप्तादि यम दूतों सह यमराज पूजन,अभ्यंग स्नान।
गु.	३	२०	५०	ज्ये.	२	३४	अति	२४	०	तै.	८	२	कालदंड	ध.	२	१०	२७	२३	६	३१	१७	२९	१	२१	१६	७	गु.	रमजान मास प्रारम्भ, धनु का चन्द्र रात्रौ २/१० बजे।
शु.	४	१९	२६	मू.	१	५४	सु.	२२	४३	व.	३	५९	स्थिर	ध.	पू	र्ण	२७	२०	६	३२	१७	२८	२	२२	१७	८	शु.	वैनायकी चतुर्थी, भद्रा दिवा ८/७ से रात्रौ ७/२४ तक।
श.	५	१८	२५	पू.	१	३८	धृ.	२०	४६	बव.	०	५५	मातङ्ग	ध.	पू	र्ण	२७	१७	६	३३	१७	२७	३	२३	१८	९	श.	सूर्यषष्ठी व्रतारम्भ। A बजे तक,वृष का चं.रा.११/५२ बजे,समुद्र स्नान,मत्स्यावतार।
र.	६	१८	५२	उ.	१	५२	शू.	१९	६	तै.	२८	१३	अमृत	म.	७	१९	२७	१४	६	३३	१७	२७	४	२४	१९	१०	र.	सूर्यषष्ठी व्रत,स्कन्द षष्ठी,डालाछठ,सायं सूर्य को अर्घ्य दें,मकर का चं.दि.७/१९ बजे।
चं.	७	१७	४८	श्र.	२	३५	ग.	१७	५७	व.	२८	३	सिद्धि	म.	पू	र्ण	२७	११	६	३४	१७	२६	५	२५	२०	११	सो.	सूर्यषष्ठी व्रत का पारणा, भद्रा सायं ५/४८ से रा.शे. ६/० तक।
मं.	८	१८	१६	ध.	३	५०	वृ.	१७	८	बव.	२६	१५	उत्पात	कुं.	१४	५२	२७	८	६	३४	१७	२६	६	२६	२१	१२	मं.	गोपाष्टमी, गोक्रीड़ा, पंचक प्रारम्भ दिवा २/५२ बजे, कुम्भ का चन्द्र दि.२/५२ बजे।
बु.	९	१९	१४	श.	५	३०	ध्रु.	१९	४४	वा.	०	२७	मानस	कुं.	पू	र्ण	२७	५	६	३५	१७	२५	७	२७	२२	१३	बु.	अक्षय नवमी, आवंला वृक्ष के नीचे भोजन करें, पंचक।
गु.	१०	२०	४०	पूभा.	पू	र्ण	व्या.	१९	४०	तै.	३	२५	मुग्दर	मी.	२४	४६	२७	२	६	३५	१७	२५	८	२८	२३	१४	गु.	बाल दिवस, नेहरू जयन्ती, मीन का चन्द्र रात्रौ १२/४६ बजे, पंचक।
शु.	११	२२	३०	पूभा.	७	३७	ह.	१९	५५	व.	७	२७	ध्वांक्ष	मी.	पू	र्ण	२७	०	६	३६	१७	२४	९	२९	२४	१५	शु.	प्रबोधिनी एकादशी व्रत सबका,भीष्म पंचकारम्भ, भद्रा दि.९/३४ से रा.१०/२८ तक, पंचक।
श.	१२	२४	३२	उभा.	१०	२	वज्र.	१७	२२	बव.	१२	१५	धूम्र	मी.	पू	र्ण	२६	५७	६	३७	१७	२३	१०	३०	२५	१६	श.	तुलसी विवाह, चातुर्मास्य व्रत समाप्ति, मन्वादि १२, मु. ३० फलसमता, पंचक।
र.	१३	२	४२	रे.	१२	३७	सि.	१७	५५	कौ.	१७	१९	प्रवर्ध	मे.	१२	१८	२६	५४	६	३७	१७	२३	११	१	२६	१७	र.	प्रदोष व्रत, पंचक समाप्ति दिवा १२/१८ बजे, मेष का चन्द्र दिवा १२/१८ बजे।
चं.	१४	४	४५	अ.	१५	१२	व्य.	१८	२६	गर	२२	४४	रक्ष	मे.	पू	र्ण	२६	५२	६	३७	१७	२३	१२	२	२७	१८	सो.	वैकुण्ठ चतुर्दशी, भद्रा रात्रौ ४/४३ बजे।
मं.	१५	६	३४	भ.	१७	४०	व.	१८	५०	भ.	२७	३५	मुसल	वृ.	२३	५२	२६	४६	६	३८	१७	२२	१३	३	२८	१९	मं.	कार्तिक पूर्णिमा,गुरुनानक जयन्ती,स्नान-दान व्रत की पूर्णिमा,मन्वादि १५,भद्रा सा.५/३८ A

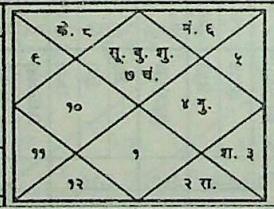

२९ पंक्ति ५ नवम्बर, मंगलवार के स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	५	६	३	६	२	१	७
१८	१८	१५	२४	०	५	१५	१५
४८	४५	२	४	३६	१२	५६	५६
४३	२०	२२	१८	१४	५८	५९	५९
६०	३७	१०१	५	२०	२	३	३
२१	५४	३७	१८	४४व	४९व	११व.	११व.

पाक्षिक फल– खाद्यान्न के दामों में कमी आयेगी। साग-सब्जी पहले की अपेक्षा सस्ती होगी। सूती वस्त्र के दाम बढ़ेंगे। सुपारी, कोयला, लकड़ी के दाम कुछ तेज होंगे। उग्रवादी लोग अपने मकसद में सफल नहीं होंगे। सर्राफा बाजार में सामान्य स्थिति रहेगी। मीठे पदार्थ के दाम बढ़ेंगे। लूट, हत्या होती रहेगी।

३० पंक्ति १२ नवम्बर, मंगलवार के स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	५	६	३	५	२	१	७
२५	२३	२७	२४	२८	४	१५	१५
५१	१०	११	३७	५७	४९	३४	३४
५१	३८	४८	२१	२३	२५	४३	४३
६०	३७	१०४	४	५	३	३	३
३४	५४	२९	२२	५७व	५७व	११व.	११व.

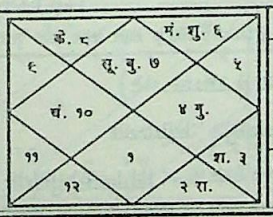

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

मार्गशीर्षकृष्णपक्ष :– श्री संवत् २०५९, शाके १९२४, ईसवी सन् २००२

याम्यगोल:, दक्षिणायणं, हेमन्तर्तुः।

(२० नवम्बर से ४ दिसम्बर तक)

वा.	तिथि			नक्षत्र			योग			करण			योगाः	चन्द्रचार			दिनमान		सूर्योदय		सूर्यास्त		दिनांक				वा.	
नाम	मिति	बजके	मिनटतक	नाम	बजके	मिनटतक	नाम	बजके	मिनटतक	नाम	घटी	पल	आनंदादि	राशि	बजके	मिनटतक	घटी	पल	बजकर	मिनटपर	बजकर	मिनटपर	मु.	बंगला	सांपातिक	अंग्रेजी	वार	
बु.	१	पू	र्ण	कृ.	१६	५०	प.	१८	५८	वा.	३१	२८	सिद्धि	वृ.	पू	र्ण	२६	४६	६	३६	१७	२१	१४	४	२९	२०	बु.	धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, ये चार पुरुषार्थ हैं।
गु.	१	७	५५	रो.	२१	३२	शि.	१८	४६	कौ.	३	७	उत्पात	वृ.	पू	र्ण	२६	४४	६	३६	१७	२१	१५	५	३०	२१	गु.	उत्पात योग।
शु.	२	९	५	मृ.	२२	५२	सि.	१८	१६	गर	५	५८	मानस	मि.	६	५४	२६	४२	६	४०	१७	२०	१६	६	१	२२	शु.	भद्रा रात्रौ ६/१८ से, मिथुन का चन्द्र दिवा ६/५४ बजे।
श.	३	९	३५	आ.	२३	३७	सा.	१७	२०	भ.	७	१४	मुग्दर	मि.	पू	र्ण	२६	३९	६	४०	१७	२०	१७	७	२	२३	श.	भद्रा दिवा ६/३४ तक, संकष्ट चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रौ ७/४६ बजे।
र.	४	९	३५	पुन.	२३	५४	शुभ	१६	३	बा.	७	१०	केतु	क.	१७	२९	२६	३७	६	४१	१७	१९	१८	८	३	२४	र.	कर्क का चन्द्र सायं ५/२६ बजे।
सो.	५	९	२	पु.	२३	४२	शु.	१४	२०	तै.	५	५२	धाता	क.	पू	र्ण	२६	३५	६	४१	१७	१९	१९	९	४	२५	सो.	सर्वार्थसिद्धि योग।
मं.	६	८ / ४	२ / ३८	श्ले.	२३	२	ब्र.	१२	१५	व.	३०	२२	आनन्द	सिं.	२२	४५	२६	३३	६	४१	१७	१९	२०	१०	५	२६	मं.	सिंह का चन्द्र रात्रौ १०/४५ बजे, भद्रा दिवा ८/१ से रात्रौ ७/१८ तक।
बु.	८	४	५५	म.	२२	७	ऐ.	९	५२	बा.	२७	४०	चर	सिं.	पू	र्ण	२६	३१	६	४२	१७	१८	२१	११	६	२७	बु.	काल भैरवाष्टमी, काल भैरव का जन्म करके ८ बड़ों का भोग लगाकर ब्राह्मणों के साथ A
गु.	९	२	५४	पू.	२०	५०	वै.	७ / ४	१२ / २०	तै.	२२	५८	मद	कं.	२	११	२६	२९	६	४२	१७	१८	२२	१२	७	२८	गु.	कन्या का चन्द्र रात्रौ २/११ बजे। A भैरव जयन्ती का पारणा करें।
शु.	१०	२४	४२	उ.	१९	२२	प्री.	१	१८	व.	१७	४२	शुभ	कं.	पू	र्ण	२६	२७	६	४३	१७	१७	२३	१३	८	२९	शु.	भद्रा दिवा १/४६ से रात्रौ १२/३३ तक।
श.	११	२२	२२	ह.	१७	४५	आ.	२२	१०	बव.	११	५९	मृत्यु	तु.	४	३७	२६	२५	६	४३	१७	१७	२४	१४	९	३०	श.	उत्पन्ना एकादशी व्रत सबका, तुला का चन्द्र रात्रौ ४/३७ बजे।
र.	१२	१९	५८	चि.	१६	२	सौ.	१८	५८	कौ.	६	५	पद्म	तु.	पू	र्ण	२६	२३	६	४३	१७	१७	२५	१५	१०	१	र.	दिसम्बर १२।
सो.	१३	१७	४०	स्वा.	१४	२५	शो.	१५	५४	गर	०	१२	छत्र	तु.	पू	र्ण	२६	२१	६	४४	१७	१६	२६	१६	११	२	सो.	सोम प्रदोष व्रत, पुत्रार्थि सोम प्रदोष विधान से करें, मासशिवरात्रि, भद्रा सा. ५/३७ से B
मं.	१४	१५	२७	वि.	१२	५२	अति.	१२	५०	श.	२१	४५	श्रीवत्स	वृ.	६	५८	२६	२०	६	४४	१७	१६	२७	१७	१२	३	मं.	वृश्चिक का चन्द्र दिवा ६/५८ बजे। B रात्रौ ४/३८ तक।
बु.	३०	१३	२५	अनु.	११	३०	सु.	९	५७	नाग	१६	४२	सौम्य	वृ.	पू	र्ण	२६	१८	६	४४	१७	१६	२८	१८	१३	४	बु.	स्नान-दान-श्राद्ध की अमावास्या।

१ पंक्ति २० नवम्बर, बुधवार के स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	५	७	३	५	२	१	७
३	२८	११	२५	२९	४	१५	१५
५७	१३	३	७	३६	१८	९	९
१५	५०	४९	९	१०	३७	१७	१७
६०	३७	१०३	२	१५	३	३	३
४९	५४	४२	१०	५३	५१व	११व.	११व.

पाक्षिक फल– हवा के साथ कहीं-कहीं सामान्य हल्की वर्षा होने की सम्भावना है। कहीं भूकम्प के झटके महसूस हो सकते हैं। शासको में मतभेद उत्पन्न होगा। साम्प्रदायिक झगड़े होने की सम्भावना दिखती है। खाद्य पदार्थों के दाम सामान्य रहेंगे। सर्राफा बाजार में सामान्य तेजी आयेगी।

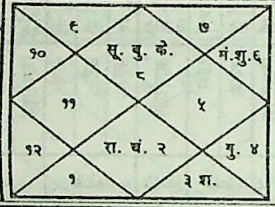

३२ पंक्ति २७ नवम्बर, बुधवार के स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	६	७	३	६	३	१	७
११	२	२२	२५	२	२	१४	१४
३	३९	५१	२०	४	४८	४७	४७
२८	८	२५	२४	५९	३४	२	२
६१	३७	९९	१	२८	४	३	३
०	५४	२६	१७	३८	५३व	११व.	११व.

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

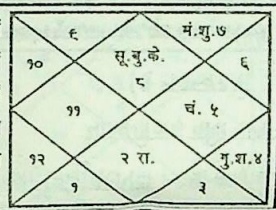

मार्गशीर्षशुक्लपक्ष :– श्री संवत् २०५९, शाके १९२४, ईसवी सन् २००२

यास्यगोल:, दक्षिणायणं, हेमन्तर्तु:।

(५ दिसम्बर से १९ दिसम्बर तक)

वा.	तिथि मिति	तिथि बजके	तिथि मिनटतक	नक्षत्र नाम	नक्षत्र बजके	नक्षत्र मिनटतक	योग नाम	योग बजके	योग मिनटतक	करण नाम	करण घटी	करण पल	योगाः आनंदादि	चन्द्रचार राशि	चन्द्रचार बजके	चन्द्रचार मिनटतक	दिनमान घटी	दिनमान पल	सूर्योदय बजकर	सूर्योदय मिनटपर	सूर्यास्त बजकर	सूर्यास्त मिनटपर	दिनांक मु.	दिनांक बंगला	दिनांक सायनिक	दिनांक अंग्रेजी	वा. वार	
गु.	१	११	४४	ज्ये.	१०	२५	पू.	७/४	१६/५३	बव.	१२	२४	कालदंड	ध.	१०	११	२६	१६	६	४५	१७	१५	२९	१९	१४	५	गु.	चन्द्रदर्शन मु.३० फलसमता, धनु का चं.दि.१०/११ बजे, इस पक्ष के प्रथम रविवार से A
शु.	२	१०	२०	मू.	९	४०	ग.	२	४७	कौ.	८	५७	स्थिर	ध.	पू	र्ण	२६	१५	६	४५	१७	१५	१	२०	१५	६	शु.	सव्वाल मास प्रारम्भ, ईद, ईदुलफितर। A वर्षभर प्रति रविवार को काम्य रवि व्रत होता है।
श.	३	९	२२	पू.	९	१८	वृ.	१	२	गर	६	३०	मातङ्ग	म.	१५	६	२६	१४	६	४५	१७	१५	२	२१	१६	७	श.	वैनायकी चतुर्थी व्रत, भद्रा रात्रौ ७/५ से, मकर का चन्द्र दिवा ३/६ बजे।
र.	४	८	५२	उ.	९	२५	ध्रु.	२२	४०	म.	५	१५	अमृत	म.	पू	र्ण	२६	१२	६	४५	१७	१५	३	२२	१७	८	र.	भद्रा दिवा ८/५० तक।
सो.	५	८	५३	श्र.	९	५९	व्या.	२२	४२	वा.	५	१६	सिद्धि	कुं.	२२	२१	२६	११	६	४५	१७	१५	४	२३	१८	९	सो.	पंचक प्रारम्भ रा.१०/२१ बजे, कुम्भ का चन्द्र रात्रौ १०/२१ बजे, श्रीराम विवाह, B
मं.	६	९	२५	ध.	११	७	ह.	२२	१२	तै.	६	२५	उत्पात	कुं.	पू	र्ण	२६	१०	६	४६	१७	१४	५	२४	१९	१०	मं.	चम्पाषष्ठी, पं. जनार्दन शास्त्री खुण्टे जी महाराज का प्रार्दुभाव दिवस, मल्लारी मार्तण्ड C
बु.	७	१०	२७	श.	१२	४२	व्रज	२१	५७	व.	९	१०	मानस	कुं.	पू	र्ण	२६	९	६	४६	१७	१४	६	२५	२०	११	बु.	भद्रा दि.१०/२४ से रा.११/११ तक, पंचक। B कर्कोटक नागपंचमी, स्कन्द षष्ठी।
गु.	८	११	५७	पूभा.	१४	५२	शि.	२१	४२	बव.	१२	५४	मुग्दर	मी.	८	१	२६	८	६	४६	१७	१४	७	२६	२१	१२	गु.	मीन का चन्द्र दिवा ८/१ बजे, पंचक। C नवरात्र पारणा, पंचक।
शु.	९	१३	४८	उभा.	१७	३	ब्र.	२२	२८	कौ.	१७	३०	केतु	मी.	पू	र्ण	२६	७	६	४७	१७	१३	८	२७	२२	१३	शु.	नन्दा नवमी, कल्पादि ९, पंचक।
श.	१०	१५	५४	रे.	१९	३७	व.	२२	५९	गर	२२	४५	धाता	मे.	१९	२६	२६	६	६	४७	१७	१३	९	२८	२३	१४	श.	भद्रा रा.४/५७ से, पंचक समाप्ति रा.७/३५ बजे, मेष का चन्द्र रा.७/३५ बजे।
र.	११	१८	४	अ.	२२	१२	प.	२३	३२	भ.	२८	११	आनन्द	मे.	पू	र्ण	२६	६	६	४७	१७	१३	१०	२९	२४	१५	र.	मोक्षदा एकादशी व्रत सबका, भद्रा सायं ६/२ तक, गीता जयन्ती।
सो.	१२	२०	९	भ.	२४	४२	शि.	२३	५८	बव.	०	४८	चर	मे.	पू	र्ण	२६	५	६	४७	१७	१३	११	३०	२५	१६	सो.	खरमास प्रारम्भ।
मं.	१३	२१	५८	कृ.	२	५७	सि.	२४	१०	कौ.	५	४०	मद	वृ.	७	९	२६	५	६	४७	१७	१३	१२	१	२६	१७	मं.	भौम प्रदोष व्रत, ऋणमोचनार्थ भौम प्रदोष विधान से करें, वृष का चं.दि.७/९ बजे।
बु.	१४	२३	२६	रो.	४	४८	सा.	२४	८	गर.	९	४२	शुभ	वृ.	पू	र्ण	२६	४	६	४७	१७	१३	१३	२	२७	१८	बु.	काशी में पिशाचमोचन यात्रा, भद्रा रात्रौ ११/२३ से।
गु.	१५	२४	२४	मृ.	६	१२	शुभ	२३	४२	भ.	१२	४८	मृत्यु	मि.	१७	२३	२६	४	६	४७	१७	१३	१४	३	२८	१९	गु.	दत्त जयन्ती, स्नान-दान-व्रत की पूर्णिमा, भद्रा दिवा ११/५३ तक।

३३ पंक्ति ५ दिसम्बर, गुरुवार के स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	६	८	३	६	२	१	७
[illegible]	७	५	२५	६	३	१४	१४
[illegible]	४२	३३	२४	३५	९	२१	२१
[illegible]	२०	२४	२३	२५	३०	३६	३६
६१	३०	८९	०	३९	४	३	३
८	५४	३१	२९व	१२	५३व	११व.	११व.

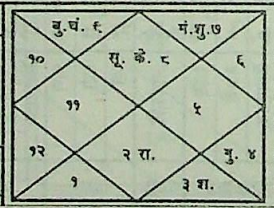

पाक्षिक फल– रूई, कपास, मेवा इन चीजों के दामों में तेजी आयेगी। साग-सब्जी के दाम कम होंगे। साम्प्रदायिक उपद्रव होने से तनाव जैसी स्थिति उत्पन्न होगी। सरकार कड़ी व्यवस्था करेगी। शिक्षा क्षेत्र से जुड़े लोगो को समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। अधिकारियो का स्थानान्तरण होगा।

३४ पंक्ति १२ दिसम्बर, गुरुवार के स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	६	८	३	६	२	१	७
२६	१२	१५	२५	११	२	१३	१३
२०	७	२०	१६	३५	३३	५९	५९
२१	३८	२	५९	२९	५९	२१	२१
६१	३७	७६	२	४७	५	३	३
१६	५४	४०	१६व	५	५५व	११व.	११व.

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

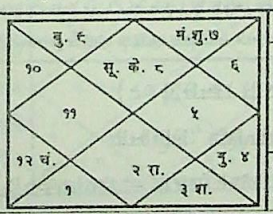

पौषकृष्णपक्ष :– श्री संवत् २०५९, शाके १९२४, ईसवी सन् २००२-३

यम्यगोलः, दक्षिणायणं, हेमन्तर्तुः ।

(२० दिसम्बर से २ जनवरी तक)

वा.	तिथि			नक्षत्र			योग			करण			योगाः	चन्द्रचार			दिनमान		सूर्योदय		सूर्यास्त		दिनांक				वा.	
नाम	मिति	बजके	मिनटतक	नाम	बजके	मिनटतक	नाम	बजके	मिनटतक	नाम	घटी	पल	आनंदादि	राशि	बजके	मिनटतक	घटी	पल	बजकर	मिनटपर	बजकर	मिनटपर	मु.	बंगला	सांपातिक	अंग्रेजी	वार	
शु.	१	२४	५४	आ.	पू	र्ण	शु.	२२	५४	वा.	१४	३८	पद्म	मि.	पू	र्ण	२६	४	६	४७	१७	१३	१५	४	२९	२०	शु.	इस मास में सूर्योदय के समय सूर्याराधन करके गरम खिचड़ी, मक्खन, तिल, गुड़ खाने से A
श.	२	२४	५०	आ.	७	७	ब्र.	२१	४०	तै.	१५	१०	सुन्दर	क.	१	१८	२६	३	६	४७	१७	१३	१६	५	३०	२१	श.	कर्क का चन्द्र रा. १/१८ बजे । A गरीबों को कम्बल, तिल देने से तथा सन्यासियों B
र.	३	२४	१८	पुन.	७	२४	ऐ.	२०	५	व.	१४	२६	केतु	क.	पू	र्ण	२६	३	६	४७	१७	१३	१७	६	१	२२	र.	भद्रा दि. १२/३२ से रा. १२/१५ तक । B को भोजन कराने से रोग शमन भी होता है ।
चं.	४	२३	१७	पु.	७	२४	वै.	१८	६	बव.	१२	२७	धाता	क.	पू	र्ण	२६	३	६	४७	१७	१३	१८	७	२	२३	सो.	संकष्ट चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात्रौ ८/३६ बजे ।
मं.	५	२१	५२	श्ले.	६/६	५५/२	वि.	१५	४७	कौ.	९	२५	आनन्द	सिं.	६	४७	२६	३	६	४७	१७	१३	१९	८	३	२४	मं.	आनन्द योग, सिंह का चन्द्र प्रातः ६/४७ बजे ।
बु.	६	२०	६	पू.	४	५०	प्री.	१३	१४	गर	५	२६	स्थिर	सिं.	पू	र्ण	२६	४	६	४७	१७	१३	२०	९	४	२५	बु.	बड़ा दिन, क्रिसमस डे, भद्रा रात्रौ ८/४ से ।
गु.	७	१८	५	उ.	३	२५	आ.	१०	२५	म.	०	४४	मातङ्ग	कं.	१०	२३	२६	४	६	४७	१७	१३	२१	१०	५	२६	गु.	भद्रा प्रातः ७/३ तक, कन्या का चन्द्र दिवा १०/२३ बजे ।
शु.	८	१५	५२	ह.	१	४८	सौ.	७/४	२४/१८	कौ.	२२	३८	अमृत	कं.	पू	र्ण	२६	४	६	४७	१७	१३	२२	११	६	२७	शु.	अष्टका श्राद्ध ।
श.	९	१३	३२	चि.	२४	८	अति.	१	७	गर	१६	४८	काण	तु.	१२	५४	२६	५	६	४७	१७	१३	२३	१२	७	२८	श.	भद्रा रात्रौ १२/२० से, तुला का चन्द्र दिवा १२/५४ बजे ।
र.	१०	११	९	स्वा.	२२	२८	सु.	२१	५८	म.	१०	५४	लुम्ब	तु.	पू	र्ण	२६	५	६	४७	१७	१३	२४	१३	८	२९	र.	सफला एकादशी व्रत स्मार्तों का, पार्श्वनाथ जयन्ती (जैन), भद्रा दिवा ११/८ तक ।
चं.	११	८/६	५०/४०	वि.	२०	५५	धृ.	१८	५५	बा.	५	५	मित्र	वृ.	१५	१५	२६	६	६	४७	१७	१३	२५	१४	९	३०	सो.	सफला एकादशी व्रत वैष्णवों का, वृश्चिक का चन्द्र दिवा ३/१५ बजे ।
मं.	१३	४	४०	अनु.	१६	३०	शू.	१५	५७	गर	२७	९	वज्र	वृ.	पू	र्ण	२६	७	६	४७	१७	१३	२६	१५	१०	३१	मं.	भौम प्रदोष व्रत, ऋणमोचनार्थ भौम प्रदोष विधान से करें । भद्रा रात्रौ ४/३८ से ।
बु.	१४	२	५८	ज्ये.	१८	२०	ग.	१३	१२	म.	२२	३५	ध्वांक्ष	ध.	१८	१८	२६	८	६	४७	१७	१३	२७	१६	११	१	बु.	जनवरी १ सन् २००३ प्रारम्भ, ईसाई नववर्षारम्भ, मासशिवरात्रि, भद्रा दि. ३/४८ तक, C
गु.	३०	१	३७	मू.	१७	३२	वृ.	१०	४०	व.	१८	४५	धूम्र	ध.	पू	र्ण	२६	९	६	४६	१७	१४	२८	१७	१२	२	गु.	स्नान-दान-श्राद्ध की अमावास्या । C धनु का चन्द्र सायं ६/१८ बजे ।

३५ पंक्ति २० दिसम्बर, शुक्रवार के स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	६	८	३	६	२	१	७
४	[illegible]	२३	२४	१८	१	१३	१३
३०	[illegible]	५१	५४	१३	४६	३३	३३
५२	५०	२७	१८	४६	३९	५५	५५
६१	३७	४६	४	५२	५	३	३
२२	५४	३०	स्व.	४८	५५व	११व.	११व.

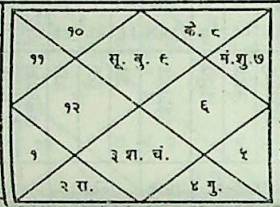

पाक्षिक फल– यान तथा रेल दुर्घटना होने की सम्भावना है। शासन-सत्ता में परिवर्तन हो सकता है। नये रोग उभरेंगे। सर्राफा बाजार में कमी का रूख आयेगा। साग-सब्जी के दाम कम होंगे। सीमा पर तनाव जैसी स्थिति उत्पन्न हो सकती है। शीत लहरी से जन-धन की हानि होगी। उग्रवादी उपद्रव करेंगे।

३६ पंक्ति २७ दिसम्बर, शुक्रवार के स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	६	८	३	६	२	१	७
११	२१	२७	२४	२४	१	१३	१३
४०	३६	३३	२६	३६	९	११	११
३५	८	५१	४	३	६	४०	४०
६१	३७	१०	४	५८	४	३	३
२५	५४	४	स्व	७६	५३व.	११व.	११व.

CC-0. Late.Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

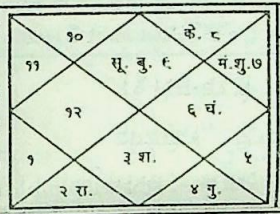

पौषशुक्लपक्ष :– श्री संवत् २०५९, शाके १९२४, ईसवी सन् २००३

यास्यगोलः, दक्षिण-उत्तरायणं, हेमन्त-शिशिरर्तुः।

(३ जनवरी से १८ जनवरी तक)

वा.	तिथि			नक्षत्र			योग			करण			योगाः	चन्द्रचार			दिनमान		सूर्योदय		सूर्यास्त		दिनांक				वा.	
नाम	मिति	बजकर	मिनटतक	नाम	बजकर	मिनटतक	नाम	बजकर	मिनटतक	नाम	घटी	पल	आनंदादि	राशि	बजकर	मिनटतक	घटी	पल	बजकर	मिनटपर	बजकर	मिनटपर	मु.	बंगला	सांपातिक	अंग्रेजी	वार	
शु.	१	२४	४०	पू.	१७	४	ध्रु.	८ / ६	२८ / ३६	कि.	१५	५४	प्रवर्ध	म.	२३	४	२६	१०	६	४६	१७	१४	२९	१८	१३	३	शु.	मकर का चन्द्र रात्रौ ११/४ बजे।
श.	२	२४	१४	उ.	१७	३	ह.	५	४	बा.	१४	१२	रक्ष	म.	पू	र्ण	२६	११	६	४६	१७	१४	३०	१९	१४	४	श.	चन्द्रदर्शन, मु.३० फलसमता।
र.	३	२४	१८	श्र.	१७	३२	वज्र	३	५८	तै.	१३	४२	गद	कुं.	६	२	२६	१२	६	४६	१७	१४	१	२०	१५	५	र.	जुल्काद मास प्रारम्भ,पंचक प्रारम्भ रा.शे. ६/२ बजे से, कुम्भ का चन्द्र रा.शे.६/२ बजे।
चं.	४	२४	५२	ध.	१८	३२	सि.	२	१९	व.	१४	५८	शुभ	कुं.	पू	र्ण	२६	१३	६	४६	१७	१४	२	२१	१६	६	सो.	वैनायकी चतुर्थी व्रत, भद्रा दिवा १२/४५ से रात्रौ १२/५० तक, पंचक।
मं.	५	१	५५	श.	१९	५८	व्य.	२	५७	बव.	१६	३२	मृत्यु	कुं.	पू	र्ण	२६	१५	६	४५	१७	१५	३	२२	१७	७	मं.	पंचक।
बु.	६	३	२७	पूभा.	२१	५७	व.	२	५८	कौ.	१६	४७	पद्म	मी.	१५	२९	२६	१६	६	४५	१७	१५	४	२३	१८	८	बु.	मीन का चन्द्र दिवा ३/२९ बजे, पंचक।
गु.	७	३	२०	उभा.	२२	१२	प.	३	१८	गर	२४	४	छत्र	मी.	पू	र्ण	२६	१८	६	४५	१७	१५	५	२४	१९	९	गु.	भद्रा रा.शे. ५/१९ से, गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती ७, पंचक।
शु.	८	पू	र्ण	रे.	२	४५	शि.	३	४७	म.	२६	४	श्रीवत्स	मे.	२	४६	२६	१९	६	४५	१७	१५	६	२५	२०	१०	शु.	पंचक समाप्ति रा.२/४६ बजे, मेष का चन्द्र रा.२/४६ बजे, भद्रा सा.६/२३ तक।
श.	८	७	२७	अ.	५	२१	सि.	४	१७	बव.	१	४५	सौम्य	मे.	पू	र्ण	२६	२१	६	४४	१७	१६	७	२६	२१	११	श.	A तैलंग स्वामी जयन्ती, उत्तरायण प्रारम्भ।
र.	९	९	३८	भ.	पू	र्ण	सा.	४	४७	कौ.	७	१४	कालदंड	मे.	पू	र्ण	२६	२३	६	४४	१७	१६	८	२७	२२	१२	र.	C महाफल है,आज तिल का उपटन लगाकर स्नान करें,मिथुन का चं.रा.१२/५८ बजे।
चं.	१०	११	४२	भ.	७	५५	शुभ	३	५	गर	१२	२२	चर	वृ.	१४	३१	२६	२५	६	४४	१७	१६	९	२८	२३	१३	सो.	भद्रा रात्रौ १२/३५ से, वृष का चन्द्र दिवा २/३१ बजे।
मं.	११	१३	३०	कृ.	१०	१२	शु.	५	७	भ.	१६	५४	गद	वृ.	पू	र्ण	२६	२६	६	४३	१७	१७	१०	२९	२४	१४	मं.	पुत्रदा एकादशी व्रत सबका, भद्रा दिवा १/२८ तक, खरमास समाप्ति, मन्वादि ११, A
बु.	१२	१४	५४	रो.	१२	८	ब्र.	४	४७	बा.	२०	२७	शुभ	मि.	२४	५८	२६	२८	६	४२	१७	१८	११	१	२५	१५	बु.	प्रदोष व्रत,मकर संक्रान्ति,पुण्यकाल दोपहर २/४८ तक,देवों का दिन व दैत्यों की रात्रि B
गु.	१३	१५	५२	मृ.	१३	४०	ऐ.	४	८	तै.	२२	५०	मृत्यु	मि.	पू	र्ण	२६	३०	६	४२	१७	१८	१२	२	२६	१६	गु.	B आरम्भ,पोंगल (दक्षिण भारत में) प्रयाग में संगम स्नान,आज सदाशिव को घृताभिषेक का C
शु.	१४	१६	१८	आ.	१४	१६	वै.	३	३	व.	२२	५८	पद्म	मि.	पू	र्ण	२६	३३	६	४२	१७	१८	१३	३	२७	१७	शु.	व्रत की पूर्णिमा, भद्रा सायं ४/१६ से रात्रौ ४/१६ तक।
श.	१५	१६	१०	पुन.	१५	१०	वि.	१	३४	बव.	२३	४२	छत्र	क.	९	८	२६	३५	६	४१	१७	१९	१४	४	२८	१८	श.	माघ स्नानारम्भ आज से, स्नान-दान की पूर्णिमा।

३७ पंक्ति ३ जनवरी, शुक्रवार के स्पष्ट ग्रह

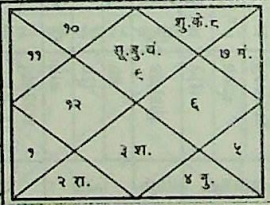

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	६	८	३	७	२	१	७
१८	२६	२६	२३	१	०	१२	१२
५०	१	२६	५४	३४	३४	४९	४९
३६	२३	४८	३१	३७	५५	२४	२४
६१	३७	३२	५	६१	४	३	३
२६	५२	२८व	१९व	३५	५३व	११व.	११व.

पाक्षिक फल– सर्वत्र शीत लहरी का प्रकोप पर होगा। खाद्य पदार्थ के दामों में कमी आयेगी। सराफा बाजार में सामान्य तेजी आयेगी। साग-सब्जी के दाम कम होंगे। आंधी, तूफान व कहीं-कहीं सामान्य वर्षा होने की सम्भावना है। कर्मचारी लोग हड़ताल करेंगे।

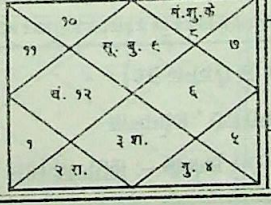

३८ पंक्ति १० जनवरी, शुक्रवार के स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	७	८	३	७	२	१	७
२६	०	२१	२३	८	०	१२	१२
०	२६	१६	११	४९	१	२७	२७
३१	३४	५३	४९	३२	४८	९	९
६१	३७	४९	६	६३	३	३	३
२३	५३	५९व	४२व	२८	५१व	११व.	११व.

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

माघकृष्णपक्ष :– श्री संवत् २०५९, शाके १९२४, ईसवी सन् २००३

यामयगोल:, उत्तरायणं, शिशिरर्तु: ।

(१९ जनवरी से १ फरवरी तक)

वा.	तिथि			नक्षत्र			योग			करण			योगाः	चन्द्रचार			दिनमान		सूर्योदय		सूर्यास्त		दिनांक				वा.	
नाम	मिति	बजके	मिनटतक	नाम	बजके	मिनटतक	नाम	बजके	मिनटतक	नाम	घटी	पल	आनन्दादि	राशि	बजके	मिनटतक	घटी	पल	बजकर	मिनटपर	बजकर	मिनटपर	मु.	बंगला	सांपातिक	अंग्रेजी	वार	
र.	१	१५	३५	पु.	१५	१२	प्री.	२३	४५	कौ.	२२	१४	श्रीवत्स	क.	पू	र्ण	२६	३७	६	४१	१७	१९	१५	५	२९	१९	र.	माघ स्नान नित्य कर्म होने से वह न करने से पाप लगता है, जो मास भर स्नान नहीं कर सकता A
चं.	२	१४	३२	श्ले.	१४	४५	आ.	२१	३४	गर	१९	३७	सौम्य	सिं.	१४	५२	२६	३९	६	४०	१७	२०	१६	६	३०	२०	सो.	सिंह का चन्द्र दिवा २/५२ बजे, भद्रा रात्रौ १/४६ से । G भद्रा दिवा १/४ तक ।
मं.	३	१३	५	म.	१३	५८	सौ.	१९	५	भ.	१५	५८	कालदंड	सिं.	पू	र्ण	२६	४२	६	४०	१७	२०	१७	७	१	२१	मं.	अंगारकी संकष्ट चतुर्थी व्रत, चन्द्रो. रा. ८/३६ बजे, गणेश जी का जन्म, वक्रतुण्ड यात्रा, G
बु.	४	११	१८	पू.	१२	५०	शो.	१६	२०	बा.	११	३२	स्थिर	कं.	१८	३५	२६	४४	६	३९	१७	२१	१८	८	२	२२	बु.	कन्या का च. सा. ६/३५ बजे । B गंगा कहीं भी कुरुक्षेत्र के समान होती है, विन्ध्यांचल C
गु.	५	९	१५	उ.	११	२७	अति.	१३	२५	तै.	६	२६	मातङ्ग	कं.	पू	र्ण	२६	४६	६	३९	१७	२१	१९	९	३	२३	गु.	A वह ३ या १ दिन तो नित्य स्नानादि कर्म करके मौन पूर्वक माघ स्नान करें । माघ में B
शु.	६	६/४	५८/३८	ह.	९	५२	सु.	१०	१९	व.	०	५२	अमृत	तु.	२१	१०	२६	४९	६	३८	१७	२२	२०	१०	४	२४	शु.	तुला का च. रा. ९/१० बजे, भद्रा प्रा. ६/५८ से सा. ५/४८ तक, रामानन्दाचार्य जयन्ती ।
श.	८	२	२०	चि.	८/६	१३/३४	धृ.	७/४	१२/२	बा.	२२	६	काण	तु.	पू	र्ण	२६	५२	६	३८	१७	२२	२१	११	५	२५	श.	अष्टका श्राद्ध । C में उससे दस गुना, काशी में उससे सौ गुना, पश्चिम वाहिनी में उससे हजार D
र.	९	२३	५८	वि.	४	५७	ग.	२४	५५	तै.	१६	१८	उत्पात	वृ.	२३	२७	२६	५४	६	३७	१७	२३	२२	१२	६	२६	र.	गणतन्त्र दिवस, वृश्चिक का चन्द्र रात्रौ ११/२७ बजे । E कोटि गुना फलदायक है ।
सो.	१०	२१	५०	अनु.	३	३०	वृ.	२१	५७	व.	१०	४३	मानस	वृ.	पू	र्ण	२६	५७	६	३७	१७	२३	२३	१३	७	२७	सो.	भद्रा दि. १०/५३ से रा. ९/४८ तक । D गुना, प्रयाग के सीतासित संगम में उससे E
मं.	११	१९	५२	ज्ये.	२	१७	ध्रु.	१९	७	बव.	५	३१	मुग्दर	ध.	२	२३	२७	०	६	३६	१७	२४	२४	१४	८	२८	मं.	षट्तिला एकादशी व्रत सबका, आज स्नान, पान, दान, होम, मर्दन स्नान इन ६ प्रकार F
बु.	१२	१८	१२	मू.	१	२४	व्या.	१६	३२	कौ.	१	२	केतु	ध.	पू	र्ण	२७	२	६	३६	१७	२४	२५	१५	९	२९	बु.	प्रदोष व्रत, तिल द्वादशी । F से तिल का उपयोग करें ।
गु.	१३	१६	५२	पू.	२४	५०	ह.	१४	१२	व.	२५	४१	धाता	ध.	पू	र्ण	२७	५	६	३५	१७	२५	२६	१६	१०	३०	गु.	मासशिवरात्रि, भद्रा दिवा ४/५० से रात्रौ ४/२३ तक ।
शु.	१४	१६	२	उ.	२४	४३	वज्र.	१२	१५	श.	२३	२७	आनन्द	म.	६	५७	२७	८	६	३५	१७	२५	२७	१७	११	३१	शु.	मकर का चन्द्र प्रातः ६/५७ बजे ।
श.	३०	१५	३४	श्र.	१	४	सि.	१०	३५	नाग	२२	२७	स्थिर	म.	पू	र्ण	२७	११	६	३४	१७	२६	२८	१८	१२	१	श.	फरवरी २, मौनी अमावास्या, प्रयाग में संगम स्नान, स्नान-दान-श्राद्ध की अमावास्या ।

३९ पंक्ति १९ जनवरी, रविवार के स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	७	८	३	७	१	१	७
५	६	२६	२२	१८	२९	११	११
१२	७	१०	७	३१	२७	५८	५८
४१	३१	२९	४८	६	९	३२	३१
६१	३७	८	७	६५	३	३	३
१८	५३	१२स्व	३५व	५१	५१व	११व.	११व.

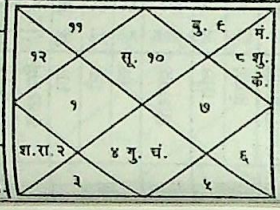

पाक्षिक फल– किसी विशिष्ट व्यक्ति की मृत्यु होगी । सरसों के दाम कुछ कम होंगे । दुर्घटना, अपहरण, होने से जनता चिन्तित रहेगी । चांदी के दामों में उतार-चढ़ाव बना रहेगा । कागज के दामों में वृद्धि होने की सम्भावना है । उग्रवादी लोग आतंक पैदा करेंगे । सरकार कड़ाई से कारवाई करेगी ।

४० पंक्ति २५ जनवरी, शनिवार के स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	८	३	७	१	१	७
११	५४	१७	२१	२५	२९	११	११
२०	४९	१	२२	९	४	३९	३९
१५	३७	१७	१८	४७	२२	२८	२८
६१	३७	३०	७	६७	२	३	३
१२	५३	५४	२८व	२४	५८व	११व.	११व.

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

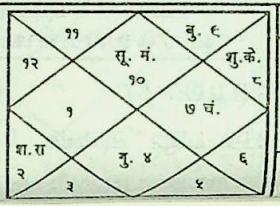

माघशुक्लपक्ष :– श्री संवत् २०५९, शाके १९२४, ईसवी सन् २००३

याम्यगोल:, उत्तरायणं, शिशिरर्तुः।

(२ फरवरी से १६ फरवरी तक)

वा.	तिथि			नक्षत्र			योग			करण			योगाः	चन्द्रचार			दिनमान		सूर्योदय		सूर्यास्त		दिनांक				वा.	
नाम	मिति	बजकर	मिनटतक	नाम	बजकर	मिनटतक	नाम	बजकर	मिनटतक	नाम	घटी	पल	आनंदादि	राशि	बजकर	मिनटतक	घटी	पल	बजकर	मिनटपर	बजकर	मिनटपर	मु.	बंगला	सांपातिक	अंग्रेजी	वार	
र.	१	१५	३८	ध.	१	५५	व्य.	९	२२	बव.	२२	४२	मातङ्ग	कुं.	१३	३९	२७	१४	६	३३	१७	२७	२९	१९	१३	२	र.	वल्लभाचार्य जयन्ती, कुम्भ का चं.दि.१/३९ बजे,पंचक प्रारम्भ दि.१/३९ बजे,चन्द्रदर्शन।
चं.	२	१६	१७	श.	३	२०	व.	८	३३	कौ.	२४	१६	अमृत	कुं.	पू	र्ण	२७	१७	६	३३	१७	२७	१	२०	१४	३	सो.	जुलहिज मास प्रारम्भ, पंचक। H भद्रा सा.६/५२ तक, प्रदोष काल में शिव J
मं.	३	१७	२२	पूभा.	५	५	प.	८	७	गर	२६	५८	काण	मी.	२२	५०	२७	२०	६	३२	१७	२८	२	२१	१५	४	मं.	भद्रा रा.शे. ६/५ से, मीन का चन्द्र रात्रौ १०/५० बजे, पंचक।
बु.	४	१८	५५	उभा.	पू	र्ण	शि.	८	१	भ.	३०	५२	लुम्ब	मी.	पू	र्ण	२७	२३	६	३२	१७	२८	३	२२	१६	५	बु.	वैनायकी,कुन्द,तिल,ढुंढीराज चतुर्थी,ये चारो भिन्न-भिन्न फलदायक चतुर्थियां है, H
गु.	५	२०	४८	उभा.	७	२०	सि.	८	१६	बव.	३	१५	छत्र	मी.	पू	र्ण	२७	२६	६	३१	१७	२९	४	२३	१७	६	गु.	वसन्त पंचमी, श्री पंचमी, रति काम महोत्सव, वाणी अर्चना, सरस्वती जन्मोत्सव।
शु.	६	२२	३०	रे.	९	५०	सा.	८	१५	कौ.	७	४७	श्रीवत्स	मे.	९	५८	२७	२९	६	३०	१७	३०	५	२४	१८	७	शु.	पंचक समाप्ति दिवा ९/५८ बजे, मेष का चन्द्र दिवा ९/५८ बजे।
श.	७	१	५	अ.	१२	३०	शुभ.	९	१२	गर	१३	८	सौम्य	मे.	पू	र्ण	२७	३३	६	३०	१७	३०	६	२५	१९	८	श.	अचला सप्तमी,रथ सप्तमी,ओराग्य ७,विधान ७ ये स्नान पर्व हैं,भद्रा रा.१/३ से, B
र.	८	३	५	भ.	१४	५८	शु.	९	४३	भ.	१८	५४	कालदंड	वृ.	२१	४६	२७	३६	६	२९	१७	३१	७	२६	२०	९	र.	भीष्माष्टमी, भद्रा दिवा २/३ तक, वृष का चन्द्र रात्रौ ९/४६ बजे।
चं.	९	४	५०	कृ.	१७	२२	ब्र.	१०	७	वा.	२३	४०	स्थिर	वृ.	पू	र्ण	२७	३९	६	२८	१७	३२	८	२७	२१	१०	सो.	महानन्दा नवमी, हरसुब्रह्मदेव जयन्ती। J को कुन्द-पुष्प चढ़ावें।
मं.	१०	६	१२	रो.	१९	२५	ऐ.	१०	१७	तै.	२७	३६	मातङ्ग	वृ.	पू	र्ण	२७	४३	६	२८	१७	३२	९	२८	२२	११	मं.	B अरुणोदय में स्नान कर श्री सूर्य के लिए दूध में चावल पकाते उफान पूर्व या उत्तर में C
बु.	११	पू	र्ण	मृ.	२१	०	वै.	१०	५	व.	२०	२७	अमृत	मि.	८	२३	२७	४६	६	२७	१७	३३	१०	२९	२३	१२	बु.	भद्रा सायं ६/३६ से, मिथुन का चन्द्र दिवा ८/२३ बजे, बकरीद।
गु.	११	७	५	आ.	२२	९	वि.	९	३२	भ.	१	३६	काण	मि.	पू	र्ण	२७	४९	६	२६	१७	३४	११	३०	२४	१३	गु.	भद्रा दि.७/२ तक, जया एकादशी व्रत सबका। C गिरे तो शुभ होगा, सूर्य रथोत्सव।
शु.	१२	७	२७	पुन.	२२	४७	प्री.	८	४०	वा.	२	३२	लुम्ब	क.	१६	४७	२७	५२	६	२६	१७	३४	१२	१	२५	१४	शु.	प्रदोष व्रत,भीष्म द्वादशी,शालिग्राम शिला दान दें, तिल द्वादशी कर्क का चन्द्र सा.४/२५ बजे।
श.	१३	७	१७	पु.	२२	५५	आ.	७/५	२०/३८	तै.	२	८	मित्र	क.	पू	र्ण	२७	५६	६	२५	१७	३५	१३	२	२६	१५	श.	D सिंह का चन्द्र रात्रौ १०/४५ बजे, भद्रा प्रातः ६/३६ से सायं ६/३ तक।
र.	१४	६/५	३८/३६	श्ले.	२२	३८	शो.	३	३५	व.	०	३४	वज्र	सिं.	२२	४५	२७	५९	६	२४	१७	३६	१४	३	२७	१६	र.	माघ स्नान समाप्ति, स्नान-दान व्रत की पूर्णिमा, रैदास जयन्ती, माघी पूर्णिमा, D

४१ पंक्ति २ फरवरी, रविवार के स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	७	८	३	८	१	१	७
[illegible]	१४	२३	२०	४	२८	११	११
[illegible]	५७	१२	१९	११	४१	१४	१४
[illegible]	५३	१०	९	५८	५०	२	२
६१	३७	६५	८	६८	२	३	३
३	५३	१८	२९व	१३	४८व	११व.	११व.

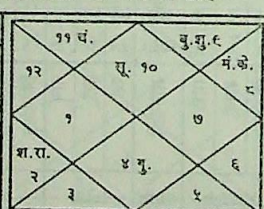

पाक्षिक फल– शीत लहरी कहीं अधिक रहेगी तथा पश्चिम के राज्यों में ठण्ड कम होगी। साग-सब्जी के दामों मे सामान्य तेजी आयेगी। सर्राफा बाजार में कुछ तेजी आयेगी। सूती तथा रंगीन वस्त्र के दाम कुछ बढ़ेंगे। धान्य की उपज अच्छी होगी। चौपायों को कष्ट होगा। बिजली की समस्या फिर उत्पन्न होगी।

४२ पंक्ति ९ फरवरी, रविवार के स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	७	९	३	८	१	१	७
२६	१९	१	१९	१२	२८	१०	१०
३६	२२	५६	२०	१४	२७	५१	५१
१३	४३	२४	२६	३१	३८	४७	४७
६०	३७	८५	७	६९	०	३	३
५३	४५	४	३७व	२८	४६व	११व.	११व.

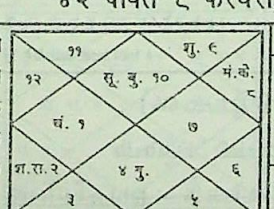

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

फाल्गुनकृष्णपक्ष :- श्री संवत् २०५९, शाके १९२४, ईसवी सन् २००३
यास्यगोल:, उत्तरायणं, शिशिरर्तुः ।
(१७ फरवरी से ३ मार्च तक)

वा.	तिथि			नक्षत्र			योग			करण			योगाः	चन्द्रचार			दिनमान		सूर्योदय		सूर्यास्त		दिनांक				वा.	
वार	मिति	बजके	मिनटतक	नाम	बजके	मिनटतक	नाम	बजके	मिनटतक	नाम	घटी	पल	आनंदादि	राशि	बजके	मिनटतक	घटी	पल	बजकर	मिनटपर	बजकर	मिनटपर	मु.	बंगला	सांपातिक	अंग्रेजी	वार	
चं.	१	४	३	म.	२१	५२	अति	१	१३	वा.	२६	५९	ध्वांक्ष	सिं.	पू	र्ण	२८	३	६	२४	१७	३६	१५	४	२८	१७	सो.	B बैद्यनाथ जन्म दिन ।
मं.	२	२	१४	पू.	२०	४८	सु.	२२	३५	तै.	२१	५१	धूम्र	कं.	२	३८	२८	६	६	२३	१७	३७	१६	५	२९	१८	मं.	कन्या का चन्द्र रात्रौ २/३८ बजे ।
बु.	३	२४	८	उ.	१९	२७	धृ.	१९	४२	व.	१६	५८	प्रवर्ध	कं.	पू	र्ण	२८	१०	६	२२	१७	३८	१७	६	३०	१९	बु.	भद्रा दिवा १/८ से रात्रौ १२/६ तक ।
गु.	४	२१	५३	ह.	१७	५६	शू.	१६	४१	बव.	११	३५	रक्ष	तु.	५	१६	२८	१३	६	२२	१७	३८	१८	७	१	२०	गु.	संकष्ट चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रौ ९/३१ बजे, तुला का चन्द्र प्रातः ५/१६ बजे ।
शु.	५	१९	३२	चि.	१६	१७	ग.	१३	३५	कौ.	५	५०	मुसल	तु.	पू	र्ण	२८	१७	६	२१	१७	३९	१९	८	२	२१	शु.	A भद्रा प्रातः ६/२२ से सायं ६/२६ तक, चर्तुदश लिंग पूजा, कृत्ति वासेश्वर दर्शन, B
श.	६	१७	८	स्वा.	१४	३६	वृ.	१०	२५	व	२६	५२	सिद्धि	तु.	पू	र्ण	२८	२०	६	२०	१७	४०	२०	९	३	२२	श.	भद्रा सायं ५/६ से रात्रौ ३/५७ तक ।
र.	७	१४	४७	वि.	१२	५८	ध्रु.	७/४	१८/१८	बव	२१	८	उत्पात	वृ.	७	३२	२८	२४	६	१९	१७	४१	२१	१०	४	२३	र.	वृश्चिक का चन्द्र दिवा ७/३२ बजे ।
चं.	८	१२	३८	अनु.	११	३०	ह.	१	२६	कौ	१५	४५	मानस	वृ.	पू	र्ण	२८	२८	६	१९	१७	४१	२२	११	५	२४	सो.	जानकी जयन्ती, सीताष्टमी, अष्टका श्राद्ध ।
मं.	९	१०	४०	ज्ये.	१०	१२	वज्र.	२२	४७	गर	१०	५२	मुग्दर	ध.	१०	२१	२८	३१	६	१८	१७	४२	२३	१२	६	२५	मं.	भद्रा रात्रौ ९/४८ बजे, रामदास नवमी, धनु का चन्द्र दिवा १०/२१ बजे ।
बु.	१०	८	५९	मू.	८	५२	सि.	२०	२४	म.	६	४५	केतु	ध.	पू	र्ण	२८	३५	६	१७	१७	४३	२४	१३	७	२६	बु.	भद्रा दिवा ८/५८ तक ।
गु.	११	७	४१	पू.	८	३७	व्य.	२०	२०	वा.	३	३०	धाता	म.	१४	४३	२८	३८	६	१७	१७	४३	२५	१४	८	२७	गु.	विजया एकादशी व्रत सबका, मकर का चन्द्र दिवा २/४३ बजे ।
शु.	१२	६	४८	उ.	८	२५	व.	१६	३७	तै.	१	२०	आनन्द	म.	पू	र्ण	२८	४२	६	१६	१७	४४	२६	१५	९	२८	शु.	प्रदोष व्रत ।
श.	१३	६	२५	श्र.	८	४०	प.	१५	१५	व.	०	२२	स्थिर	कुं.	२१	१२	२८	४६	६	१५	१७	४५	२७	१६	१०	१	श.	मार्च ३, महाशिवरात्रि, पंचक आरम्भ रा. ९/१२ बजे, कुम्भ का चं. रा. ९/१२ बजे, A
र.	१४	६	३०	ध.	९	२५	शि.	१४	२०	श.	०	४०	मातंङ	कुं.	पू	र्ण	२८	४९	६	१४	१७	४६	२८	१७	११	२	र.	श्राद्ध की अमावास्या ।
चं.	३०	७	१०	श.	१०	४२	सि.	१३	५०	ना.	२	२०	अमृत	मी.	६	८	२८	५३	६	१४	१७	४६	२९	१८	१२	३	सो.	सोमवती अमावास्या, स्नान-दान ३०, मीन का चन्द्र प्रातः ६/८ बजे ।

४३ पंक्ति १७ फरवरी, सोमवार के स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	९	३	८	१	१	७
४	२४	१४	१८	२१	२८	१०	१०
४२	२४	९	१९	३५	२१	२६	२६
३५	४७	२३	३७	०	३०	२१	२१
६०	३७	९८	७	७०	०	३	३
३९.	४४	३०	३६व	३५	४६व	११व.	११व.

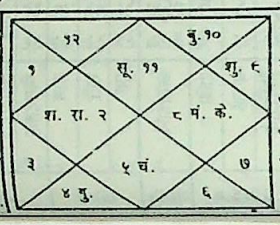

पाक्षिक फल– सर्राफा बाजार में तेजी का रूख रहेगा। राजनैतिक वैमनस्यता खुलकर सामने आयेगी। पक्ष-विपक्ष एक दुसरे की कमी निकालेंगे। अपहरण की घटना से बड़े व्यापारी चिन्तित व भयभीत होंगे। कहीं-कहीं तेज हवा बहेगी। अधिकारियों का स्थानान्तरण होने की सम्भावना है।

४४ पंक्ति २४ फरवरी, सोमवार के स्पष्ट ग्रह

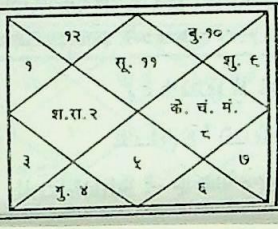

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	९	३	८	१	१	७
११	२८	२६	१७	२९	२८	१०	१०
४६	४८	२	२६	५१	१६	४	४
३४	५५	६	४१	४८	१४	५	५
६०	३७	१०४	६	७१	०	३	३
२७	४४	४३	४४व	४	४५व	११व.	११व.

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

वा.	तिथि			नक्षत्र			योग			करण			योगाः	चन्द्रचार			दिनमान		सूर्योदय		सूर्यास्त		दिनांक				वा.	फाल्गुनशुक्लपक्ष :– श्री संवत् २०५६, शाके १९२४, ईसवी सन् २००३ यामयगोल:, उत्तरायणं, शिशिर-वसन्तर्तु:। (४ मार्च से १८ मार्च तक)
वार	मिति	बजके	मिनटतक	नाम	बजके	मिनटतक	नाम	बजके	मिनटतक	नाम	घटी	पल	आनन्दादि	राशि	बजके	मिनटतक	घटी	पल	बजकर	मिनटपर	बजकर	मिनटपर	मु.	बंगला	सायनिक	अंग्रेजी	वार	
[illegible]	१	८	१५	पूभा.	१२	२५	सा.	१३	४०	बद.	५	२	कारण	मी.	पू	र्ण	२८	५७	६	१३	१७	४७	३०	१९	१३	४	मं.	चन्द्रदर्शन, मु.४५ फलसुभिक्षता, १२ दिनों का पयोव्रतारम्भ, पंचक।
[illegible]	२	९	४८	उभा.	१७	२२	शुभ	१३	२५	कौ.	८	५८	लुम्ब	मी.	पू	र्ण	२९	०	६	१२	१७	४८	१	२०	१४	५	बु.	मुर्हरम मास प्रारम्भ, हिजरी सन् १४२४ प्रारम्भ, पंचक।
[illegible]	३	११	४०	रे.	१६	५८	शु.	१४	१२	गर	१३	४२	मित्र	मे.	१७	७	२९	४	६	११	१७	४९	२	२१	१५	६	गु.	पंचक समाप्ति सा.५/७ बजे,वैनायकी चतुर्थी, भद्रा रा.१२/४२ से, A
[illegible]	४	१३	४७	अ.	१९	३६	ब्र.	१४	४५	भ.	१८	५७	वज्र	मे.	पू	र्ण	२९	८	६	११	१७	४९	३	२२	१६	७	शु.	भद्रा दिवा १/४४ तक। A मेष का चन्द्र सायं ५/७ बजे।
[illegible]	५	१५	५३	भ.	२२	१२	ऐ.	१५	१९	वा.	२४	१७	ध्वांक्ष	वृ.	४	५५	२९	११	६	१०	१७	५०	४	२३	१७	८	श.	वृष का चन्द्र रात्रौ ४/५५ बजे।
[illegible]	६	१७	५२	कृ.	२४	३७	वै.	१५	४७	तै.	२९	१७	धूम्र	वृ.	पू	र्ण	२९	१५	६	९	१७	५१	५	२४	१८	९	र.	C होलिका दाह, ढुंढाराक्षसी पूजा, हुताशनी जन्म, व्रत की पूर्णिमा।
[illegible]	७	१९	३५	रो.	२	४६	वि.	१६	२	गर	१	२६	प्रवर्ध	वृ.	पू	र्ण	२९	१९	६	९	१७	५१	६	२५	१९	१०	सो.	भद्रा रात्रौ ७/३३ से।
[illegible]	८	२०	५२	मृ.	४	२७	प्री.	१५	५८	भ.	५	११	रक्ष	मि.	१५	४२	२९	२३	६	८	१७	५२	७	२६	२०	११	मं.	भद्रा दिवा ८/११ तक, मिथुन का चन्द्र दिवा ३/४२ बजे, होलाष्टक प्रारम्भ।
[illegible]	९	२१	४३	आ.	४	४२	आ.	१५	३८	वा.	७	५३	मुसल	मि.	पू	र्ण	२९	२६	६	७	१७	५३	८	२७	२१	१२	बु.	D कन्या का चन्द्र दि.१०/३३ बजे, चैतन्य महाप्रभु जयन्ती, मन्वादि १५, दोलायात्रा।
[illegible]	१०	२१	५८	पुन.	पू	र्ण	सौ.	१४	५२	तै.	९	२२	सिद्धि	क.	२४	२०	२९	३०	६	६	१७	५४	९	२८	२२	१३	गु.	कर्क का चन्द्र रात्रौ १२/४० बजे।
[illegible]	११	२१	४५	पुन.	६	४२	शो.	१३	४२	व.	९	२७	लुम्ब	क.	पू	र्ण	२९	३४	६	६	१७	५४	१०	२९	२३	१४	शु.	आमलकी रंगभरी एकादशी,श्रृंगार एकादशी व्रत सबका,खरमास प्रारम्भ,मुहर्रम B
[illegible]	१२	२१	५	पु.	६/५	२७/४८	अति.	१२	६	बव.	८	२०	मित्र	क.	पू	र्ण	२९	३८	६	५	१७	५५	११	१	२४	१५	श.	B (ताजिया), भद्रा दिवा ९/५५ से रात्रौ ९/४९ तक, मु. ३० फलसमता।
[illegible]	१३	१९	५६	म.	४	४९	सु.	१०	१०	कौ.	६	३	वज्र	सिं.	६	३२	२९	४१	६	४	१७	५६	१२	२	२५	१६	र.	प्रदोष व्रत, सिंह का चन्द्र प्रातः ६/३२ बजे।
[illegible]	१४	१८	२५	पू.	३	३२	धृ.	७/५	५४/२२	गर	९	४५	केतु	सिं.	पू	र्ण	२९	४५	६	३	१७	५७	१३	३	२६	१७	सो.	होलिका दहन, भद्रा सा.६/२४ से रा.शे.५/२६ तक, रा.१/१६ से २/४४ तक C
मं.	१५	१६	३२	उ.	२	३	गं.	२	३७	बव.	२६	१२	धाता	कं.	१०	३३	२९	४९	६	३	१७	५७	१४	४	२७	१८	मं.	रंग की होली,स्नान-दान की पूर्णिमा, रजोत्सव, श्वपचस्पर्श करें, चौषष्ठी यात्रा, D

४५ पंक्ति ४ मार्च, मंगलवार के स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
[illegible]	८	१०	३	९	१	१	७
[illegible]	३	१०	१६	९	२८	९	९
[illegible]	५०	१७	३३	२०	१८	३८	३८
[illegible]	२	१९	२०	२२	३५	३९	३९
[illegible]	३७	१०९	५	७१	१	२	३
१०	२९	४३	५१व	५	१७	११व.	११व.

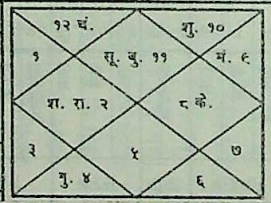

पाक्षिक फल– आर्थिक जगत में संकट व्याप्त होने की सम्भावना है। कहीं तेज आंधी से जन-धन की हानि की सम्भावना है। अनाज के दामों में सामान्य वृद्धि होगी। सर्राफा बाजार में सामान्य तेजी आयेगी। कहीं साम्प्रदायिक तनाव उत्पन्न होने की सम्भावना है।

४६ पंक्ति ११ मार्च, मंगलवार के स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	८	१०	३	९	१	१	७
२६	८	२३	१५	१७	२८	९	९
४९	१२	५	५६	३९	२८	१६	१६
४६	२३	४०	८	४२	१३	२४	२४
५९	३७	१०९	४	७१	१	३	३
५८	२८	५३	१६व	३६	४८	११व.	११व.

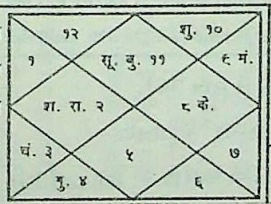

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

चैत्रकृष्णपक्ष :- श्री संवत् २०५९, शाके १९२४, ईसवी सन् २००३

याम्यगोलः, उत्तरायणं, वसन्तर्तुः ।

(१९ मार्च से १ अप्रैल तक)

वा.	तिथि			नक्षत्र			योग			करण			योगाः	चन्द्रचार			दिनमान		सूर्योदय		सूर्यास्त		दिनांक				वा.	
नाम	मिति	बजके	मिनटतक	नाम	बजके	मिनटतक	नाम	बजके	मिनटतक	नाम	घटी	पल	आनंदादि	राशि	बजके	मिनटतक	घटी	पल	बजकर	मिनटपर	बजकर	मिनटपर	मु.	बंगला	सांपातिक	अंग्रेजी	वार	
बु.	१	१३	२५	ह.	२४	२४	वृ.	२३	४०	कौ.	२०	५४	आनन्द	कं.	पू	र्ण	२९	५३	६	२	१७	५८	१५	५	२८	१९	बु.	वसन्तोत्सव, काम महोत्सव, आम्रमंजरी व चन्दन प्राशन करें।
गु.	२	१२	६	चि.	२२	४३	ध्रु.	२०	३५	गर	१५	१२	चर	तु.	१३	१७	२९	५६	६	१	१७	५९	१६	६	२९	२०	गु.	भद्रा रात्रौ १०/५२ से, तुला का चन्द्र दिवा १/१७ बजे।
शु.	३	९	४२	स्वा.	२१	६	व्या.	१७	२७	म.	९	१४	गद	तु.	पू	र्ण	३०	०	६	०	१७	०	१७	७	३०	२१	शु.	संकष्ट चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय रात्रौ ९/२८ बजे, भद्रा दिवा ९/४२ तक।
श.	४	७/४	१८/५८	वि.	१९	३५	ह.	१४	२२	वा.	३	१४	शुभ	वृ.	१५	३३	३०	४	६	०	१७	०	१८	८	१	२२	श.	वृश्चिक का चन्द्र दिवा ३/३३ बजे, रंग पंचमी।
र.	६	२	४६	अनु.	१८	१५	वज्र.	११	२०	गर	२४	३८	मृत्यु	वृ.	पू	र्ण	३०	८	५	५९	१८	१	१९	९	२	२३	र.	भद्रा रात्रौ २/४४ से।
चं.	७	२४	४६	ज्ये.	१७	१२	सि.	८/५	२६/४५	म.	१९	२७	पद्म	ध.	१८	१८	३०	११	५	५८	१८	२	२०	१०	३	२४	सो.	भद्रा दिवा १/४३ तक, धनु का चन्द्र सायं ६/१८ बजे।
मं.	८	२३	७	मू.	१९	३०	व.	३	१८	वा.	१४	५६	छत्र	ध.	पू	र्ण	३०	१५	५	५७	१८	३	२१	११	४	२५	मं.	शीतलाष्टमी।
बु.	९	२१	४८	पू.	१९	१२	प.	१	३५	तै.	११	१५	श्रीवत्स	म.	२२	२६	३०	१९	५	५७	१८	३	२२	१२	५	२६	बु.	मकर का चन्द्र रात्रौ १०/२६ बजे।
गु.	१०	२०	५४	उ.	१९	२१	शि.	२३	२२	व.	८	३०	सौम्य	म.	पू	र्ण	३०	२२	५	५६	१८	४	२३	१३	६	२७	गु.	भद्रा दिवा ९/१८ से रात्रौ ८/५२ तक।
शु.	११	२०	३०	श्र.	१७	०	सि.	२१	५८	बव.	६	५५	धूम्र	कुं.	४	४२	३०	२६	५	५५	१८	५	२४	१४	७	२८	शु.	पापमोचिनी, पापांकुशा एकादशी व्रत सबका, पंचक प्रारम्भ रा.शे. ४/४२ बजे, A
श.	१२	२०	३५	ध.	१८	१०	सा.	२०	५७	कौ.	६	३४	प्रवर्ध	कुं.	पू	र्ण	३०	३०	५	५४	१८	६	२५	१५	८	२९	श.	A कुम्भ का चन्द्र रात्रौ ४/४२ बजे।
र.	१३	२१	१९	श.	१९	४८	शुभ	२०	२२	गर	७	३२	रक्ष	कुं.	पू	र्ण	३०	३३	५	५४	१८	६	२६	१६	९	३०	र.	प्रदोष व्रत, मासशिवरात्रि, वारुणी पर्व, भद्रा ६/१४ से।
चं.	१४	२२	१९	पूभा.	२१	५२	शु.	२०	६	म.	९	४२	मुसल	मी.	१३	२२	३०	३७	५	५३	१८	७	२७	१७	१०	३१	सो.	केदार कुण्ड पर काम महोत्सव, भद्रा दि.६/४४ तक, मीन का चन्द्र दि.३/२२ बजे।
मं.	३०	२३	५३	उभा.	२४	१६	ब्र.	२०	१२	च.	१३	२	सिद्धि	मी.	पू	र्ण	३०	४१	५	५२	१८	८	२८	१८	११	१	मं.	अप्रैल १। स्नान-दान-श्राद्ध की भौमवती अमावास्या, मन्वादि ३०।

४७ पंक्ति १९ मार्च, बुधवार के स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	[illegible]	११	३	९	१	१	७
४	१३	७	१५	२७	२८	८	८
४८	१०	३७	२३	१५	४७	५०	५०
२९	४१	२०	२३	५	११	५८	५८
५९	२७	१०७	४	७२	२	३	३
४०	१०	४८	४ व	७	५०	११४.	११४.

पाक्षिक फल– सीमा पर तनाव जैसी स्थिति उत्पन्न होगी। उग्रवादियों का मनोबल घटेगा। सरकार कड़ाई से कदम उठायेगी। अधिकारियों का स्थानान्तरण होगा। छात्र अध्ययनरत रहेगें। किसी महान व्यक्ति की हानि से कमी महसूस होगी। साग-सब्जी के दामों में सामान्य तेजी आयेगी।

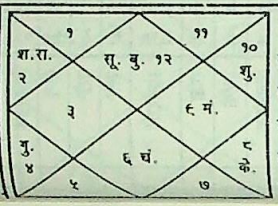

४८ पंक्ति २५ मार्च, मंगलवार के स्पष्ट ग्रह

र.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	११	३	१०	१	१	७
१०	१६	१८	१५	४	२९	८	८
४५	५२	१५	१	२७	५	३१	३१
५३	८	५५	२१	४७	३८	५४	५४
५९	३६	१०२	२	७२	३	३	३
२७	४१७	४३	४ व	७	[illegible]	११४.	११४.

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

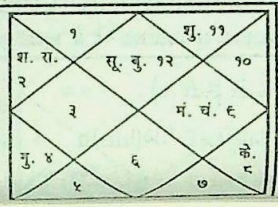

विकास का इतिहास

श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन प्रा. लि. एशिया का सबसे बड़ा आयुर्वेदीय प्रतिष्ठान माना जाता है, जो की उन्नति और व्यापक लोकप्रियता का इतिहास इस उक्ति का प्रमाण है कि पवित्र उद्देश्य और लोकोपकारी लक्ष्य पर परिश्रम और पूर्ण निष्ठा से काम करने पर निश्चय ही पूर्ण सफलता मिलती है।

आज से ७३ (त्र्याहत्तर) साल पूर्व जिस **'बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन'** का आरम्भ एक साधारण औषधालय के रूप में बैद्यनाथ धाम देवधर (बिहार) में वैद्यराज पं. रामनारायण शर्मा के द्वारा किया गया था, आज उसी के छः प्रमुख नगरों – कलकत्ता, पटना, झाँसी, नागपुर, नैनी (इलाहाबाद) और सिवनी (म.प्र.) में छः बड़े-बड़े औषधि-निर्माण केन्द्र (कारखाने) हैं और देश के कोने-कोने में फैली हुई ९०० (नौ सौ) से अधिक विशिष्ट एजेन्सियां (जिनमें केवल बैद्यनाथ दवाएँ ही मिलती हैं) और ६० (साठ) हजार से अधिक एजेन्सिया हैं। बैद्यनाथ दवाओं के व्यापार से जीविका चलाने वाले व लाभ उठानेवाले तो इससे कई गुना हैं।

अनुभूत औषधियों के अतिरिक्त बड़ी संख्या में आयुर्वेद की समस्त श्रेष्ठ औषधियाँ तथा अनेक यूनानी दवाएँ बैद्यनाथ निर्माण-केन्द्रों में बनती हैं। कीमती रस-रसायनों के निर्माण में इस संस्था को विशेष गौरवपूर्ण-स्थान प्राप्त है। मूल-द्रव्यों की शुद्धता एवं गुणकारिता की परीक्षा के पश्चात ही बैद्यनाथ दवाएँ बैद्यनाथ की साधन-सम्पन्न निर्माणशालाओं में सुयोग्य रसायन शास्त्रियों और फार्मासिस्टों द्वारा तैयार की जाती हैं।

बैद्यनाथ के आयुर्वेदोन्नति के ठोस प्रयत्न

भवन का निश्चित और दृढ विश्वास है कि आयुर्वेद ही एकमात्र ऐसा जीवन-विज्ञान है, जिसके नियमों पर चलकर मानवजाति बिना दवाओं के स्वस्थ रह सकती है। इस सिद्धान्त के प्रतिपादन के लिए भवन के संस्थापक एवं प्रधान संचालक स्व. पं. रामनारायणजी वैद्य ने स्वयं अपने दीर्घकालीन अनुभवों के आधार पर 'आरोग्य प्रकाश' नाम का ग्रन्थ लिखा है, जिसकी ३ लाख से अधिक प्रतियाँ बिक चुकी हैं। इसमें आरोग्य साधन के आयुर्वेदीय आधार पर स्वास्थ्य प्रकरण लिखा गया है। इसके अंग्रेजी, मराठी, गुजराती संस्करण भी प्रकाशित हो चुके हैं।

आयुर्वेद शास्त्रों के अनुसंधान का प्रयास पिछले कई वर्षों से भवन अकेले कर रहा है। यह कार्य अखिल भारतीय आयुर्वेद-शास्त्र चर्चा-परिषद के अन्तर्गत समस्त देश के वरिष्ठ और अधिकारी आयुर्वेद विद्वानों के द्वारा कराया जा रहा है। प्रथम परिषद में आयुर्वेद के सिद्धान्त त्रिदोष एवं पंचमहाभूत पर निर्णय हुए। दूसरे परिषद के द्रव्यगुण, रसवीर्य विपाकप्रभृति पर महत्त्वपूर्ण निर्णय दिए गए। तीसरे परिषद में आयुर्वेद की दृष्टि से शरीराङ्गवाची (एनाटामी) शब्दों पर शास्त्रीय विचार मंथन किया गया। दो परिषदों के आयोजन से समस्त प्राचीन आयुर्वेद ग्रन्थों में प्रयुक्त शारीरिक अंगों के लिए शब्दों के निश्चित अर्थ एवं प्रयोग निर्धारित किए गए। ऐसे एक हजार से अधिक शब्दों की संदर्भ सूची भवन ने प्रकाशित की है। एक विस्तृत शारीरिक शब्द ग्रन्थ प्रकाशित किया गया है जो आयुर्वेद ग्रन्थ के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुआ है।

शास्त्र चर्चा परिषद के चौथे अधिवेशन में देश के प्रत्येक भाग के आयुर्वेद विद्वानों ने ११ दिनों तक महास्रोतस (मुख से गुदा तक) के रोगों पर बहुत विस्तार से विचार-विमर्श किया तथा महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए गए। आयुर्वेद शास्त्र की इन चार परिषदों के अन्तर्गत भवन ने लक्षावधि रुपया खर्च किया है।

पंचम अ.भा.आ. शास्त्र चर्चा परिषद हैद्राबाद में आयोजित की गई जिसमें बाह्य चर्मरोगों पर विचार विमर्श किया गया। इसके पश्चात अ.भा.आ. शास्त्र चर्चा परिषद दिल्ली में आयोजित की

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

गई जिसमें चर्मरोग विषय के शेषांग रक्त, रक्तदृष्टि और रक्त विकारों पर विचार किया गया।

औषधं निर्माण के लिए शुद्ध-मूल द्रव्य और पूर्ण गुणकारी वनस्पतियों का संग्रह तथा अन्वेषण करने के उद्देश्य से सुप्रसिद्ध वनौषध-वेत्ता स्व. श्री. भगीरथ जी स्वामी के निर्देशन में जो कार्य आरम्भ किया था उसके अन्तर्गत पटना तथा झाँसी कार्यालय में लगी भैषज्य वाटिकाएँ निरन्तर प्रगति कर रही हैं, और इनमें कीमती वनस्पतियाँ पर्याप्त मात्रा में पैदा हो रही हैं। भवन के वनौषध-अन्वेषण पर्यटक दल नियमित रूप से वनौषध अनुसंधान में संलग्न है। अब तक उत्तराखण्ड काश्मीर, बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री, चित्रकूट, विध्याचल, नीलगिरी, आसाम के दुर्गम वन प्रदेशों में हमारे अन्वेषक-दलों ने कई बार सुनियोजित यात्राएं की है, और सैकड़ों वनौषधियों का अन्वेषण किया है।

आयुर्वेदीय योगों (फार्मूला) पर अनुसंधान-कार्य करते रहने की परम्परा भी हम प्रारंभ से ही अपनाए हुए हैं। इस हेतु काशी हिन्दु विश्व विद्यालय को प्रारम्भ से ही आर्थिक सहायता दी जा रही है। रतनगढ़-चुरु (राजस्थान) के धन्वन्तरि मन्दिर में दमा-श्वास के अनुसंधान के लिए अब तक लाखों रुपया दिया जा चुका है। आँव, पेचिस तथा अमीबिक प्रवाहिका पर गत १३ वर्षो से श्रीकृष्ण जन्मस्थान मथुरा में वैद्यराज पं. रामनारायण शर्मा आयुर्वेद भवन में हो रहे अनुसंधान कार्य पर भवन एक लाख रुपयों से अधिक रुपया औषध सहायता के रूप में दे चुका है।

आयुर्वेद-शास्त्र के साहित्यिक-उत्थान के लिए देश के अधिकारी विद्वानों द्वारा उत्कृष्ट ग्रन्थों को प्रकाशित करने की हमारी परम्परा भी बहुत पुरानी है। छोटी-बड़ी सामयिक और विशेष पुस्तकें एवं ग्रन्थों के अलावा हम अबतक ६५ श्रेष्ठ ग्रन्थ प्रकाशित कर चुके हैं। आयुर्वेद प्रचार के उद्देश्य से ये बहुत कम कीमत पर बिकती हैं, और अब तक इनकी १२ लाख से अधिक प्रतियाँ प्रकाशित हो चुकी है।

हमारे आयुर्वेदोन्नति पूरक अन्य कार्य तथा योजनाएँ

(१) सम्पूर्ण भारतवर्ष के आयुर्वेद के विशेषज्ञों को एकत्रित करके आयुर्वेद की समृद्धि के लिए श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि. संभाषा परिषद करता है। पटना, हरिद्वार, देहली, रतनगढ़ (राजस्थान) लक्ष्मण झूला (हरिद्वार से २० मील आगे गंगातट पर) और हैद्राबाद आदि छः स्थानों पर १० दिन तक चलनेवाली परिषद हो चुकी है।

(२) बैद्यनाथ-प्रतिष्ठान की आयुर्वेद-विकास योजनाएं यथावत् और सुनिर्धारित कार्यक्रम के साथ जारी हैं। शास्त्र-चिन्तन, औषधीय एवं द्रव्य-अन्वेषण तथा उत्कृष्ट ग्रन्थ प्रकाशन की दिशा में बैद्यनाथ प्रतिष्ठान सतत कर्मरत है। एक लक्ष मुद्रा का रामनारायण वैद्य पुरस्कार सर्वोत्कृष्ट आयुर्वेद सम्मान के रूप में प्रथम बार आचार्य दामोदर शर्मा गौड़ को उनके सर्वोत्तम ग्रन्थ 'अभिनव शारीरम्' पर दिया गया था। इसी श्रृंखला के अन्तर्गत सन १९८६ का पुरस्कार, आयुर्वेद सिद्धान्त और पुरा विचय पुस्तक पर वैद्य वी. जे. ठाकर जामनगर। सन १९८७ का पुरस्कार क्रमशः भारतीय वनौषधि विज्ञान द्रव्यगुण सिद्धान्त पुस्तक पर स्व. आचार्य विश्वनाथ द्विवेदी वाराणसी तथा मौलिक शल्य क्रिया पद्धति, क्षारसूत्र पद्धति पुस्तक पर स्व. डा. पी. जे देशपांडे वाराणसी एवं १९८८ का पुरस्कार बुद्ध साहित्य में आयुर्वेद डा. ज्योतिर्मित्र वाराणसी को प्रदान किया गया।

'वैद्य रामनारायण शर्मा – आयुर्वेद रिसर्च ट्रस्ट' उपरोक्त पुरस्कार के अतिरिक्त आयुर्वेदोत्थान की अन्य प्रवृत्तियां भी प्रोत्साहित करता है। हम वैद्य बन्धुओं को आहूत् करते हैं कि वे सोत्साह आयुर्वेद में नवीन खोज करें और ट्रस्ट की सेवाओं से लाभान्वित हो।

(३) प्रतिष्ठान की ओर से छात्रों को आयुर्वेदिक कालेजों में छात्रवृत्तियां प्रदान की जाती हैं। पूना, वरंगल, हैदराबाद, रायपुर एवं नागपुर के आयुर्वेद विश्वविद्यालयों में पं. रामनारायण शर्मा स्वर्णपदक आयुर्वेद की उच्चतम पदवी परीक्षा में सर्वप्रथम आनेवाले छात्र को देने की योजना कार्यान्वित की गयी है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

१, गुप्ता लेन, कलकत्ता-६
तार : प्राणदा कलकत्ता
☎ : २३९२२६५
२३९२६६

वैद्यनाथ भवन रोड
पटना-१ (बिहार)
तार : प्राणदा पटना
☎ : ३५३६४७,
३५३५९२, ३५१८४३
टेलेक्स : ०२२-३१६

गुसाईपुरा, झाँसी
तार : प्राणदा झाँसी
☎ : ४४०९३४,
४४०६६५
कारखाना : ४४१४७८
४४१०७६
टेलेक्स : ०३२६-२०४

ग्रेट नाग रोड, नागपुर-९
तार : प्राणदा नागपुर
☎ : ७४१८६७
७४८६६७, ७४२३२५
टेलेक्स : ०७१५-७३८४

नैनी (इलाहाबाद)
तार : प्राणदा नैनी
☎ : ६९७२०९
६९७३१८, ६९७३२७

सिवनी
मु. ब्रह्मणी, पो. गोपालगंज
जि. सिवनी (म.प्र.)

६ वृहत्
निर्माणशालाएँ

९०० से अधिक
विशिष्ट एजेंसियाँ

६० हजार से
अधिक एजेंसियाँ

देशी दवाओं का सबसे बड़ा
और विश्वासी कारखाना
श्री बैद्यनाथ
आयुर्वेद भवन प्रा. लि.

हमारी दवाएँ गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड हैं। धोके से बचने के
लिये दवा खरीदते समय ट्रेड मार्क मिला ले।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

बैद्यनाथ विशिष्ट उत्पादन

***बैद्यनाथ* ग्रीष्मा** – यथा नाम तथा गुण, गर्मी एवं लू से सुरक्षा प्रदान करती है। पेशाब की जलन, कडक आदि को दूर कर शरीर में शीतलता और ताजगी लाती है। जी मिचलना, उल्टी होना आदि में लाभकारक है।

***बैद्यनाथ* हिलेक्स मलहम** – हाथ पांव के फटने पर शीघ्र लाभदायक है।

***बैद्यनाथ* अशोकारिष्ट स्पेशल** – मासिक धर्म की अनियमितता, रजोविकार, श्वेतप्रदर (ल्यूकोरिया गर्भाशय की सूजन आदि को दूर कर शरीर में रक्त की वृद्धि करती है। अशोकारिष्ट सादा से यह अधिक गुणकारी है।

***बैद्यनाथ* अश्वगंधारिष्ट स्पेशल** – इसके सेवन से मानसिक तनाव दूर होकर निद्रा शान्तिपूर्वक आती है। शरीर को पुष्ट व बलवान बनाता है। शरीर में रक्त बढाकर चुस्ती एवं स्फूर्ति पैदा करता है। उन्माद तथा अपस्मार में भी गुणकारी है।

***बैद्यनाथ* दशमूलारिष्ट स्पेशल** – यह वातनाशक, गर्भाशय शोधक तथा दुग्धवर्धक है। प्रसूताओं को तथा कमजोर एवं शरीर से बहुत कृश स्त्रियों के लिए यह औषधि बहुत लाभदायक है।

***बैद्यनाथ* वीटा-एक्स कैपसूल (स्वर्णयुक्त)** – विशेष गुणकारी शक्तिवर्धक योग। यौवन की ताजगी और स्फूर्ति भरपूर है।

***बैद्यनाथ* मेमोरेक्स टेबलेट** – दिमागी और शारीरिक कमजोरी को दूर कर शरीर को पुष्ट तथा बलवान बनाता है।

***बैद्यनाथ* लायसॉल** – कुदरती जड़ी बूटीयों से युक्त, जुं नाशक।

***बैद्यनाथ* केसरी कल्प** – च्यवनप्राश, केशर, द्राक्षा, मकरध्वज, चाँदी वर्क, अभ्रक भस्म आदि कई बहुमूल्य औषधियों के मिश्रण से तैय्यार किया गया है। यह खून की कमी को दूर करके शरीर को हृष्ट-पुष्ट बना देता है।

***बैद्यनाथ* पंचासव** – बलारिष्ट, द्राक्षासव, दशमूलारिष्ट, लोहासव एवं कुमारी आसव आदि का सम्मिश्रण कर यह तैय्यार किया गया है। यह शरीर के सभी अंगों को पुष्ट कर स्फूर्ति पैदा करता है। बलवीर्यवर्धक उत्तम पाचक व रक्तवर्धक है।

बैद्यनाथ धातु भस्म तथा पिष्टी

एलोपैथिक चिकित्सा में जिस प्रकार इन्जेक्शन तत्काल लाभदायक माने जाते हैं, उसी प्रकार आयुर्वैदिक चिकित्सा-प्रणाली में भस्म के प्रयोग उससे भी अधिक फलप्रद सिद्ध होते है। शीघ्र एवं उत्तम फल-प्राप्ति के लिए आयुर्वेदिक भस्मों के निर्माण की विशुद्धता, द्रव्यों की उत्तमता, निर्माण-सम्बन्धी शास्त्रीय दक्षता एवं समय और साधनों की आवश्यकता होती है। अत: सभी वैद्य या फार्मसी वाले भस्मों को यथार्थ रूप में तैयार नहीं कर पाते। बैद्यनाथ भस्मों की श्रेष्ठता तथा प्रामाणिकता सिद्ध हो चुकी है, जिसके प्रमुख कारण निम्नलिखित है –

(१) बैद्यनाथ – भस्मों की भस्म-क्रिया में कण्डों (उपलों) का ही व्यवहार किया जाता है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

M/s ATMAN TRADERS
3rd Floor Partap Garh
... Mandi, JAMMU

(२) इनमें उन्हीं मूल द्रव्यों का व्यवहार किया जाता है, जिनके धातुत्व और उपधातुत्व का परीक्षण पहले कर लिया गया हो, ताकि निम्न या मिलावट वाले द्रव्यों से भस्म न बने।

(३) बैद्यनाथ – रसायनशाला के अध्यक्ष, पारद के संस्कार और भस्मों के निर्माण की विशेषता के लिए देश भर में सुप्रसिद्ध हैं।

(४) निरीक्षण स्वयं कार्यालय के मैनेजिंग डायरेक्टर करते हैं जो आयुर्वेद के प्रचार-प्रसार और उद्धार कार्य में आज ७१ वर्षों से निरन्तर प्रयत्नशील है।

(५) भस्म और पिष्टी का निर्माण पूर्ण शास्त्रीय विधि से प्रचुर मात्रा में होता है और विपुल स्टाक रहता है।

(६) बैद्यनाथ – भस्मों के विषय में विशेष जानकारी प्राप्त करने के लिए – बैद्यनाथ-प्रकाशन आयुर्वेदीय औषध सेवनविधि नाम की पुस्तक देखें।

***बैद्यनाथ* अकीक पिष्टी** – हृदय तथा मस्तिष्क के लिये बलवर्द्धक एवं वात, पित्त, नाशक है।

***बैद्यनाथ* अकीक भस्म** – रक्त-पित्त, यकृत-विकृति, वात रोगजन्य उन्माद, मूर्च्छा, रक्त-प्रदर नाशक तथा बलकारक है।

***बैद्यनाथ* अभ्रक भस्म** – फेफडे, यकृत् और मन्दाग्नि से उत्पन्न रोगों की सुप्रसिद्ध दवा है. शारीरिक दुर्बलता, रक्ताल्पता, पाण्डू आदि में यह दवा आशातीत फल दिखलाती है।

***बैद्यनाथ* अभ्रक भस्म शतपुटी** – साधारण अभ्रक भस्म की अपेक्षा विशेष गुणयुक्त है।

***बैद्यनाथ* अभ्रक भस्म सहस्त्रपुटी** – शतपुटी से अधिक और तत्काल प्रभावकारी है।

***बैद्यनाथ* कपर्दक भस्म** – पेट का दर्द आफरा, परिणामशूल, अम्लपित्त (एसिडिटी) संग्रहणी से उत्पन्न रोग, गुल्म और अग्निमान्द्य में गुणकारी है।

***बैद्यनाथ* कहरवा पिष्टी** (तृणकान्तमणि) – पित्त-विकार, रक्त-पित्त, सिर-दर्द, चक्कर मस्तिष्क के कृमिरोग और अर्श आदि सब प्रकार के रक्तस्राव में उपयोगी है।

***बैद्यनाथ* काशीस भस्म** – पाण्डु, रक्त की कमी, तिल्ली, लीवर में उपयोगी है।

***बैद्यनाथ* कुक्कुटाण्डत्वक् भस्म** – यह हड्डियों को मजबूती, शरीर को ताकद देती है। बच्चों के सूखारोग तथा स्त्रियों के श्वेत प्रदर में अच्छा लाभ करती है।

***बैद्यनाथ* गोदन्ती भस्म** – ज्वर, सर्दी, जुकाम, खाँसी, सिर-दर्द, बालरोग, इन्फ्लुएंजा की अति लाभकारी दवा है। विषमज्वर (मलेरिया) में शीघ्र लाभप्रद है।

***बैद्यनाथ* जहरमोहरा खताई भस्म** – अजीर्ण, वमन, दाह, अतिसार, यकृत-विकार, घबराहट, जीर्णज्वर, बालकों के हरे-पीले दस्त एवं सूखारोग इनमें अति लाभदायक है।

***बैद्यनाथ* जहरमोहरा खताई पिष्टी** – इसमें सभी गुण उपर्युक्त है।

***बैद्यनाथ* टंकण भस्म** – सर्दी-जुकाम, खाँसी और इन्फ्लुएंजा में लाभदायक है।

***बैद्यनाथ* ताम्र भस्म** – शूल-रोग, मन्दाग्नि, अम्लपित्त में गुणकारी हैं।

***बैद्यनाथ* त्रिवंग भस्म** – गँदला, दूषित द्रव्ययुक्त, बार-बार पेशाब होने में लाभदायक है।

***बैद्यनाथ* संगजराहत भस्म** – प्रमेह, स्वप्नदोष और प्रदर की दवा के साथ इसका मिश्रण करने से शीघ्र फायदा होता है। रक्तपित्त में अच्छा लाभ करती है।

***बैद्यनाथ* नाग भस्म** – अजीर्ण, रक्तगुल्म, मन्दाग्नि, खाँसी, कमजोरी, पेशाब की अधिकता, पाण्डु, वातरोग आदि नष्ट होते हैं तथा शरीर हृष्ट-पुष्ट होता है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

***बैद्यनाथ* प्रवाल भस्म** – पुराना बुखार, खाँसी, रक्तपित्त, अम्लपित्त, तृषा, बालरोग आदि में लाभकारी है। उच्च-कोटि का कैल्शियम है।

***बैद्यनाथ* प्रवाल पिष्टी** – भस्म से अधिक पित्तशामक है। पित्त, जुकाम, रक्तपित्त, अम्लपित्त, आँखों की जलन, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात तथा हृदयरोग में लाभदायक है।

***बैद्यनाथ* प्रवाल भस्म** (चन्द्रपुटित) – चन्द्रपुटित होने के कारण शीतल अधिक होती है।

***बैद्यनाथ* वंग भस्म** – असंयमजनित रोग, मूत्ररोग तथा दुर्बलता नाशक है, शक्तिवर्द्धक है।

***बैद्यनाथ* वैक्रान्त भस्म** – पुराने बुखार-खाँसी, शारीरिक क्षीणता में लाभदायक है।

***बैद्यनाथ* मण्डूर भस्म** – यह पुराने मण्डूर से तैयार होती है। इससे बाल यकृत, पाण्डु, कामला, मन्दाग्नि दूर होती है। बच्चों के लिये उपयोगी है।

***बैद्यनाथ* मधुमण्डूर भस्म** – पाण्डु-रोग, यकृत-विकार में लाभकारी तथा रक्तवर्धक है।

***बैद्यनाथ* मयूरचन्द्रिका भस्म** – हिचकी, वमन और श्वास के लिये उपयोगी है।

***बैद्यनाथ* माणिक्य भस्म** – शरीर की सब धातुओं को पुष्ट कर बुद्धि की वृद्धि करती है। मन्दाग्नि और संग्रहणी में शीघ्र लाभ होता है, तथा दोनों प्रकार के रक्तचाप में लाभदायक है।

***बैद्यनाथ* मुक्ताशुक्ति पिष्टी** – शारीरिक दुर्बलता, ज्वर-युक्त खाँसी, पित्तदाह, श्वास, पित्तज परिणामशूल, यकृतशूल, अम्लपित्त, रक्त-पित्त, रक्तस्राव आदि में लाभदायक है।

***बैद्यनाथ* मुक्ताशुक्ति भस्म** – यह मुक्ताशुक्ति पिष्टी के समान ही लाभदायक है।

***बैद्यनाथ* मोती भस्म** – चित्तभ्रम, घबराहट, धडकन, स्मृतिभंग, अनिद्रा, नेत्ररोग आदि में विशेष लाभकारी है। हृदय को बल देती है, अति सौम्य है।

***बैद्यनाथ* मोती भस्म नं. १** – मोती भस्म साधारण से यह विशेष गुणकारी है, क्योंकि इसमें पडनेवाले मोती उत्तम प्रकार के हैं।

***बैद्यनाथ* मोती भस्म** (चन्द्रपुटित) – इसमें पित्तशामकता और शीतलता अधिक है।

***बैद्यनाथ* मोती पिष्टी** – उत्तम कैल्शियम है। निम्नोक्त नं. १ से कुछ कम गुणवाली है।

***बैद्यनाथ* मोती पिष्टी सर्वोत्तम नं. १** – यह नेत्र-विकार, सिर दर्द, कमजोरी, घबराहट, हृदय-दौर्बल्य आदि की उत्तम दवा है। दिल और दिमाग को ताकद देती है।

***बैद्यनाथ* यशद भस्म** – खाँसी, अतिसार, संग्रहणी में लाभदायक है। कफ-पित्त नाशक है।

***बैद्यनाथ* रौप्य (चाँदी) भस्म** – शारीरिक दुर्बलता, वात पित्त के विकारों और उदर की वायु-विकृति में गुणकारी है। बृंहण और वृष्य है।

***बैद्यनाथ* रौप्यमाक्षिक भस्म** – यह पाण्डु, कामला, यकृत-विकार आदि मे लाभकारी है।

***बैद्यनाथ* लौह भस्म** – यह यकृत-प्लीहा, उदर रोग, पाण्डु, कामला, कृमि रोग, शोथ आदि में अच्छा लाभ करती है, यह रक्तवर्धक है।

***बैद्यनाथ* लौह भस्म शतपुटी** – यह साधारण लौह भस्म से अधिक गुणयुक्त है।

***बैद्यनाथ* लौह भस्म सहस्रपुटी** – यह शतपुटी लौह भस्म से भी अधिक श्रेष्ठ है।

***बैद्यनाथ* कान्तलौह भस्म** – कान्तलौह श्रेष्ठ होता है। लौह भस्म के गुण इसमें अधिक हैं

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

बैद्यनाथ शंख भस्म – यकृत, तिल्ली, उदर के विकार, आमांश संग्रहणी, पेट-दर्द, अम्लपित्त, गुल्म, अजीर्ण आदि में यह विशेष उपयोगी है। यह पित्ताधिक्य को कम करती है।

बैद्यनाथ श्रृंग भस्म – निमोनिया, इन्फ्लुएंजा, सर्दी, जुकाम, पार्श्वशूल और क्षीणता से उत्पन्न खाँसी में विशेष लाभ करती है। इससे कफ पतला होकर निकल जाता है।

बैद्यनाथ संगेयशव पिष्टी – हृदय तथा मस्तिष्क सम्बन्धी सभी विकारों में गुणकारी है।

बैद्यनाथ स्फटिका भस्म – कफ के विकार, ज्वर, निमोनिया आदि में इसका उपयोग होता है। मुंह के छाले तथा घावों को धोने में अच्छा लाभ करती है।

बैद्यनाथ स्वर्ण भस्म – यह शारीरिक और मानसिक ताकत को बढाकर प्राय: सभी पुराने रोगों में लाभ करती है। दिल और दिमाग को ताकद देती है और विषनाशक है।

बैद्यनाथ स्वर्णमाक्षिक भस्म – अनिद्रा, दिमाग की कमजोरी, पित्त विकार, पाण्डु, कामला को दूर करके खून बढाने में उपयोगी है। सभी बाल रोगों में हितकर है।

बैद्यनाथ हजरुलयहूद भस्म – इसे पथरी – रोग की प्रारम्भिक अवस्था में देने यह पथरी को गलाकर बहा देती है। पेशाब साफ लाती है। यह अति मूत्रल है।

बैद्यनाथ कूपीपक्व रसायन

गुण-वृद्धि के लिये हमारे यहाँ संस्कारित पारद से ही समस्त औषधियाँ बनाई जाती हैं। इस पर भी जहाँ द्विगुण और षड्गुण शब्द आये है वहाँ उनकी विशेष उपयोगिता समझनी चाहिए। इस क्रिया से औषधि की शक्ति निश्चय ही बहुत बढ जाती है।

बैद्यनाथ चन्द्रोदय (अन्तर्धूम) – इससे दिल और दिमाग को ताकत मिलती है। नाडी की गति क्षीण होने पर इससे तुरन्त लाभ होता है। अनुपान भेद से अनेक रोगों में उपयोगी है।

बैद्यनाथ चन्द्रोदय (बहिर्धूम) – उपर्युक्त गुणों से कुछ ही कम गुण इसमें है।

बैद्यनाथ ताम्र सिन्दूर – यह रक्तशोधक और कीटाणुनाशक है। फेफडों में जमे हुए कफ को निकालता है। हृदय और रक्तवाहिनी नाडियों को बल देता है।

बैद्यनाथ पूर्ण चन्द्रोदय – शारीरिक क्षीणता, मानसिक दुर्बलता आदि के लिए यह उत्तम पौष्टिक रसायन है।

बैद्यनाथ मकरध्वज – यह पारदघटित रसायनों में सर्व प्रमुख है। केवल मकरध्वज से ही अनेक रोग अच्छे होते हैं। बल व कान्ति की वृद्धि करता है। सन्निपात ज्वर में नाडी की गति क्षीण हो जाने पर कस्तूरी के साथ इसके प्रयोग से आशातीत लाभ प्राप्त होता है।

बैद्यनाथ मकरध्वज षड्गुणबलिजारित -- गन्धक छ: गुना ज्यादा पडने के कारण मकरध्वज के गुण इसमें विशेष रूप से बढ जाते है।

बैद्यनाथ सिद्धमकरध्वज स्पेशल – (सुवर्ण-मुक्ता-युक्त) – अष्टादश संस्कारयुक्त पारद से निर्मित, और मुक्ता-युक्त यह मकरध्वज शारीरिक एवं मानसिक दौर्बल्य मिटाकर शरीर में नई शक्ति और स्फूर्ति का संचार करता है। निमोनिया, सर्दी, कफ, खाँसी, श्वास, ज्वरावस्था की व्याकुलता में उपयोगी है।

बैद्यनाथ सिद्धमकरध्वज – गुण-धर्म उपर्युक्त से किंचित कम है।

बैद्यनाथ स्वर्ण मकरध्वज – (बुढापा रोकने की उत्तम दवा) ४० वर्ष के बाद की शारीरिक और मानसिक क्षति पूर्ति और युवावस्था कायम रखने के लिए बहुत कार्यकारी है। सेक्स क्षमता

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection, Jammu. Digitized by eGangotri

और ओजवृद्धि के लिए अन्तस्रावी ग्रन्थियों को उत्तेजित करके जर्जरित शरीर में नया उत्साह, हार्मोन्स स्फूर्ति व नयी उमंग पैदा करता है।

***बैद्यनाथ* मल्ल सिन्दूर** – वात और कफ-विकार, आमवात, श्वास, फेफडे में जमे हुए कफ में इससे अच्छा लाभ होता है। दमा में बहुत गुणकारी और रक्तशोधक है।

***बैद्यनाथ* रजतसिन्दूर** – यह रस, रक्त आदि सप्त धातुओं का पोषण करके दिल दिमाग को स्वस्थ रखता है। पेट में वायु-संचय नहीं होने देता।

***बैद्यनाथ* रस सिन्दूर** – उरस्तोय, निमोनिया, सन्निपात, संग्रहणी, कास, दमा आदि रोगों को दूर कर शरीर में बल कान्ति की वृद्धि करता है।

***बैद्यनाथ* रस सिन्दूर षड्गुणबलिजारित** –उपर्युक्त रस सिन्दूर से अधिक गुणकारी है।

***बैद्यनाथ* व्याधिहरण रसायन** – यह संधिवात, मुखव्रण, चकत्ता आदि रक्तविकार तथा उपदंश को शमन करनेवाली उत्तम औषधि है।

***बैद्यनाथ* शिला सिन्दूर** – इसके सेवन से रक्त-विकार और फोडे फुन्सी आदि चर्मरोग, ठंडी, लगकर आने वाले बुखार और शीतांग सन्निपात में बहुत लाभ होता है।

***बैद्यनाथ* स्वर्ण सिन्दूर** – इसके सेवन से बल, पौरुष, स्मरण-शक्ति और कान्ति की वृद्धि होती है। साधारण व सन्निपात-ज्वर, खाँसी और मन्दाग्नि में बहुत लाभदायक है।

***बैद्यनाथ* समीरपन्नग** – सन्निपात में नाडी की गति क्षीण हो जाने पर इससे लाभ होता है। यह स्नायुमंडल को बलवान बनाने की श्रेष्ठ दवा है।

***बैद्यनाथ* सुवर्ण समीरपन्नग रस** – कठिन वात-विकारों व पक्षाघात की अच्छी दवा है।

***बैद्यनाथ* स्वर्णबंग** – यह शरीर की कमजोरी एवं असंयमजनित बीमारियों को दूर कर मूत्र-विकारों में लाभकारी है।

बैद्यनाथ रस रसायन

गुणधर्म – आयुर्वेदीय चिकित्सा में रसों को अति श्रेष्ठ स्थान प्राप्त है। हमारे वैद्यों के पास यदि रस-चिकित्सा न होती, तो एलोपैथी के सामने उनका ठहरना कठिन था। यदि वैद्यों के पास प्रधान-प्रधान रस न हों तो उन्हें शस्त्रहीन योद्धा समझना चाहिए।

***बैद्यनाथ* रसों की विशेषता** – रसों में प्रधान द्रव्य पारद या हिंगुल है। हमारे यहां प्रत्येक रस में विशुद्ध पारद और हिंगुल डाला जाता है। बाजार में हिंगुल के नाम से जो वस्तु मिलती है, वह अशुद्ध होता है। वह हिंगुल का गुण कभी नहीं दे सकता। हम निरन्तर इस बात का प्रयत्न करते हैं कि आयुर्वेद की औषधियाँ एलोपैथी दवाओं के सामने विशेष गुणप्रद साबित हों। उचित मूल्य में प्रामाणिक रस-रसायन चाहने वाले निश्चय ही हमारी दवाओं से प्रभावित होंगे।

सेवन-विधि – अनुपान और गुणों की विशेष जानकारी के लिए हमारे विक्रेताओं के यहाँ 'आयुर्वेदीय औषध सेवनविधि' नाम की पुस्तक देखिए। यों प्रत्येक रस रसायन की पैकिंग के साथ उनकी सेवन-विधि और पथ्य-परहेज के नियम संलग्न रहते ही है।

***बैद्यनाथ* अगस्तिसूतराज रस** – अतिसार, संग्रहणी, आमांश शूल, मन्दाग्नि में लाभकारी है। पुराने अतिसार में इससे विशेष लाभ होता है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

बैद्यनाथ अग्निकुमार रस – पाचकाग्नि को प्रदीप्त कर भूख बढ़ाने में सर्वोत्तम है।

बैद्यनाथ अग्निसंदीपन रस – मन्दाग्नि, अजीर्ण, अम्लपित्त और मुंह मे खट्टा पानी आने में लाभकारी।

बैद्यनाथ अमरसुन्दरी बटी रस – इससे सभी प्रकार के वात रोगों में लाभ होता है। पेट में वायु भर जाने पर इसका व्यवहार श्रेष्ठ है।

बैद्यनाथ अमीर रस – रक्त शोधक तथा कठिन आमवात की प्रसिद्ध दवा है।

बैद्यनाथ अर्शकुठार रस – इससे दस्त साफ आकर बवासीर के मस्से सुख जाते हैं।

बैद्यनाथ अश्वकंचुकी रस – उदर-विकार में इसके जुलाब से लाभ होता है।

बैद्यनाथ आनन्द भैरव रस (कास) – कास, श्वास, सन्निपात, ज्वर, अतिसार और कफ के विकार में इससे अच्छा लाभ होता है।

बैद्यनाथ आनन्द भैरव रस (ज्वर) – बुखार को पकाकर उतार देता है। सर्वांग बेचैनी, वेदनायुक्त इन्फ्लुएंजा आदि सब प्रकार के बुखार को शीघ्र कम करता है।

बैद्यनाथ आमवातारि रस – आमवात से होने वाले दर्द और शोथ में लाभ होता है।

बैद्यनाथ आरोग्यवर्द्धिनी बटी – अजीर्ण, मलावरोध, रक्त-विकार, पाण्डु, कामला, ज्वर, शोथ, और यकृत रोगों (Liver Complaints) की बहुत उपयोगी दवा है। लीवर के खराब होने से होनेवाले सभी रोगों पर जैसे रक्ताल्पता, उदासीनता, तथा बालकों का लीवर बढना (यकृत वृद्धि) आदि में लाभकारी है।

बैद्यनाथ इच्छाभेदी रस – पेट में संचित मल को साफ करता है तथा तीव्र विरेचक है।

बैद्यनाथ उन्माद-गजकेशरी – उन्माद, अपस्मार आदि में उपयोगी है।

बैद्यनाथ एकांगवीर रस – गृध्रसी (साईटिका), विकलांगता, अर्दित आदि तीव्र वात विकारों और अंगों में आयी हुई अशक्तता को दूर करने में विशेष फलदायक है।

बैद्यनाथ कनकसुन्दर रस – दमा-खाँसी छाती में जमे हुए कफ को निकालता है।

बैद्यनाथ कफकुठार रस – अधिक कफस्रावी, खाँसी और दमा में लाभकारी है।

बैद्यनाथ कफकेतु रस – कफ का बुखार, खाँसी, श्वास तथा फ्लू में लाभ करता है।

बैद्यनाथ कर्पूर रस – पतला दस्त, संग्रहणी आदि में लाभदायक है।

बैद्यनाथ कल्पतरू रस – कफ और नये ज्वर में बहुत ही लाभ करता है। कास, सर्दी, जुकाम अग्निमांद्य, आदि में गुणकारी है। बेहोशी में इसका नस्य भी दिया जाता है।

बैद्यनाथ कल्याणसुंदर रस – (सुवर्ण-युक्त) – यह निमोनिया और प्लुरसी में संचित कफ और जल का शोषण करके सब प्रकार के उपद्रव्यों को शमित कर हृदय को बल देता है।

बैद्यनाथ कस्तूरीभूषण रस – सन्निपात-ज्वर में जब हाथ-पैर ठंडे पड कर नाडी की गति क्षीण होती जा रही हो, तब इसके उपयोग से शरीर में शीघ्र ही लाभ होता है। वात रोगों में गुणकारी है।

बैद्यनाथ कस्तुरीभैरव रस – मन्थर-ज्वर, सन्निपात के तेज मियादी बुखार और प्रलाप में विशेष लाभकारी है। यह जल्द लाभ पहुँचनेवाली शक्तिशाली दवा है।

बैद्यनाथ कस्तूरीभैरव रस बृहत् – (सुवर्ण-मोती-युक्त) – सन्निपात की तीव्र वायु से मेधा तथा नाडी कमजोर होने पर इसका व्यवहार करना चाहिए।

बैद्यनाथ कामदुधा रस – (मोती-युक्त) – पित्तजन्य सभी रोगों की यह श्रेष्ठ दवा है। रक्तपित्त अम्लपित्त, भ्रम, गर्भावस्था के वमन एवं रक्तस्राव में बहुत उपयोगी है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

***बैद्यनाथ* कामदुधा रस** – रक्तपित्त, अम्लपित्त, भ्रम आदि पित्त-विकारों में लाभकारी है।

***बैद्यनाथ* कुमारकल्याण रस** – **(सुवर्ण-मोती-युक्त)** – यह बच्चों के कास, श्वास, शारीरिक क्षीणता, सूखा, वमन, संग्रहणी, पसली चलने आदि में शीघ्र फायदा पहुंचाता है। चेचक और मोतीझरा में उपयोगी है। बच्चों को हृष्टपुष्ट बनाता है।

***बैद्यनाथ* क्रव्याद रस** – मन्दाग्नि मूलक रोगों की श्रेष्ठ दवा है, पाचक है।

***बैद्यनाथ* कृमिकुठार रस** – यह हर प्रकार के कृमि-रोगों में परमोपयोगी है।

***बैद्यनाथ* गंगाधर रस** – अतिसार, संग्रहणी, आँव, खून के दस्त में बहुत गुणकारी है।

***बैद्यनाथ* गंधक रसायन** – सब प्रकार के रक्त-विकार, अशुद्ध पारे के सेवन से उत्पन्न विकार खाज-खुजली, फोडा-फुन्सी आदि रक्त-रोग एवं चर्मरोग में उपयोगी व अग्निवर्द्धक है।

***बैद्यनाथ* गर्भचिन्तामणि रस बृहत** – **(सुवर्ण युक्त)** – इससे गर्भ की रक्षा और पोषण होता है। गर्भिणी के ज्वर, दाह, सन्निपात और दुर्बलता में बहुत लाभकारी है।

***बैद्यनाथ* गर्भपाल रस** – गर्भ के कारण पैदा होने वाले वमन, अरुचि, ज्वर आदि की अच्छी दवा है गर्भ-पोषण और गर्भिणी के बल-वर्धन के लिये भी अत्युत्तम है।

***बैद्यनाथ* ग्रहणीकपाट रस** – पुराने अतिसार और संग्रहणी में इसका उपयोग शीघ्र लाभदायक है। आँव (पेचिश) के विकार मिटते हैं तथा अग्नि प्रदीप्त होती है।

***बैद्यनाथ* चतुर्भुज रस** – **(सुवर्ण-युक्त)** – अपतन्त्रक, दिमागी कमजोरी, आक्षेपक आदि वात-रोगों में लाभकारी और कम्पवात पर विशेष लाभकारी है।

***बैद्यनाथ* चतुर्मुख रस** – **(सुवर्ण-युक्त)** – समस्त प्रकार के वायु-रोगों, शारीरिक क्षीणता में लाभ होता है। रक्त चाप कम होने पर भी लाभ करता है।

***बैद्यनाथ* चन्द्रकला रस** – (मोती युक्त) – रक्त-पित्त, रक्त-लाभ, मूत्रकृच्छ्र, दाह, वमन, अजीर्ण ज्वर एवं अन्यान्य पित्त-विकारों में लाभकारी है।

***बैद्यनाथ* चन्द्रशेखर रस** – (गोरोचन-युक्त) – जीर्णज्वर, कास, श्वास, वमन, अजीर्ण, तीव्र वात-विकार, डब्बा, धनुर्वात आदि बच्चों के सभी रोगों में उपकारी है।

***बैद्यनाथ* चन्द्रामृत रस** – खाँसी (कास) में उपयोगी। जुकाम, गले की खराबी, फ्ल्यू, अजीर्ण-ज्वर, श्वास और मन्दाग्नि में लाभप्रद है।

***बैद्यनाथ* चिन्तामणि चतुर्मुख रस** – **(सुवर्ण-युक्त)** – शारीरिक क्षीणता, मानसिक दुर्बलता को दूर कर अनिद्रा, हृद्रोग, घबराहट, भ्रम आदि को दूर करता है।

***बैद्यनाथ* चिन्तामणि रस** – **(सुवर्ण-मोती-अम्बर-युक्त)** – यह मानसिक दुर्बलता को दूर कर अनिद्रा हृद्रोग, घबराहट, भ्रम आदि को दूर करता है।

***बैद्यनाथ* जयमंगल रस** – **(सुवर्ण युक्त)** – सभी प्रकार के पुराने बुखार (जीर्ण ज्वर), जटिलज्वर, धातुगत ज्वर और उसके उपद्रव इससे शान्त होते हैं। शरीर को पुष्ट करता है।

***बैद्यनाथ* ज्वरांकुश रस** – मलेरिया बुखार की प्रसिद्ध दवा है। वात, कफ के बुखार में अधिक उपयुक्त होता है। सर्दी, जुकाम और इन्फ्लुएंजा में भी शीघ्र गुणकारी है।

***बैद्यनाथ* तारकेश्वर रस** – बार बार पेशाब लगने अथवा के सात विभिन्न दूषित गंदले पदार्थों के निकलने की अवस्था में लाभ करता है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

बैद्यनाथ तालकेश्वर रस – खाज खुजली आदि कठिन चर्म रोग और रक्त-दोष दूर होते हैं।

बैद्यनाथ त्रिभुवनकीर्ति रस – संक्रामक रूप से फैले इन्फ्लुएंजा में शीघ्र आरोग्य देता है। सर्वांग में तीव्र वेदना, तापमान का अधिक होना, सर्दी, जुकाम, गले की खराबी, सूखी खांसी, विशेषत: वात कफ ज्वरों में अधिक लाभदायक है।

बैद्यनाथ त्रैलोक्य चिन्तामणि रस – (सुवर्ण-मोती-युक्त) – नये पुराने सब प्रकार के वात रोगों में लाभदायक है। अंगों का जकडना और उनकी अशक्तता दूर होती है।

बैद्यनाथ दन्तोद्भेदगदान्तक रस - बच्चों के दाँत निकलने के समय हरे-पीले और पतले दस्त, उल्टी, अपच, ज्वर आदि की शिकायतें होती हैं, उसमें फायदेमन्द है।

बैद्यनाथ नागार्जुनाभ्र रस – अनिद्रा, भ्रम हृदयदौर्बल्य, अम्लपित्त में उपयोगी। बल, कान्ति, शक्तिवर्द्ध है। निम्न रक्तचाप तथा रक्ताल्पता में उपयोगी है।

बैद्यनाथ नित्यानंद रस – यह श्लीपद (फीलपाँव) की शास्त्रोक्त दवा है। कफ और वातजनित शोथ कोषवृद्धि आदि रोगों में भी इससे लाभ होता है।

बैद्यनाथ पीयूषवल्ली रस – संग्रहणी, अतिसार आदि उदर विकारों व आँव, शूल, बवासीर, मन्दाग्नि में विशेष लाभप्रद है।

बैद्यनाथ पुष्यधन्वा रस -- स्त्रियों के लिए उपकारी है।

बैद्यनाथ पूर्णचन्द्र रस – इसके सेवन से शरीर पुष्ट और स्नायु-मण्डल मजबूत होते है।

बैद्यनाथ पूर्णचन्द्र रस बृहत – (स्वर्ण-युक्त) – यह बहुत ही पौष्टिक है।

बैद्यनाथ प्रतापलंकेश्वर रस – प्रसव के बाद होनेवाली खाँसी, प्रसूत ज्वर, अतिसार वायु-विकार, मन्दाग्नि आदि प्रसूत रोगों की प्रसिद्ध दवा है। एन्टीसेप्टिक है।

बैद्यनाथ प्रदरान्तक रस – स्त्रियों के लिए उपकारी है।

बैद्यनाथ प्रवाल पंचामृत (मोती-युक्त) – इससे उदररोग, अजीर्ण, अम्लपित्त, संग्रहणी, गुल्म, यकृत, प्लीहा-वृद्धि, अश्मरी, श्वास आदि रोग दूर होते है। पित्तशामक और रक्तवर्द्धक है। आन्त्र क्षय तथा वात शोथ में परम गुणकारी है।

बैद्यनाथ बंगेश्वर रस बृहत् (सुवर्ण-मोती-युक्त) – इससे नई पुरानी सभी तरह की दुर्बलता दूर होती है। परम पौष्टिक और ओजर्द्धक रसायन है।

बैद्यनाथ वसन्तकुसुमाकर रस (सुवर्ण-मोती-युक्त) – कीमती उपादानों से तैयार हुआ आयुर्वेद का यह श्रेष्ठ उत्पादन है। यह हृदय तथा मस्तिष्क को स्वस्थ तथा बलवान बनाता है। रस रक्तादि सप्त धातुओं को बढाकर शरीर को पुष्ट और निरोगी रखता है। श्वास, अम्लपित्त, शारीरिक व मानसिक दुर्बलता, आदि को मिटाकर जीर्ण-शीर्ण शरीर को नवीन शक्ति प्रदान करने में अत्युत्तम है।

बैद्यनाथ वसन्त तिलक रस (सुवर्ण-मोती-युक्त) – यह परम पौष्टिक है।

बैद्यनाथ वसन्तमालती रस (सुवर्ण-मोती-युक्त) – पुराने बुखार-खाँसी, क्षीणता, दमा, जीर्ण ज्वर, प्रसूति, मन्दाग्नि, कमजोरी आदि में बहुत फायदेमन्द है। शीत ऋतु में बीमार न होने पर भी विशेष सेवन योग्य रसायन है।

बैद्यनाथ बालरोगात्मक रस – इससे बच्चों के सब तरह के आम दोष, दस्त, खाँसी, सर्दी-जुकाम, पसली चलना तथा दाँत निकलने के समय के उपद्रव दूर होते हैं।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

***बैद्यनाथ* बहुमूत्रान्तक रस** – यह मूत्र की मात्रा को सीमित करता है।

***बैद्यनाथ* बालार्क रस (केशर-गोरोचन-युक्त)** – बालकों के वात और कफ सम्बन्धी विकार, अतिसार, कृमि, ज्वर, खाँसी, वमन आदि में इससे लाभ होता है।

***बैद्यनाथ* बोलबद्ध रस** – बवासीर, खाँसी, पेचिश, प्रदर आदि किसी भी रोग में शरीर के किसी भी भाग से खून आने में लाभकारी है।

***बैद्यनाथ* मकरध्वज गुटिका (सुवर्ण-युक्त)** – इसके सेवन से शरीर का वजन बढ़ता है। सुनिद्रा और मानसिक बल प्राप्त होता है। यह बाजीकरण भी है।

***बैद्यनाथ* मन्मथ रस** – शरीर की दुर्बलता नष्ट कर बल-विक्रम को बढ़ाता है।

***बैद्यनाथ* महाज्वरांकुश रस** – विषम ज्वर, पारी से आनेवाला ज्वर, जीर्णज्वर आदि में प्रयोग करने पर बुखार उतरता है। मलेरिया में लाभदायक हैं।

***बैद्यनाथ* महामृत्युंजय रस** – सब प्रकार के बुखारों, विशेषकर मलेरिया में अत्यधिक उपयोगी है। इससे मल-मूत्रावरोध दूर होता है और पसीना आकर बुखार उतर जाता है।

***बैद्यनाथ* महालक्ष्मी विलास रस (सुवर्ण-युक्त)** – फेफड़े की दुर्बलता, बार-बार होने वाले सर्दी, जुकाम, नजला, न्यूमोनिया, इन्फ्लुएंजा और मियादी बुखार में लाभदायक है।

***बैद्यनाथ* महालक्षी-विलास रस (शिरो.)** – जुकाम (प्रतिश्याय), दुष्ट प्रतिशाय, पीनस, नासार्बुद, साइनस तथा शिरोरोगों में परम गुणकारी है।

***बैद्यनाथ* महावात-विध्वंसन रस** – कठिन वात रोग, अंगों में आयी हुई अशक्तता ग्रंथिक-सन्निपात (प्लेग) आमवात, आदि रोगों की सफल औषधि है।

***बैद्यनाथ* महामृगांक रस (सुवर्ण-मोती-युक्त)** – पुराने बुखार खाँसी की प्रसिद्ध दवा है। श्वास-यंत्रों की विकृति को दूरकर उनकी क्रिया को नियमित करता है।

***बैद्यनाथ* मुक्तापंचामृत रस (मोती-युक्त)** – कास-श्वास, पुराने बुखार, फेफडे की कमजोरी में गुणकारी है। इससे शरीर को उत्तम कैल्शियम प्राप्त होता है। अग्निवर्द्धक व अम्लपित्त नाशक है।

***बैद्यनाथ* मृगांक रस (सुवर्ण-मोती-युक्त)** – यह पुरानी खाँसी, बुखार, कफ-युक्त खाँसी, रक्तमिश्रित खाँसी, रक्त-पित्त में विशेष लाभकारी है।

***बैद्यनाथ* मृत्युंजय रस** – तेज-से-तेज बुखार को पसीना लाकर शीघ्रातिशीघ्र उतारता है। सर्दी, जुकाम, फ्लू, मलेरिया की सुप्रसिद्ध दवा है।

***बैद्यनाथ* योगेद्र रस (सुवर्ण-मोती-युक्त)** – वायु विकृति के कारण अनिद्रा, बेचैनी, अंगों की अशक्तता घबराहट आदि में तथा रक्तचाप अधिक व कम इन दोनों अवस्थाओं में लाभदायक है।

***बैद्यनाथ* याकूती (सुवर्ण-मोती-केशर-अम्बर-युक्त)** – नाडीक्षीणता, शरीर का ठण्डा पड जाना, पसीना, दम उखड जाना आदि में उपयोगी पुष्टिकारक हृद्य हैं। मानसिक दौर्बल्य, अनिद्रा, भ्रम आदि में विशेष गुणकारी हैं।

***बैद्यनाथ* रस पीपरी** – बालकों के ज्वर खाँसी, जुकाम, उल्टी, पतले दस्त एवं दाँत उठने की तकलीफ दुर कर माँ की तरह उनकी रक्षा करती है।

***बैद्यनाथ* रसमाणिक्य** – यह सब प्रकार के रक्त विकारों एवं चर्म-रोगों को नाश करने में प्रसिद्ध हैं। मुँह में होनेवाले छालों की उपयोगी दवा है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

बैद्यनाथ रस राज रस (सुवर्ण-युक्त) – वात-विकार विशेषतः शारीरिक अंगों की अशक्तता, आक्षेपक, कानों में आवाज होने आदि पर इसका उपयोग किया जाता है। रक्त चाप (ब्लडप्रेशर) नियमित करता है।

बैद्यनाथ राजमृगांक रस (सुवर्ण-युक्त) – नई पुरानी खाँसी, क्षीणता, रक्तपित्त, श्वास, कास में इससे विशेष लाभ होता है। शारीरिक और मानसिक बल प्रदान करता है।

बैद्यनाथ रामबाण रस – बदहजमी, मन्दाग्नि, आँव व संग्रहणी की प्रसिद्ध दवा है।

बैद्यनाथ लघुमालिनी वसन्त रस – सुवर्ण मालिनी वसन्त से अल्प गुण हैं।

बैद्यनाथ लक्ष्मीविलास रस (नारदीय) – निमोनिया और मियादी बुखार एवं इन्फ्लुएन्जा में लाभकारी । तेज बुखार, फ्ल्यु के लिये सर्वश्रेष्ठ अनुभूत दवा है।

बैद्यनाथ वातकुलान्तक रस – अपस्मार, अपतन्त्रक, पक्षाघात आदि सभी प्रकार के वातरोगों की श्रेष्ठ दवा है।

बैद्यनाथ वातचिन्तामणिरस बृहत (सुवर्ण-मोती-युक्त) – कठिन वात रोगों और सर्वांग वेदना की प्रसिद्ध शास्त्रीय औषधि हैं। हृदय और मस्तिष्क को बल प्रदान करता है। घबराहट, अनिद्रा, अस्थिरता, आदि के लिए प्रसिद्ध एवं हृद्य है।

बैद्यनाथ वातगजांकुश रस – कठिन वात-विकारों में बहुत उपयोगी है।

बैद्यनाथ वातविध्वंसन रस – शीतांग सन्निपात, वायु और कफ के विकार, सर्दी लग जाने से होनेवाले कष्ट तथा शूल, श्वास, कास आदि रोग दुर होते हैं।

बैद्यनाथ शक्रवल्लभ रस (सुवर्ण-युक्त) – पौष्टिक रसायन है। शारीरिक क्षीणता, दुर्बलता आदि में स्थायी लाभ करता हैं। जाडे के दिनों में विशेष सेवनीय हैं।

बैद्यनाथ शिरःशूलादिव्रज रस – सब प्रकार के पुराने सिर दर्द की विशेष दवा है।

बैद्यनाथ श्रृंगाराभ्र रस – सुखी और कफयुक्त खाँसी, दोनों में गुणकारी हैं।

बैद्यनाथ श्वासकुठार रस –यह दवा खाने और सुंघने, दोनों कार्य में आती है। खांसी-श्वास व दमा में खाने से तत्काल लाभ होता है। मुर्च्छा या बेहोशी में सुंघाने से लाभ होता है।

बैद्यनाथ श्वासचिन्तामणि रस – (सुवर्ण-मोती-युक्त) – पुराने और कठिन श्वासरोगों में लाभदायक है हताश रोगी भी इससे आराम पाता है।

बैद्यनाथ सन्निपातभैरव रस – ज्वर और सन्निपात के तीव्र विकारों में लाभदायक है।

बैद्यनाथ सर्वांगसुन्दर रस – यक्ष्माधिकार (सुवर्ण-मोती-युक्त) – सब प्रकार के पुराने खाँसी युक्त ज्वर, जीर्णज्वर, संग्रहणी तथा बाल-रोगों में बहुत लाभकारी है।

बैद्यनाथ स्मृतिसागर रस – स्मरण-शक्ती को बढाकर ज्ञान-तन्तुओं को बल देता हैं।

बैद्यनाथ सुवर्णभूपति रस (सुवर्ण-युक्त) – आमवात, उरुस्तम्भ, कम्पवात, कमर का दर्द, गुल्म, कामला, संग्रहणी, उदर रोग, पथरी, कब्ज, विष-विकार आदि रोगों में उपयोगी है।

बैद्यनाथ सुवर्णमालिनी बसन्त बृहत् (सुवर्ण-मोती-केशर-युक्त) – ज्वर युक्त पुरानी खाँसी, शारीरिक क्षीणता, श्वास आदी में लाभप्रद और पुष्टिकारक है।

बैद्यनाथ सुवर्णमालिनी वसन्त – पुराना बुखार, खाँसी, शारीरिक क्षीणता, दमा, जीर्णज्वर, कमजोरी आदि में लाभप्रद है।

बैद्यनाथ सुतशेखर रस नं १ (सुवर्ण-युक्त) – अम्लपित्त की प्रसिद्ध महौषधी है। खट्टा वमन, गले की जलन, भ्रम, चक्कर आना, मन्दाग्नि, पतला दस्त आदि में उपयोगी है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

बैद्यनाथ सुतशेखर रस (सुवर्ण-रहित) – इसमें नं. १ के गुण कुछ अल्प मात्रा में है।

बैद्यनाथ सुतिकाभरण रस (सुवर्ण-युक्त) – गुण-धर्म सुतिकाविनोद रस बृहत रस के समान है। स्वर्णयुक्त होने से विशेष गुणकारी है।

बैद्यनाथ सोमनाथ रस बृहत (सुवर्ण-युक्त) – स्त्रियों के लिये विशेष गुणकारी है।

बैद्यनाथ हृदयार्णव रस – हृदय को बलवान बनानेवाली उत्तम दवा है।

बैद्यनाथ हेमगर्भ पोट्टली (सुवर्ण-मोती-युक्त) – पुरानी खाँसी, शारीरिक क्षीणता, संग्रहणी आदि रोग अच्छे होते है। यह दीपन, त्रिदोषनाशक तथा अग्निवर्धक है।

बैद्यनाथ हेमनाथ रस (सुवर्ण-युक्त) – बहुमूत्र में शीघ्र लाभ करता है। वृक्क और स्नायु मण्डल की दुर्बलता को दुर करने में उपयोगी है।

बैद्यनाथ लौह मण्डूर

शरीर में रक्त का प्रधान स्थान है। रक्त की कमी से बहुत से रोग होते है। इन रोगों में लौह देते ही नये जीवन का संचार होने लगता है। लौह अनेक रूपों में रोगी को दिया जाता है। डाक्टरी-चिकित्सा में भी लौह के अनेकों कल्प हैं। आयुर्वेद को गर्व है की उसने इस अमृत तुल्य दवा का सर्व प्रथम आविष्कार किया। लौह का सौम्य रूप मण्डूर है।

बैद्यनाथ अम्लपित्तान्तक लौह – अम्लपित्त (Acidity) पित्तजन्य शूल, गर्भवती के वमन, यकृत, शूल, पेशाब की जलन, पेटदर्द, पित्तविकार में लाभदायक है।

बैद्यनाथ ताप्यादि लौह नं. १ – पाण्डु, रक्ताल्पता, विषमज्वर, मलावरोध, शोथ, कृमि-विकार, त्वचा के रोग एवं शारीरिक दुर्बलता आदि में अति गुणकारी है।

बैद्यनाथ ताप्यादि लौह (रौप्यमाक्षिक-युक्त) – नं. १ से कुछ कम गुण-युक्त है।

बैद्यनाथ धात्री लौह – अम्लपित्त, अजीर्ण, कब्ज, गले की जलन, खट्टी डकार में लाभप्रद है।

बैद्यनाथ नवायस लौह – रक्ताल्पता (Anaemia) यकृत् और बाल रोगों की रक्ताल्पता, पाण्डु, कामला, हलीमक, मन्दाग्नि, शोथ, मन्दज्वर, दुर्बलता आदि की प्रसिद्ध महौषधि है।

बैद्यनाथ प्रदरान्तक लौह – यह स्त्रियों के लिए उपयोगी है।

बैद्यनाथ प्रदरारि लौह – यह स्त्रियोपयोगी है।

बैद्यनाथ पुनर्नवादि मण्डूर – शरीर सूजन (शोथरोग) में बहुत गुणकारी है।

बैद्यनाथ मण्डूर वटक – कामला, पाण्डु, शोथ और उदर विकारों में लाभदायक है।

बैद्यनाथ मेदोहरविडंगादि लौह – चर्बी तथा मोटापन कम करती है।

बैद्यनाथ यकृत्प्लीहारि लौह – जिगर और तिल्ली के विकारों की गुणकारी दवा है।

बैद्यनाथ विषमज्वरान्तक लौह पुटपक्व (सुवर्ण-मोती-युक्त) – हर प्रकार के ज्वर की यह अच्छी औषधि है। मलेरिया, कालज्वर, जीर्णज्वर आदि में विशेष लाभदायक है।

बैद्यनाथ शोथारि लौह – शरीर के किसी भी भाग में सूजन होने पर लाभदायक है। यह दीपन, पाचन कफ नाशक और रक्त-वर्धक है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

***बैद्यनाथ* शोथारि मण्डूर** – शोथ रोग में सभी वैद्यों द्वारा यह व्यवहृत होता है।

***बैद्यनाथ* शिलाजित्वादि लौह** – रक्तक्षय, खून की कमी, जीर्णज्वर में लाभदायक है।

***बैद्यनाथ* सप्तामृत लौह** – आँखों के लिए विशेष उपयोगी है।

***बैद्यनाथ* सर्वज्वरहर लौह बृहत् – (सुवर्णयुक्त)** – सब प्रकार के ज्वरों में उपयोगी है। विशेषत: जीर्णज्वर में रक्ताल्पता में बहुत फायदेमन्द है।

***बैद्यनाथ* सर्वज्वरहर लौह** – गुण उपरोक्त बृहत् से कुछ न्यून हैं।

बैद्यनाथ बटी गोलियाँ

बैद्यनाथ बटी गोली सेवन के लिए **'आयुर्वेदीय औषध सेवनविधि'** पुस्तक देखें।

***बैद्यनाथ* अग्नितुण्डी बटी** – हाजमे के लिए प्रसिद्ध है। पेट की वायु को जल्द शमन करती है। दीपन और पाचन है।

***बैद्यनाथ* अग्निवर्द्धक बटी** – यह अत्यन्त स्वादिष्ट और पाचक बटी है।

***बैद्यनाथ* अपतन्त्रकारी बटी** – अपतन्त्रक आदि कठिन से कठिन वात रोगों में व्यवहृत होनेवाली यह एक विशेष फलप्रद महौषधि है।

***बैद्यनाथ* अर्शोघ्नी बटी** – खूनी और बादी बवासीर की बड़ी उपयोगी महौषधि है।

***बैद्यनाथ* एलादि बटी** – सूखी पुरानी खाँसी, रक्तपित्त (मुंह से खून गिरना), जी की घबराहट आदि में लाभदायक है।

***बैद्यनाथ* कर्पूरादि बटी** – मुँह मे छाले पड़ना, बदबू आना, दाँतों से पीव निकलना, मसूढ़े फूल जाना तथा अन्य मुखरोगों में यह बटी बहुत फायदेमन्द है।

***बैद्यनाथ* कांकायन बटी** (गुल्म) – गुल्म आदि रोगों में अत्यन्त लाभकारी है।

***बैद्यनाथ* कांकायन बटी** (बवासीर) – खूनी और बादी बवासीर में लाभदायक है।

***बैद्यनाथ* कुटजघन बटी** – ज्वर युक्त अतिसार और संग्रहणी व खूनी बवासीर में इससे लाभ होता है। आंव मरोड (Ameabic Dysentery) की प्रसिद्ध दवा है।

***बैद्यनाथ* खदिरादि बटी** – स्वरभंग, खाँसी और मुँह के छाले में लाभदायक है।

***बैद्यनाथ* चन्दनादि बटी** – जलन को दूर कर खुलकर पेशाब लाकर आराम देती है।

***बैद्यनाथ* चन्द्रप्रभा बटी** – एलब्युमिन फास्फेट आदि सभी प्रकार के मूत्र विकारों को दूर करती है। स्त्री-पुरुष दोनों के लिए उपयोगी है।

***बैद्यनाथ* चित्रकादि बटी** – आंव, पेचिश, संग्रहणी, अपच को दूर करती है।

***बैद्यनाथ* जातिफलादि बटी** (संग्रहणी) – यह अतिसार – संग्रहणी के दस्तों में खून और आंव आने पर बहुत गुणकारी है।

***बैद्यनाथ* जातिफलादि बटी** (स्तम्भक) – गुण-धर्म यथा नाम तथा गुण है।

***बैद्यनाथ* दुग्ध बटी** (शोथ) – सूजन, मन्दाग्नि और पाण्डु रोगों में इससे लाभ होता है।

***बैद्यनाथ* दुग्ध बटी** (संग्रहणी) – यह स्तम्भक, ग्राही, आम-पाचक तथा शोथघ्न है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

***बैद्यनाथ* प्रभाकर बटी** – वातवाहिनियों की विकृति, रक्ताल्पता आदि को दूर करती है।

***बैद्यनाथ* प्राणदा गुटिका** – वादी और खूनी बवासीर में गुणकारी है। पेट साफ करती है।

***बैद्यनाथ* ब्राह्मी बटी – (सुवर्ण-मोती-अम्बर-केशर-युक्त)** – सन्निपात ज्वर, मोतीझरा और मियादी बुखार में वायु-विकृति या अधिक तापमान के कारण बेचैनी के लक्षण होने पर इससे तत्काल लाभ होता है। वात-विकार तथा दिमागी कमजोरी को मिटाती है।

***बैद्यनाथ* ब्राह्मी बटी – (बुद्धि-वर्द्धक)** – स्मरणशक्ति और बुद्धि-वृद्धि के लिए श्रेष्ठ है।

***बैद्यनाथ* मकरध्वज बटी** – बल, स्फूर्ति, शक्ति और कान्ति बढ़ाती है।

***बैद्यनाथ* मरिच्यादि बटी** – सूखी, गीली व गले की खराबी से उत्पन्न खाँसी में लाभकारी है।

***बैद्यनाथ* महाशंख बटी** – अजीर्ण तथा मन्दाग्नि मूलक रोगों में लाभप्रद है।

***बैद्यनाथ* मुक्तादि बटी (सुवर्ण-मोती-केशर-गोरोचन-युक्त)** – बालकों के ज्वर, सूखारोग, दूध न पचना, पतले दस्त, खाँसी आदि में फायदेमन्द है। हृदय व मस्तिष्क को बल देती है।

***बैद्यनाथ* रजःप्रवर्तनी बटी** – स्त्रियों के लिए बहुत लाभकारी है।

***बैद्यनाथ* राज बटी (गन्धक – बटी)** – पेट की वायु (गैस) व रक्त-विकार में लाभ करती है।

***बैद्यनाथ* लवंगादि बटी** – कफ-खाँसी की बहुत प्रसिद्ध दवा है। चूसने में स्वादिष्ट है।

***बैद्यनाथ* लशुनादि बटी** – मन्दाग्नि, अजीर्ण, आफरा (आध्मान) उदरशूल आदि में लाभप्रद है।

***बैद्यनाथ* वातरीना टेबलेट** – यह टेबलेट प्रकुपित वायु के कारण होने वाले दर्द में अति गुणकारी है। इसके सेवन से जोड़ का दर्द, आमवात, कमर का दर्द, गृध्रसी (सायटिका) स्नायु आदि के दर्द दूर होते हैं।

***बैद्यनाथ* वृद्धिबाधिका बटी** – यह अन्त्रवृद्धि तथा अण्डवृद्धि में लाभकारी है।

***बैद्यनाथ* व्योषादि बटी** – फ्लू, सर्दी, जुकाम, नजला, खाँसी, स्वरभंग में गुणकारी है।

***बैद्यनाथ* शंख बटी** – अजीर्ण, मंदाग्नि, पेट-दर्द आदि में इससे बहुत लाभ होता है।

***बैद्यनाथ* शिलाजित्वादि बटी – (सुवर्ण-युक्त)** – इसके सेवन से शरीर को ताकद मिलती है और याददाश्त की कमी आदि रोग दूर होते हैं। यह रसायन है।

***बैद्यनाथ* शिलाजित्वादी बटी** – यह उपर्युक्त से किंचित् न्यून गुण-युक्त है।

***बैद्यनाथ* शुक्रमातृका बटी** – अश्मरी आदि रोग दूर होते है। इससे शरीर में शुक्राणु तथा रक्ताणुओं की वृद्धि होती है एवं अण्ड ग्रन्थियों को ताकद मिलती है।

***बैद्यनाथ* शूलवर्जिनी बटी** – पेट दर्द के रोगियों के लिए यह बहुत उपयोगी है। आमवात, पाण्डु, कामला आदि रोगों में भी इसका उपयोग होता है।

***बैद्यनाथ* संजीवनी बटी** – अजीर्ण, मन्दाग्नि, ज्वर, गुल्म, हैजा, पतले दस्त, इन्फ्ल्युएंजा, निमोनिया, सर्दी, जुकाम आदि में गुणकारी है।

***बैद्यनाथ* संशमनी बटी** – ज्वर पित्त-विकार, ज्वर के बाद की कमजोरी, हृदय की कमजोरी रक्त-विकार और अम्लपित्त में बहुत लाभकारी है।

***बैद्यनाथ* सर्पगन्धाघन बटी** – इस दवा से अच्छी नींद आती है। मानसिक विकार तथा बढ़े रक्तचाप की श्रेष्ठ दवा है।

***बैद्यनाथ* सारिवादि बटी** – कान के बहने, गूंजने, और कम सुनने आदि में गुणकारी है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

बैद्यनाथ गुग्गुलु

चिकित्सा – जगत् में गुग्गुलु घटित दवाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। शास्त्रों की विधि से शोधित एवं लक्षाघात गुग्गुलु से ही यथार्थ लाभ होता है। हमारे यहाँ उत्तम श्रेणी के गुग्गुलु का शास्त्रीय नियम के अनुसार शोधकर, औषधि-निर्माण के काम में लिया जाता है। गुग्गुलु कूटने का भी विशेष प्रबन्ध है। गुग्गुलु की गोली सेवन करते समय साबुत गोली प्रयोग न करके टुकडे करके या चूर्ण करके ही लेना चाहिये।

***बैद्यनाथ* कांचनार गुग्गुलु** – हर प्रकार की अपच या ग्रन्थि में लाभकारी है।

***बैद्यनाथ* कैशोर गुग्गुलु** – खून की खराबी के कारण शरीर में उत्पन्न फोड़ा-फुन्सी, चकता, नेत्र रोग आदि व्याधियों में उपयोगी है।

***बैद्यनाथ* गोक्षुरादि गुग्गुलु** – पथरी आदि कठिन रोगों में फायदेमन्द है।

***बैद्यनाथ* त्रयोदशांग गुग्गुलु** – वातरोग, गठिया, पक्षाघात, आदि रोगों में फायदेमन्द है।

***बैद्यनाथ* त्रिफला गुग्गुलु** – भगन्दर, गुल्म, सूजन और बवासीर आदि रोगों में इससे लाभ होता है और पेट साफ रहता है।

***बैद्यनाथ* पुनर्नवादि गुग्गुलु** – इससे शोथ, गृध्रसी तथा आमवात दूर होता है।

***बैद्यनाथ* पंचतिक्तघृत गुग्गुलु** – रक्तविकार, फोडा, फुन्सी तथा एक्जीमा (वीची) की परीक्षित दवा है। इसे खाने से विशेष लाभ करता है।

***बैद्यनाथ* रास्नादि गुग्गुलु** – आमवात, जोडों के दर्द, गृध्रसी, शिरोरोग, नाडीव्रण, नासूर आदि रोग तथा वात-विकारों में उपयोगी है।

***बैद्यनाथ* लाक्षादि गुग्गुलु** – चोट के दर्द व टूटी हुई हड्डियों को जोड़ने में लाभकारी।

***बैद्यनाथ* सप्तविंशति गुग्गुलु** – भगन्दर, बवासीर, पुराने घाव, हृदयशूल, अन्त्र-वृद्धि, कुक्षि और वस्ति-विकार में विशेष लाभदायक है।

***बैद्यनाथ* सिंहनाद गुग्गुलु** – गुल्म, उदर-रोग तथा कठिन आमवात रोगों की दवा है।

***बैद्यनाथ* योगराज गुग्गुलु** – वायु के कारण शरीर के किसी भी भाग में दर्द होने पर योगराज गुग्गुलु का सेवन बहुत लाभकारी है। इससे वात, कमर या मेरुदण्ड का दर्द, सर्वांग-शूल आदि पुराने और कष्टदायक वायु-रोग जल्द आराम होते हैं। आमवात, संधिवात, गृध्रसी, कटिवात, शोथ, प्रसूति आदि ८० वात रोगों के लिए लाभकारी है।

***बैद्यनाथ* महायोगराज गुग्गुलु** – वातव्याधि, आमवात, वातरक्त आदि वात रोगों की यह उत्तम दवा है। योगराज गुग्गुलु से अधिक गुणकारी है।

***बैद्यनाथ* स्वर्णमहायोगराज गुग्गुलु** – महायोगराज गुग्गुलु में स्वर्णभस्म, गोरख तथा सुरंजान आदि वात-नाशक शक्तिवर्धक एवं स्नायुमण्डल को ताकद देने वाले द्रव्यों के सम्मिश्रण से यह योग बनता है। यह वातरोग, आमवात, गठिया, पक्षाघात, गृध्रसी, स्नायु-दौर्बल्य एवं समस्त वात व्याधियों में परम गुणकारी अनुभूत औषधि है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

वैद्यनाथ पर्पटी

गुणधर्म – रसायनकल्प में पर्पटी बहुत महत्वपूर्ण है। जब अन्य औषधियों से कुछ भी लाभ नहीं होता, तब पर्पटी कल्प से लाभ होता है। पर्पटी कल्प से तभी पूर्ण लाभ हो सकता है, जब वह संस्कारित पारद और गन्धक द्वारा पूर्ण शास्त्रीय विधि से बनाई गई हो। वैद्यनाथ पर्पटी पूर्ण शास्त्रीय विधि से तैयार की जाती है।

***वैद्यनाथ* पंचामृत पर्पटी** – संग्रहणी रोग की प्रसिद्ध महौषधि है। अतिसार, पाण्डु, अरुचि, मन्दाग्नि, आँव, पेचिश, अम्लपित्त, शूल और दमा में भी लाभदायक है।

***वैद्यनाथ* विजय पर्पटी (सुवर्ण-मोती-युक्त)** -- कष्टसाध्य संग्रहणी, अतिसार, क्षीणता, विषमज्वर, पाण्डु, तिल्ली, जलोदर, शोथ, परिणामशूल, अम्लपित्त आदि की उत्कृष्ट दवा है।

***वैद्यनाथ* बोल पर्पटी** – रक्तपित्त, रक्त-प्रदर, खूनी बवासीर व खून को बन्द करती है।

***वैद्यनाथ* रस पर्पटी** – यह पर्पटी कल्प पाचक, दीपक, जन्तुघ्न, शोधक और परम रसायन है। मन्दाग्नि, संग्रहणी, रक्ताल्पता, अजीर्ण, अम्लपित्त, अतिसार, पाण्डु अर्श तथा पेट के विकारों में गुणदायक है।

***वैद्यनाथ* लौह पर्पटी** – अम्लपित्त, मन्दाग्नि, पाण्डु तथा यकृत की बीमारी और खून की कमी में लाभकारी है। संग्रहणी व आँव में विशेष लाभकारी है।

***वैद्यनाथ* श्वेत पर्पटी** – मूत्रकृच्छ्र और हैजा आदि में पेशाब रुक जाने पर इसके व्यवहार से पेशाब उतर जाता है। यह अति मूत्रल है।

***वैद्यनाथ* स्वर्ण पर्पटी** – स्वर्णयुक्त होने से यह परम पाचक, दीपक, रस रक्तादि धातुवर्धक, वृष्य, योगवाही, जन्तुघ्न, त्रिदोष नाशक और शक्तिवर्धक है। संग्रहणी और क्षय के पुराने रोगी भी इससे अच्छे होते हैं। हृदय को ताकत देती है।

वैद्यनाथ चूर्ण

गुणधर्म – आयुर्वेद-शास्त्र में आसव-अरिष्ट की तरह चूर्ण भी रोग-निवारण की निरापद काष्ठ औषधि है। चूर्ण जड़ी-बूटियों को सूखाकर तथा महिन कूटकर बनाये जाते हैं। इसलिए उत्तम ताजी और असली जड़ी-बुटियों और उनकी कुटाई के उत्तम प्रबन्ध और निगरानी पर ही उनका गुण निर्भर करता है। हमारे यहाँ पहाड़ों और जंगलों से ताजी और असली जड़ी-बूटियाँ प्राप्त की जाती है, और उनके कूटने का उत्तम प्रबन्ध है, जिसकी निगरानी योग्य वैद्यों द्वारा होती है। इसलिए बैद्यनाथ चूर्ण अवश्य फायदा करते है। बैद्यनाथ चूर्ण उत्तम सीलबंद शीशियों में पैक होने के कारण बाहरी दूषित हवा के स्पर्श से बचे रहते हैं। अत: वे बहुत दिन तक खराब नहीं होते।

***वैद्यनाथ* अविपत्तिकर चूर्ण** – अम्लपित्त में सर्वोत्तम है। इससे छाती और गले की जलन, कब्जियत, मुँह में खट्टा पानी भरना, वमन आदि पित्त रोग दूर होते है।

***वैद्यनाथ* अश्वगन्धादि चूर्ण** – दिमाग व शरीर को पुष्ट एवं विकसित करता है।

***वैद्यनाथ* चोपचिन्यादि चूर्ण** – इसके सेवन से पेशाब की जलन, फोड़े-फुन्सी, घाव, भगन्दर, खुजली, दाह आदि रक्त की खराबी दूर होती है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

***बैद्यनाथ* जातिफलादि चूर्ण** – इसके प्रयोग से अतिसार, संग्रहणी, पेट की मरोड़ में लाभ होता है। मन्दाग्नि अरुचि, आदि रोगों में भी फायदेमन्द है।

***बैद्यनाथ* गंगाधर चूर्ण बृहत्** – आँव संग्रहणी में गुणकारी है।

***बैद्यनाथ* तालीशादि चूर्ण** – जीर्णज्वर, खाँसी, अरुचि, अग्निमांद्य में उपयोगी है।

***बैद्यनाथ* दीनदयाल चूर्ण** – यह चूर्ण कब्ज, गैस, पेट फूलना, छाती में जलन, अजीर्ण, आदि में लाभदायक है।

***बैद्यनाथ* त्रिफला चूर्ण** – कब्ज, पाण्डु, कामला, शोथ, नेत्रविकार, आदि को दूर करता है। गरमी की ऋतु में चूर्ण से आधी चीनी मिलाकर लेने से पित्त की वृद्धि नही होती। इसके द्वारा केश धोने से बाल मजबूत एवं काले होते है।

***बैद्यनाथ* धातुपौष्टिक चूर्ण** – रस, रक्तादि, सातों धातुओं को बढ़ाता है।

***बैद्यनाथ* नारायण चूर्ण** – गुल्म, लीवर, पेट फूलना, सूजन, दस्त की कब्जियत, मन्दाग्नि आदि में पेट साफ रखने के लिए इसके प्रयोग से आशातीत लाभ होता है।

***बैद्यनाथ* पंचसकार चूर्ण** – यह चूर्ण पेट साफ करता है तथा पाचन शक्ति और भूख बढ़ाता है। इससे पेट के कृमि (कीडे) भी नष्ट होते है।

***बैद्यनाथ* प्रदरनाशक चूर्ण** – स्त्रियों के लिए लाभदायक है।

***बैद्यनाथ* पुष्यानुग चूर्ण नं. २** – (नागकेशर-युक्त) स्त्रियों के लिए गुणकारी है।

***बैद्यनाथ* बिल्वादि चूर्ण** – आँव और खून के दस्त बन्द करके संग्रहणी को रोकता है।

***बैद्यनाथ* महासुदर्शन चूर्ण** – क्विनीन आदि से अटका हुआ बुखार दूर होता है। यकृत और प्लीहा के दोष से उत्पन्न तथा वात, पित्त और कफ के दोषों से उत्पन्न जीर्णज्वर, कब्जियत, अरुचि आदि में विशेष लाभकारी है।

***बैद्यनाथ* लवणभास्कर चूर्ण** – हाजमा के चूर्णों में यह विशेष गुणकारी और स्वादिष्ट है। यह कब्जियत मिटाता है और पतले दस्त को बन्द करता है।

***बैद्यनाथ* लाई चूर्ण** – इसका सेवन संग्रहणी और अम्लपित्त में फायदेमन्द है।

***बैद्यनाथ* शतावर्य्यादि चूर्ण** – रस, रक्त आदि सप्त धातुओं को पुष्टि देता है तथा महिलाओं के दूध को बढ़ाता है।

***बैद्यनाथ* सारस्वत चूर्ण** – बुद्धि और स्मृति बढ़ाता है। उत्तम ब्रेन टॉनिक है।

***बैद्यनाथ* सितोपलादि चूर्ण** – पुराना बुखार, शारीरिक क्षीणता, दमा, अरुचि, पित्तविकार, हाथ-पैर की जलन आदि में बहुत उपयोगी है। सब तरह की खाँसी की उत्तम दवा है।

***बैद्यनाथ* हिंग्वाष्टक चूर्ण** – यह चूर्ण पेट की वायु का अनुलोमन करता है तथा अग्निवर्द्धक और पाचक भी है।

बैद्यनाथ अवलेह मोदक पाक

क्वाथ, रस, फाण्ट आदि को दुबारा पकाकर जो गाढा किया जाता है, उसको अवलेह कहते है। बैद्यनाथ अवलेह और पाक कडी (सख्त) चाशनी में बनकर पैक होते हैं। इससे कृमि फफून्द आदि विकृति नहीं होती।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

***बैद्यनाथ* एरण्ड पाक** – वात रोग, जोड़ों के दर्द में लाभकारी है। स्निग्ध विरेचक है।

***बैद्यनाथ* च्यवनप्राश अवलेह** (अष्टवर्गयुक्त) – जीर्ण-शरीर को कायाकल्प करने के लिए यह सर्व विदित है। वृद्ध च्यवन ऋषि इसी से दुबारा नौजवान बने। अष्टवर्ग मिलाया जाता है। फेफडे के विकार, पुराना श्वास, शारीरिक क्षीणता, जीर्णज्वर, स्वरभंग, खून की कमी, कैल्शियम की कमी, कब्जियत, अम्लपित्त, मन्दाग्नि आदि रोगों को दूर करके यह शरीर को हृष्ट-पुष्ट और बलवान बनाता है और रस रक्तादि सप्त धातुओं तो बढ़ाता है। बैद्यनाथ च्यवनप्राश गुणों में श्रेष्ठ होता है, क्योंकि यह पूर्ण शास्त्रीय विधि के अनुसार ताजे हरे आँवलों और प्रामाणिक औषधियों के योग से तैयार किया जाता है। इसका सेवन हर मौसम में हर पुरुष-स्त्री, बालक और वृद्ध को करना चाहिए।

***बैद्यनाथ* च्यवनप्राश अवलेह** (स्पेशल) – इसमें चाँदी-वर्क, केशर, मकरध्वज, अभ्रकभस्म आदि का मिश्रण किया जाता है। यह साधारण च्यवनप्राश से अधिक गुणकारी है।

***बैद्यनाथ* वासावलेह** – इससे सभी तरह की खाँसी में फायदा होता है।

***बैद्यनाथ* बादाम पाक** – दिल और दिमाग को ताकद देता है और वजन बढ़ाता है।

***बैद्यनाथ* मूसली पाक** – शरीर को मोटा-ताजा बनानेवाला श्रेष्ठ पौष्टिक पाक है।

***बैद्यनाथ* सुपारी पाक** – बच्चा होने के बाद महिलाएँ इसका सेवन करें। इससे शरीर हृष्ट पुष्ट होता है, और स्वास्थ्य उत्तम होता है।

***बैद्यनाथ* सौभाग्यशुंठी पाक** – प्रसूता के लिए पुष्टिकारक है। भूख तथा बल बढ़ाता है।

***बैद्यनाथ* हरिद्राखण्ड बृहत्** – शीतपित व ददोडे में फायदेमन्द है।

बैद्यनाथ औषध केश तैल

आयुर्वेदीय प्रतिष्ठान होने के नाते, लोक-कल्याण की भावना से, हम निम्नलिखित तेल भी बनाते हैं, और उनकी विशुद्धता का पुरा ध्यान रखते है। आरोग्य की दृष्टि में तेल लगानेवालों को बराबर बैद्यनाथ तेलों का व्यवहार करना चाहिए, क्योंकि बैद्यनाथ तेलों में विशुद्ध व उत्तम मूल द्रव्य डाले जाते हैं।

***बैद्यनाथ* आँवला तैल** – उत्तम तैल है। बहुत लाभकारी है।

***बैद्यनाथ* ब्राह्मी आँवला तैल** – ब्राह्मी और आँवला से तैयार किया गया है। यह तैल मस्तिष्क को तरोताजा रखने एवं बुद्धि तथा स्मरण शक्ति बढ़ाने में उत्तम है।

***बैद्यनाथ* महाभृंगराज केश तैल** – असमय बाल का पकना, गिरना व गंज दूर कर केशों को घना व काला बनाता है।

***बैद्यनाथ* हिमानी कल्याण तैल** – सिर-दर्द-नाशक शीतलता देने वाला है।

बैद्यनाथ औषध तैल

गुणधर्म – उत्तम औषधियों द्वारा विशुद्ध आयुर्वेदीय रीति से प्रस्तुत तैल रोग नाश के साथ-साथ शरीर को भी पुष्ट करते हैं।

उपयोग विधि – तैल को धीरे-धीरे, लेकिन बल के साथ इस प्रकार मालिश करनी चाहिए कि तैल चमड़ी के भीतर तक जाये। बिना उत्तम मर्दन के तैलों से पूर्ण लाभ नहीं होता।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

M/s ATMAN TRADERS
3rd Floor Partap Garo
... JAMMU

बैद्यनाथ इरिमेदादि तैल – मुख-रोग की उत्तम दवा है।

बैद्यनाथ काशीसादि तैल – इसके लगाने से बवासीर के मस्से दूर होते हैं।

बैद्यनाथ चंदनबलालाक्षादि तैल – कास, श्वास, शारीरिक क्षीणता, दाह, वात, रोग और पुराने ज्वर में उपयोगी है।

बैद्यनाथ जात्यादि तैल – फोडा-फुन्सी, घाव तथा जले कटे पर लगाने का रोपण तैल है।

बैद्यनाथ निर्गुण्डी तैल – नाडीव्रण, नासूर, अपची आदि गले की गाँठों एवं सब प्रकार के दूषित व्रण को दूर करने में अति उपयोगी है।

बैद्यनाथ प्रसारिणी तैल – सब प्रकार के वात-कफ-जन्य रोग, अर्दित, ग्रन्थिवात गृध्रसी आदि में इसका प्रयोग होता है।

बैद्यनाथ पुनर्नवादि तैल – सब प्रकार के शोथ व पाण्डु में इसकी मालिश लाभप्रद है।

बैद्यनाथ ब्राह्मी तैल – बुद्धि-स्मृतिवर्द्धक एवं मस्तिष्क-दौर्बल्य-नाशक तेल है।

बैद्यनाथ बिल्व तैल – कान-दर्द, कान में आवाज तथा कम सुनने में उपयोगी है।

बैद्यनाथ विष्णु तैल बृहत् – (केशर युक्त) – यह दमा, मन्दाग्नि और कमजोरी में लाभदायक है। नसों की कमजोरी एवं दर्द में विशेष लाभदायक है।

बैद्यनाथ महामरिच्यादि तैल – खाज-खुजली, फोड़ा-फुन्सी, झाई, एक्जिमा आदि चर्म और रक्त रोगों के लिए मशहूर है।

बैद्यनाथ महाचन्दनादि तैल – कमजोर रोगी को ताकतवर बनाने के लिए अनुभूत एवं शास्त्रोक्त तैल है।

बैद्यनाथ महाविषगर्भ तैल – तीव्र वात वेदना (वायु का दर्द) में लाभकारी है।

बैद्यनाथ महानारायण तैल – (केशर युक्त) – यह सन्धिवात, सर्वाङ्गज वेदना, आमवात, कमर के दर्द आदि सभी तरह के वात विकारों की मशहूर दवा है। यह मालिश करने के अतिरिक्त खाने के भी काम आता है। अल्प मात्रा में इसका ड्यूस भी दिया जाता है।

बैद्यनाथ महाभृंगराज तैल – सिर के बालों को बढ़ाता, माथे को ठंड़ा रखता, गंज को मिटाता तथा काले बालों की सफेद होने कि गति को रोकता है।

बैद्यनाथ महामाष तैल निरामिष – अंगों में आयी अशक्तता दूर कर उनमें नया जीवन लाता है। इसकी मालिश से विभिन्न प्रकार के कष्ट साध्य वात-रोग नष्ट होते हैं।

बैद्यनाथ महालाक्षादि तैल – खाँसी, शारीरिक दुर्बलता, हाथ पैर की जलन, हड्डीपसली के दर्द और बाल-रोग में बहुत लाभ करता है।

बैद्यनाथ श्रीगोपाल तैल – (केशर युक्त) – नित्य लगाने से वायु-रोग नष्ट तथा शरीर पुष्ट होता है। बाजीकरण अध्याय का है। नसों तो शक्ति देता है।

बैद्यनाथ शंखपुष्पी तैल – बच्चों के सूखा रोग में विशेष गुणकारी है। जन्म के बाद से ही इस तैल को लगाने से बालक पुष्ट और निरोग रहते हैं।

बैद्यनाथ षड्बिन्दु तैल – इससे सिर-दर्द, जुकाम, नजला, पीनस, साईनस तथा नासार्बुद आदि में लाभ होता है।

बैद्यनाथ सैन्धवादि तैल बृहत् – सभी प्रकार के वृद्धि रोगों में इस तैल के प्रयोग से अच्छा लाभ होता है। आमवात, कमर एवं घुटने के दर्द आदि में उपयोगी है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

***बैद्यनाथ* सोमराजी तैल** – इससे रक्तविकार, दाह, खुजली, फोड़ा, फुन्सी, सफेद दाग, चकते तथा चेहरे पर की कालिमा आदि में फायदा होता है।

***बैद्यनाथ* क्षार तैल** – कान दर्द, कर्ण-स्राव, सनसनाहट आदि वात-रोगों में गुणकारी है।

बैद्यनाथ प्रवाही क्वाथ

आयुर्वेद में क्वाथ का बहुत महत्त्व है, किन्तु बनाने में झंझट के कारण इनका उपयोग बहुत कम हो पाता है अत: इस झंझट से बचाने के लिए कुछ विशेष गुणकारी क्वाथों के 'प्रवाही क्वाथ' तैयार किये गये हैं।

***बैद्यनाथ* दशमूल काढ़ा** – रोगों तथा प्रसव के बाद लाभदायक है।

***बैद्यनाथ* देवदार्वादि काढ़ा** – प्रसूत-ज्वर में फायदेमन्द है।

***बैद्यनाथ* पुनर्नवादि काढ़ा** – पाण्डु-रोग, व सर्वाङ्ग शोथ में उपयोगी है।

***बैद्यनाथ* महामंजिष्ठादि काढ़ा** – रक्त-शुद्धि के लिए पूर्ण गुणकारी है।

***बैद्यनाथ* महारास्नादि काढ़ा** – समस्त वात-रोगों में लाभकारी है।

***बैद्यनाथ* महासुदर्शन काढ़ा** – विषमज्वर, मलेरिया, जीर्णज्वर आदि में लाभदायक।

***बैद्यनाथ* बालन्त काढ़ा नं. १** – प्रसूता को पहले दस दिन में सेवन करने योग्य।

***बैद्यनाथ* बालन्त काढ़ा नं. २** – प्रसूता को दस दिन बाद सेवन करने योग्य।

***बैद्यनाथ* बालन्त काढ़ा नं. ३** – प्रसूता को बीस दिन बाद सेवन करने योग्य।

***बैद्यनाथ* बालकडू** – बच्चों की उल्टी, दस्त, अपच तथा कृमि रोग में उपयोगी।

बैद्यनाथ आसव-अरिष्ट

गुणधर्म – आयुर्वेदीय चिकित्सा में क्वाथ या काढ़ों की चिकित्सा सर्वाधिक है, किन्तु उसे रोज तैयार करना पडता है। पंसारियों के यहां से क्वाथ के लिए आवश्यक शुद्ध द्रव्य प्राप्त करने में भी कठिनाई होती है। लोगों को इसी झंझट से बचाने के लिए शास्त्रों में आसव-अरिष्टों के निर्माण और उपयोग की विधि बताई गई है।

***बैद्यनाथ* आसव-अरिष्ट की उत्तमता** – आसव-अरिष्ट जितने पुराने होते हैं, वे उतने ही अधिक लाभ पहुँचाते है। पुराने आसव-अरिष्ट का प्रभाव रोगों पर तत्काल और निश्चित होता है। उत्तम आसव-अरिष्ट पारदर्शी नहीं होते, बल्कि क्वाथ के प्रतिनिधि होते हैं।

***बैद्यनाथ* आसव-अरिष्ट** – श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि. इस कार्य के लिए देश में सुप्रसिद्ध है। हमारी पाँच निर्माणशालाओं में लाखों लीटर आसव-अरिष्ट हमेशा तैयार रहते है और वे पुराने होने पर ही विक्री के लिए भेजे जाते हैं।

***बैद्यनाथ* अशोकारिष्ट** – इसके सेवन से स्त्रियों के हाथ-पाँव तलुओं की जलन, पेडू-पेट तथा सिर के दर्द, पित्त दाह और उदरशूल आदि दूर होते हैं। इससे उनके शरीर की शक्ति और मुख की कान्ति बढ़ती है। यह वय:स्थापक है अर्थात बुढापे को रोकता है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

बैद्यनाथ अशोकारिष्ट स्पेशल – मासिक धर्म की अनियमितता, रजोविकार, श्वेतप्रदर (ल्युकोरिया) गर्भाशय की सूजन आदि को दूर कर शरीर में रक्त की वृद्धि करता है। अशोकारिष्ट सादा से अधिक गुणकारी है।

बैद्यनाथ अर्जुनारिष्ट – शरीर में वायु अधिक हो जाने के कारण हृदय धडकता है और शरीर में पसीना आने लगता है, मुँह सूख जाता है, नींद कम आती है, शरीर में रक्त संचार ठीक से नहीं होता, मन घबराता है और रोगी को मृत्यु भय सताने लगता है, ऐसी स्थिति में इसका व्यवहार बहुत ही लाभदायक सिद्ध होता है।

बैद्यनाथ अभयारिष्ट – सभी तरह के बवासीर की प्रसिद्ध दवा है। कब्जियत, मन्दाग्नि आदि उदर रोगों को समूल दूर कर अग्नि को बढ़ाता है और पेट की गैस को कम करता है।

बैद्यनाथ अमृतारिष्ट – बार-बार आनेवाले विषमज्वर, पित्तज्वर और जीर्णज्वर में विशेष लाभ करता है।

बैद्यनाथ अरविन्दासव – बालकों के सुखा (सुखण्डी) रोग, अतिसार, अपच, ग्रह-दोष आदि रोगों को दूरकर उन्हें हृष्ट पुष्ट, बलवान और दीर्घायु बनाने में उपयोगी है।

बैद्यनाथ अश्वगन्धारिष्ट – इसके सेवन से अकारण भय, चित्त-भ्रम, अनिद्रा, याददाश्त की कमी, मन्दाग्नि, कब्जियत, सिर-दर्द, काम में चित न लगना आदि दूर होकर बल, विक्रम, कान्ति और बुद्धि की वृद्धि होती है। जनरल टॉनिक के रूप में भी इसका सेवन अतिशय लाभदायक है। यह स्नायु दौर्बल्य एवं वातरोग की अच्छी दवा है।

बैद्यनाथ अश्वगन्धारिष्ट स्पेशल – इसके सेवन से मानसिक तनाव दूर होकर निद्रा शान्तिपूर्वक आती है। शरीर को पुष्ट व बलवान बनाता है। शरीर में रक्त बढाकर चुस्ती एवं स्फूर्ति पैदा करता है। उन्माद तथा अपस्मार में भी गुणकारी है।

बैद्यनाथ उशीरासव – रक्त-पित्त, उदर-दर्द आदि की खास दवा है। मुत्रकृच्छ्र मूत्राघात पथरी तथा समस्त पित्त-विकारों में लाभदायक है।

बैद्यनाथ कनकासव – नये व पुराने दमा व श्वास रोग विशेषकर कफ और वायु की अधिकता से उत्पन्न होनेवाले श्वास व पुरानी खाँसी में उपयोगी है।

बैद्यनाथ कुटजारिष्ट – आँव, खून के दस्त, संग्रहणी, खूनी बवासीर, आमांश (Amaebic Dysentery) जीर्णज्वर आदि की उत्तम दवा है। इससे रक्त का गिरना भी बन्द होता है।

बैद्यनाथ कुमारी आसव – इसके सेवन से उदर-रोग (तिल्ली, जीगर, जलन्धर आदि) पंक्ति-शूल (भोजन के बाद का दर्द, पेटदर्द), कब्जियत, गुल्म, (वायुगोला) आदि उदर-रोग दूर होते हैं। शरीर पुष्ट होता है, खाया हुआ पदार्थ अच्छी तरह पच जाता है।

बैद्यनाथ कुमारी आसव नं. ३ – यह बालकों के यकृत (Liver) तिल्ली के रोग, कब्जियत, बदहजमी, रक्ताल्पता एवं गैस में लाभदायक है।

बैद्यनाथ खदिरारिष्ट – खाज-खुजली, फोडा-फुन्सी, चकत्ते आदि सब प्रकार के चर्म रोग एवं रक्त-विकारों में इसके सेवन से लाभ होता है।

बैद्यनाथ चन्दनासव – पेशाब की जलन, कडक, पथरी आदि में गुणकारी है। यह पित्त-शामक और पुष्टिकारक है।

बैद्यनाथ जीरकाद्यरिष्ट – हाथ-पाँव की जलन, अतिसार एवं संग्रहणी रोग-नाशक है। माता के दूध की कमी में इसके सेवन से दूध अधिक उत्पन्न होता है।

बैद्यनाथ दशमूलारिष्ट – संग्रहणी, मन्दाग्नि, अरुचि, उदररोग, खाँसी, दमा, कमजोरी,

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

आदि रोगों की शास्त्रोक्त दवा है। इससे बल और कान्ति बढ़ती है तथा शरीर पुष्ट होता है। प्रसव के बाद इसके सेवन द्वारा माताएँ अपनी एवं शिशु के स्वास्थ्य की रक्षा करता हैं।

***बैद्यनाथ* दशमूलारिष्ट स्पेशल** – यह वातनाशक, गर्भाशय शोधक तथा दुग्धवर्धक है। प्रसूताओं को तथा कमजोर एवं शरीर से बहुत कृश स्त्रियों के लिये यह औषधि बहुत लाभदायक है।

***बैद्यनाथ* द्राक्षासव** – ताकद और ताजगी से भरा हुआ सुमुधर टॉनिक है। यह बढ़ियाँ अंगूरी द्राक्षों से तैयार किया जाता है। बहुत से व्यक्ति बारहों मास इसका सेवन करते है। बैद्यनाथ द्राक्षासव पीने में अत्यन्त जायकेदार है। यह भूख बढ़ाता है, दस्त साफ लाता है। कब्जियत मिटाता, ताकद पैदा करता, नींद लाता है और दिल तथा दिमाग में ताजगी पैदा करता है। कफ, खाँसी, सर्दी; जुकाम आदि में फायदा पहुँचाता है। पेट में वायु बनना रोकता है।

***बैद्यनाथ* द्राक्षासव स्पेशल** – द्राक्षासव में अनेक विशेष गुणकारी दवाएँ डालकर बनाया जाता है। अतः सादा द्राक्षासव से विशेष गुणकारी, बल स्फूर्ति वर्धक टॉनिक है।

***बैद्यनाथ* द्राक्षारिष्ट** – इसके गुण भी द्राक्षासव के समान ही हैं। कफ, खांसी, शारीरिक क्षीणता और कब्जियत में इसका विशेष रूप से व्यवहार किया जाता है।

***बैद्यनाथ* देवदार्वाद्यारिष्ट** – रक्तशोधक और मूत्रदोष निवारक है। संग्रहणी, अर्श, वातरोग, व प्रसव के बाद होनेवाले विकारों में गुणकारक है।

***बैद्यनाथ* पत्राङ्गासव** – स्त्रियों के विभिन्न रोग, ज्वर, पाण्डु, सूजन अग्निमांद्य, कमजोरी आदि को दूर करता है।

***बैद्यनाथ* पिप्पल्यासव** – इसके सेवन से मन्दाग्नि, कफ-खांसी, शारीरिक क्षीणता, गुल्म, अर्श संग्रहणी, आदि रोग दूर होते हैं।

***बैद्यनाथ* पुनर्नवारिष्ट** – यह शोथ, उदर-रोग, प्लीहा-वृद्धि, अम्लपित्त बढे हुए लिवर, गुल्म आदि रोगों को दूर करता है। इसका प्रभाव मूत्रसंस्थान पर विशेष रूप से होता है यह मूत्रल है।

***बैद्यनाथ* पंचासव** – बलरिष्ट, द्राक्षासव, दशमूलारिष्ट, लोहासव एवं कुमारी आसव आदि का सम्मिश्रण कर यह तैय्यार किया गया है। यह शरीर के सभी अंगों को पुष्ट कर स्फूर्ति पैदा करता है, बलवीर्यवर्धक उत्तम पाचक व रक्तवर्धक है।

***बैद्यनाथ* बब्बूलारिष्ट** – अतिसार, कफ-खाँसी, शारीरिक क्षीणता, उरःक्षत, रक्त-पित्त तथा रक्त रोग आदि दूर करता है।

***बैद्यनाथ* बलारिष्ट** – वात रोग-नाशक, स्नायु पुष्टिकारक एवं अत्यन्त बलवर्द्धक है।

***बैद्यनाथ* वासारिष्ट** – ज्वर युक्त पुरानी खाँसी, खाँसने के साथ-साथ कफ और खून का निकलना, श्वास, सूखी खाँसी तथा रक्त-पित्त के लिए अत्युत्तम है।

***बैद्यनाथ* विडङ्गासव** – पेट में होनेवाले सभी प्रकार के कृमि रोगों में इसका उपयोग होता है। यह गुल्म, विद्रधि, कफ, खाँसी, श्वास, भगन्दर आदि रोगों में भी लाभदायक है।

***बैद्यनाथ* भृंगराजासव** – अम्लपित्त, शारीरिक क्षीणता और सभी तरह की खाँसी में गुणकारी है। यह बालों को गिरने से व सफेद होने से बचाता है।

***बैद्यनाथ* महामंजिष्ठाद्यरिष्ट** – सर्वश्रेष्ठ रक्त शोधक, रक्त-दोष, खाज-खुजली और श्लीपद रोगों में अकेला या गन्धक अथवा रस माणिक्य के साथ प्रयोग से विशेष लाभ होता है।

***बैद्यनाथ* मुस्तकारिष्ट** – इससे अतिसार, अजीर्ण, अग्निमांद्य, संग्रहणी आदि अच्छे होते है। पतले दस्त को ठीक करता है, जठराग्नि को प्रदीप्त करता है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

***बैद्यनाथ* रोहितकारिष्ट** – यह तिल्ली, लिवर, वायुगोला, अग्निमान्द्य, पाण्डु आदि रोगों को दुर करता है। लिवर और तिल्ली के बढ़ जाने पर विशेष लाभदायक है।

***बैद्यनाथ* लोध्रासव** – पेशाब की जलन आदि बीमारियों तथा स्त्रियों के लिये विशेष उपयोगी है।

***बैद्यनाथ* लोहासव** – खून बढ़ाने की सुप्रसिद्ध औषधि है। रक्ताल्पता (Anaemia) जीर्णज्वर, पीलिया, पाण्डु, कामला एवं बढ़े हुए जिगर और तिल्ली में विशेष लाभदायक है।

***बैद्यनाथ* सारस्वतारिष्ट** – ब्राह्मी का यह अपूर्व कल्प दिमागी ताकत, स्मरण शक्ति, कान्ति एवं बुद्धि बढ़ाने में अति श्रेष्ठ है। मानसिक एवं शारीरिक दुर्बलता, नींद न आना, रुक-रुक कर बोलना (तोतलापन), कानों में तरह-तरह की आवाज होना, कम सुनाई देना आदि में भी इससे अच्छा लाभ होता है। उत्तम ब्रेन टॉनिक है।

***बैद्यनाथ* सारिवाद्यारिष्ट** – रक्त शुद्धि की प्रसिद्ध दवा है। यह फोडे खाज-खुजली चकत्ते आदि रक्त-विकार, भगन्दर, हाथ-पैर, आँख, छाती की जलन, आमवात, वातव्याधि सभी प्रकार के रक्त दोष के रोग व अशुद्ध पारे के विकार, क्विनीन से पैदा हुआ उपद्रव, खून की कमी, बदहजमी, कब्जीयत आदि की उत्तम शास्त्रोक्त दवा है।

***बैद्यनाथ* सारिवाद्यासव** – गुणधर्म में उपरोक्त सारिवाद्यारिष्ट के समान है।

***बैद्यनाथ* सप्तारिष्ट** – सात प्रमुख आसव-अरिष्टों से निर्मित परमगुणकारी योग। हृदय और मस्तिष्क को बल प्रदान करता है।

बैद्यनाथ घृत

गुणधर्म – रोगानुसार अनेक जड़ी बुटियों के कल्क आदि द्वारा आयुर्वेदीय पद्धति से निर्मित घृत अत्यन्त स्निग्ध और पौष्टिक होते है।

***बैद्यनाथ* त्रिफला घृत** – इसके सेवन से आँखों की ज्योति बढती है तथा रक्त-विकृति, रक्त-स्त्राव, तिमिर, नेत्र पीडा, नेत्र विकार दूर होते है।

***बैद्यनाथ* पंचतिक्तघृत गुग्गुलु** – गुणधर्म गुग्गुलु प्रकरण में देखें।

***बैद्यनाथ* फलकल्याण घृत** – स्त्रियों के लिये परम लाभ दायक है। इससे वे स्वस्थ रहती है और सुन्दर सन्तान की जननी बनती हैं। पुरुषों की प्रजनन शक्ति को बढ़ाता है।

***बैद्यनाथ* ब्राह्मी घृत** – इससे स्मरण शक्ति बढ़ती है।

बैद्यनाथ विविध एवं उपयोगी आयुर्वेदीय द्रव्य-समूह

***बैद्यनाथ* दन्तमंजन लाल** – यह मंजन दाँत तथा मसुढ़ों के रोग नाशक आयुर्वेदीय दवाओं द्वारा तैयार किया जाता है। मसुढ़ों से खून-मवाद का आना, मुंह से दुर्गन्ध आना, ठंडे जल से चीस चलना, आदि शिकायतें इसके व्यवहार से मिट जाती है। भारत में सर्वाधिक मात्रा में इसका व्यवहार किया जाता है। प्रतिदिन व्यवहार से दाँत मजबूत और निरोग रहते हैं।

***बैद्यनाथ* चन्द्रोदयावर्ति** – नेत्र-रक्षक सुप्रसिद्ध आयुर्वेदिय औषधि है। ऊपर के पर्दे पर मांस के बढ़ने व नेत्रक आदि के कारण फूली पड़ने में यह उपयोगी है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

***बैद्यनाथ* दाड़िमावलेह (अनार-शरबत)** – दाह, रक्तस्राव, तृषा, नेत्र-विकार, लू एवं पित्त-विकारों में उपयोगी।

***बैद्यनाथ* गिलोय सत्व** – हाथ-पैरों की जलन, उष्णता, पित्त-विकारों में उपयोगी।

***बैद्यनाथ* चौंसठ प्रहरी पीपल** – ज्वर-युक्त खाँसी, कफ, श्वास, मंदाग्नि, दुर्बलता आदि में अकेले या बसन्तमालती रस के साथ देने से लाभ होता है।

***बैद्यनाथ* सुगन्धित धूप** – रोग-किटाणु नाशक है। शुद्ध पुजा-पाठ व स्वास्थ सुख के लिये यह उत्तम है।

***बैद्यनाथ* गुलकन्द (प्रवालयुक्त)** – दाह-तृषा-कब्जनाशक और पित्त शामक है।

***बैद्यनाथ* विशुद्ध मधु** – शीत, लघु, ग्राही, अग्निदीपक और नेत्र हितकारी है। अनुपान के लिये उपयोगी और योगवाही है। योगवाही होने से जिस भी दवा के साथ लिया जाये उसकी गुण वृद्धि करता है।

***बैद्यनाथ* चालमूंगरा तैल** – रक्त-विकार एवं चर्मरोगों के लिये सर्व श्रेष्ठ दवा है। फोड़ा-फुन्सी में लगाने और रक्त-विकार में खाने से लाभ होता है।

***बैद्यनाथ* नीम का तैल** – खाज-खुजली, फोड़ा-फुन्सी में लाभदायक।

***बैद्यनाथ* शोधित शिलाजीत** – यह पौष्टिक, बलदायक और रक्तवर्द्धक उत्तम दवा है।

***बैद्यनाथ* शोधित गन्धक** – कण्डू, कुष्ठ, विसर्प, दर्दनाशक, अग्निदीपक व पाचक है।

बैद्यनाथ अनुभूत औषधियाँ

जो नुस्खे अत्यन्त गुणकारी सिद्ध हुए है, उन्हें अनुभूत औषधियों के नाम से हमने प्रचलित किया है। भारतवर्ष के प्रधान चिकित्सकों से अनुमोदन-प्राप्त ये योग जनता के लिए बड़े उपयोगी सिद्ध हुए हैं, क्योंकि इसके सेवन से लोग शीघ्र रोग मुक्त हो जाते है।

***बैद्यनाथ* अर्क पुदीना** – पेट फूलना, खट्टी डकार आना, अजीर्ण, अतिसार, जी मिचलाना, भुख कम लगना, पेट-दर्द आदि में इससे फायदा होता है। बच्चों के हरे-पीले दस्त और दाँत उठने के समय अपचन में भीं लाभदायक है तीव्र गर्मी के मौसम में लू लगने पर यह उपयोगी है।

***बैद्यनाथ* ईसब्बेल** – आँव, पेचिस, मरोड़, आमातिसार, खून के दस्त (बेलेसरी डिसेन्ट्री), कब्जियत आदि में बहुपरीक्षित एवं उपयोगी है।

***बैद्यनाथ* एक्जिमा मलहम** – इसके लगाने से एक्जिमा जल्द आराम होता है।

***बैद्यनाथ* कासामृत** – यह सभी तरह की खाँसी में शीघ्र अच्छा लाभ करता है। मीठी औषधि है बच्चें भी आराम से पीते है।

***बैद्यनाथ* कानपी** – कान बहने की बीमारी बहुधा बच्चों और कभी-कभी बडी उम्र के स्त्री-पुरुषों को हो जाती है। यह दवा शीघ्र गुणकारी है

***बैद्यनाथ* घाव मलहम** – इसके लगाने से घाव शीघ्र सुखकर अँकुर भरता है।

***बैद्यनाथ* चर्म रोगारि** – इस दवा के लगाने से त्वचा पर होनेवाले तरह तरह के रोग, जैसे घाव, अपरस, फुन्सी, खाज खुजली आदि जल्द आराम होते हैं।

***बैद्यनाथ* तिल्ली की दवा** – इस दवा से नई या पुरानी हर तरह की तिल्ली (प्लीहा) जल्द आराम होती है। भुख बढ़ती है, और शरीर में नई ताकत पैदा होती है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

***बैद्यनाथ* दन्तवेष्टारि** – मसुढों से खून निकलना, दाँत का हिलना या गिर जाना, मसुढों को दबाने से मवाद निकलना और मुँह से दुर्गन्ध आना आदि के लिए अति उपयोगी दवा है।

***बैद्यनाथ* दादुरीन** – बड़े परिश्रम और खोज के साथ इसे पानी के रूप में तैयार किया गया है। यह त्वचा के भीतर पहुँचकर दाद को जड़ से मिटा देती है।

***बैद्यनाथ* प्राणदा** – बैद्यनाथ प्राणदा से हर साल मलेरिया बुखार के लाखों रोगी जीवन-दान पाते हैं, इसलिए इसका नाम प्राणदा बिल्कुल सही है। एकतारा, तिजारी, चौथिया, पसली, जूड़ी-पारा का बुखार, बरवट और ताप, तिल्ली आदि मलेरिया के विभिन्न नाम रूप है। मलेरिया बुखारों को हर हालत में यह तुरन्त फायदा पहुँचाती है।

***बैद्यनाथ* बवासीर मलहम** – यह बवासीर के मस्से पर लगाने के लिए सर्वश्रेष्ठ मलम है। इससे मस्से सूख जाते हैं, जिससे कड़ा पाखाना होते समय मस्सों के छिलने का भय नहीं रहता।

***बैद्यनाथ* विरेचनी** – कोष्ठबद्धता में उपयोगी है। एक गोली से एक दस्त साफ होता है।

बैद्यनाथ आयुर्वेदीय अनुभूत औषधियाँ

***बैद्यनाथ* अमेबिका टेबलेट (वत्सकादि घन बटी)** – आँवयुक्त जीर्ण प्रवाहिका (एमेबिक क्रॉनिक डिसेन्ट्री) बारबार प्रत्यावर्तित होनेवाला दृढमूल एवं जीवनभर कष्ट देनेवाला रोग है। इसकी कोई अच्छी सुपरीक्षित औषधि न होने के कारण काफी शोध और परिक्षणों के बाद यह औषधि तैयार की गई है। चक्रदत्त ग्रन्थ के वत्सकादि क्वाथ का घनसत्व निकालकर तथा कुटकी चुर्ण का प्रक्षेप देकर ये टेबलेट बनाई गई है। मथुरा स्थित श्री रामनारायण आयुर्वेद भवन (प्रवाहिका शोध संस्थान) में इसका हजारों रोगियों पर परीक्षण किया जा चुका है। यह अमेबिक प्रवाहिका, मरोड़, पुराना आँव, रक्त मिले दस्त, संग्रहणी तथा रक्तातिसार आदि की सुपरीक्षित महौषधि है।

***बैद्यनाथ* अम्लपित्तान्तक योग (आम्लपेप्टिको)** – अम्लपित्त रोग में खट्टी डकारें, खट्टा पानी मुंह में आना व उल्टी होना, छाती व गले में जलन, खाने के बाद पेट में दर्द या बेचैनी, कब्जियत, बदहजमी आदि कष्ट होते है। अम्लपित्त रोग के लिये यह दवा बहुत अच्छी है।

***बैद्यनाथ* आमलकी रसायन** – यह पौष्टिक रसायन है। इसके नियमित सेवन से दुर्बलता, सुस्ती, उदासी, कब्जियत, अम्लपित्त आदि अनेक रोग दूर होते हैं।

***बैद्यनाथ* अश्वगंधा टेबलेट** – दिमागी और शारीरिक कमजोरी को दूर कर शरीर को पुष्ट तथा बलवान बनाता है।

***बैद्यनाथ* कब्जहर (दानें)** – कब्ज के कारण होने वाला सरदर्द, कम-ज्यादा बुखार, आँखों की जलन, अरूचि, बेचैनी आदि को यह आसानी से मिटाता है।

***बैद्यनाथ* केसरी कल्प** – च्यवनप्राश, केशर, द्राक्षा, मकरध्वज, चाँदीवर्क, अभ्रक भस्म आदि कई बहुमूल्य औषधियों के मिश्रण से तैयार किया गया है। यह खून की कमी को दूर करके शरीर को हृष्ट-पुष्ट बना देता है।

***बैद्यनाथ* गैसान्तक बटी** – आहार-विहार के बिगड जाने से अपचन होकर पेट में गैस पैदा हो जाता है। वायु प्रतिलोम होने से दिल दिमाग पर बुरा असर होता है। तबियत घबराती है। इन सब में यह बटी लाभ करती है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

***बैद्यनाथ* गोदन्ती मिश्रण (विशेष)** – सतत, संतत, विषमज्वर, इनफ्ल्युएंजा, मलेरिया, तथा सन्निपात आदि किसी भी प्रकार के बुखार में इसके सेवन करने से तापमान कम हो जाता है। यह किसी प्रकार हानि रहित परिक्षित औषधि है।

***बैद्यनाथ* ग्रीष्मा** – यथा नाम तथा गुण, गर्मी एवं लू से सुरक्षा प्रदान करती है। पेशाब की जलन, कडक आदि को दुर कर शरीर में शीतलता और ताजगी लाती है। जी मचलाना, उल्टी आदि में फायदा करती है।

***बैद्यनाथ* जन्मघूँटी** – जन्म के बाद से ही बच्चों को इसका सेवन कराने से उनके स्वास्थ्य में कोई गडबड़ी नहीं होती और बच्चे स्वस्थ रहते है। बुखार, खाँसी, सर्दी, जुकाम, अजीर्ण, उलटी होना, दस्त होना, पेट फुलना आदि रोग दूर होते है।

***बैद्यनाथ* जवाहर मोहरा नं १** – यह दिल और दिमाग की ताकत के लिये बहुत उपयोगी है। स्वर्ण, अम्बर, पन्ना, माणिक्य आदि बहुमूल्य द्रव्यों के योग से तैयार होता है और कठिन तथा पुराने हृदय रोग के लिये गुणकारी है।

***बैद्यनाथ* जवाहर मोहरा** – गुण जवाहर मोहरा नं १ के समान ही हैं। कुछ अल्प है।

***बैद्यनाथ* बाम स्ट्राँग** – सिर में भयानक दर्द हो, पसली या कमर में दर्द हो, गर्दन घुमाने में तकलीफ हो, कीड़े ने डंख मार दिया हो, सुजन हो, तो इससे तुरन्त आराम मिलेगा।

***बैद्यनाथ* शंखपुष्पी सिरप** – स्मरण शक्तिवर्धक, स्नायु दौर्बल्य नाशक तथा पित्त व दाह को शान्त करता है। कमजोरी से होने वाले सिरदर्द में लाभदायक है। इसके सेवन से शांत निद्रा आती है।

***बैद्यनाथ* पथरीना** – अश्मरी पथरी रोग बहुत कष्टदायक दुस्साध्य रोग है। ये टेबलेट कुछ दिन के प्रयोग से पथरी को गलाकर निकाल देती है, वृक्कशूल, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात या मूत्रसंस्थान की अन्य विकृतियों को दूर करने में सुपरीक्षित है। इससे मूत्र अधिक प्रवृत्त होता है।

***बैद्यनाथ* पायराईडस् टेबलेट** – मल त्याग के समय का दर्द, गुदामार्ग का बाहर आना अथवा उससे खून बहना बंद होकर, बढ़े हुये मस्से सूख जाते हैं। इसके सेवन से दोनों तरह की बवासीर खूनी व बादी में तुरन्त लाभ होता है।

***बैद्यनाथ* लीवरेक्स टैबलेट** – यकृत (लीवर) के बढ़ जाने से मन्दज्वर, पीलिया, खून की कमी आदि हो जाते हैं. यह यकृत विकारों के लिये प्रभावशाली रूप से कार्य करती है।

***बैद्यनाथ* प्रदरान्तक टेबलेट** – आजकल प्रदर रोग या श्वेत प्रदर स्त्रियों में बहुतायत से पाया जाता है। इसके लिए यह टेबलेट अनेक परीक्षणों के बाद तैयार की गई है। यह सभी प्रकार के प्रदर रोगों में विशेषकर श्वेत प्रदर में अनुभूत औषधि है।

***बैद्यनाथ* दिमाग दोषहरी** – यह बिना नशा के गहरी नींद लाती है और दिमाग को निरोग रखती है। वहम, घबराहट, अकारण भय, चित्तभ्रम, स्मृतिभ्रंश आदि में लाभ होता है।

***बैद्यनाथ* ब्रेनटेब** – मानव शरीर में मस्तिष्क एक महत्त्वपूर्ण अंग है। इसकी दुर्बलता की ओर ध्यान देना आवश्यक होता है। ब्रेनटेब बढते बच्चों की स्मरणशक्ति, बुद्धिशक्ति बढाती है। पढाई में ध्यान न लगना, चिडचिडापन, मन की चंचलता, निरुत्साह, जन्मत: बुद्धिहीन बच्चे में बुद्धिशक्ती का अभाव आदि लक्षणों में विशेष प्रभावकारी है। वकील, डॉक्टर, प्राध्यापक, विद्यार्थी आदि के लिये निश्चित लाभकारी है।

***बैद्यनाथ* मधुमेहारी (दाने)** – गुड़मार बूटी के साथ अन्य गुणकारी औषधियाँ तथा स्वर्ण

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

भस्म मिलाकर करेले के स्वरस से तैयार किया गया है। यथा नाम तथा गुणवाली औषधि है।

***बैद्यनाथ* मेमोरेक्स टेबलेट** – स्मरणशक्ति बढ़ाने में विशेष गुणकारी।

***बैद्यनाथ* मृत संजीवनी सुरा** – आयुर्वेद की एक दिव्य औषधि होने के कारण इसे पूर्ण वैज्ञानिक ढंग से हमने प्रस्तुत किया है। इसमें केवल मादकता ही नहीं प्रत्युत अनेक गुणदायक आयुर्वेदीय औषधियों का सार भाग निहित है। स्नायु मण्डल को पुष्ट करना, शौर्य और शक्ति बढ़ाना इसकी विशेषता है। इसके सेवन से शरीर में नई ताकत आती है।

***बैद्यनाथ* महासुदर्शन घन बटी** – आयुर्वेद जगत में सभी ज्वरों के लिये महासुदर्शन चूर्ण सुप्रसिद्ध है। अत: उसका घनसत्व बनाकर तथा कुटकी का प्रक्षेप देकर यह टैबलेट तैयार की गई है।

***बैद्यनाथ* मादीफल रसायन** – यह रुचिकर, शीतल, जलन, आफरा, जी मिचलाना, उल्टी आदि विकारों में स्त्री एवं पुरुषों के लिये समान रूप से लाभदायक है।

***बैद्यनाथ* यूरीटोन टेबलेट** – पेशाब में जलन होना, बार-बार पेशाब होना, पेशाब रुकना आदि विकारों में उत्तम गुणकारी औषध है।

***बैद्यनाथ* जॉन्डिसॉल सीरप एवं जॉन्डिसॉल टेबलेट** – पीलिया, खून की कमी तथा यकृत (लीवर) विकारों में उत्तम लाभदायक है।

***बैद्यनाथ* रक्तशोधक बटी** – इसके खाने से रक्त-विकृति के रोग शीघ्र दूर होते है। खाज खुजली, एक्जिमा आदि खून की खराबी से होनेवाले सभी रोगों में आराम होता हैं। रक्तशुद्धि के लिए यह योग सर्व श्रेष्ठ माना जाता है।

***बैद्यनाथ* लेप्रीन** – वर्षों के अनुसंधान तथा अनुभव के पश्चात सभी तरह के रक्त-दोषों के लिए यह श्रेष्ठ औषधि बनाई गई है। सरकारी संस्थान द्वारा परीक्षित एवं प्रशंसित है।

***बैद्यनाथ* रुमा आईल** – वात रोगों में विशेष लाभदायक है।

***बैद्यनाथ* लघुसूतशेखर** – पित्तविकारजन्य खट्टी डकारें, अम्लपित्त, दाह या जलन रक्तपित्त, शिर:शूल, शीतपित्त, निद्रानाश तथा पित्तजन्य उन्माद, असात्म्यता, एलर्जी में परम गुणकारी है।

***बैद्यनाथ* लाल तैल** – बच्चों का सूखा रोग, हड्डियों की विकृति, दन्तरोग तथा कैलशियम की कमी से होने वाले सभी विकारों में इस तैल की मालिश उपयोगी है।

***बैद्यनाथ* श्वास कल्प** – श्वास रोग की बहुत अच्छी दवा है। कुछ दिन तक बराबर सेवन करने से दमा में स्थायी फायदा होता है।

***बैद्यनाथ* सप्तगुण तैल** – आग से जलने, चोट या मोच लगने, वायु का दर्द, कान का दर्द या बहना, फोडा-फुन्सी, सूजन और फसली का दर्द, इन सात तकलीफों में बहुत उपयोगी है।

***बैद्यनाथ* हीलर मलहम** – आग से जलने या झुलसने, चोट से जखमी होने, बिच्छू आदि जहरीले कीड़ों के डंक मारने आदि पर यह मलहम बहुत उपयोगी है।

***बैद्यनाथ* हिलेक्स मलहम** – हाथ पाव के फ़टने पर शीघ्र लाभदायक है।

***बैद्यनाथ* हजमयम** – गैस की शिकायत, भूख न लगना, पेट साफ न रहना और अपचन ये सभी शिकायतें दूर करती है हजमयम।

***बैद्यनाथ* शोधी हर्रे** – जिन लोगों को बराबर कब्ज की शिकायत रहती है, वे प्राय: छोटी हर्रे का सेवन किया करते हैं, किन्तु छोटी हर्रे की अपेक्षा शोधी हुई यह हर्रे विशेष लाभदायक तथा खाने में अधिक जायकेदार है।

***बैद्यनाथ* शिलाजीत कैपसूल** – शारीरिक क्षीणताओं को दूर कर, सप्तधातुओं को बढ़ाने वाला शक्तिवर्धक टॉनिक है।

***बैद्यनाथ* शिलाजीत टैबलेट** – इसका विशेषकर धात् पौष्टिक रूप में प्रयोग किया जाता है. खोई हुई शक्ति एवं स्वास्थ्य प्रदान करता है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

***बैद्यनाथ* सर्पगन्धा टैबलेट** – बैद्यनाथ सर्पगन्धा टेबलेट पूर्ण शास्त्रीय विधि द्वारा तैयार की गई है। इसके व्यवहार से मानसिक शान्ति मिलती है और रोगी को गहरी नींद आती है। उच्च रक्त चाप कम होता है।

***बैद्यनाथ* सुन्दरी कल्प फोर्ट** – यह स्त्रियों के लिए बहुत फायदेमन्द है और उनके क्षीण शरीर को पुष्ट और सुन्दर करती है इससे खाँसी, आँव और हाथ-पैर के तलुओं की जलन, पेट दर्द, सिर का भारीपन, खुन की कमी आदि दूर होते हैं एवं नया जीवन प्राप्त होता है।

***बैद्यनाथ* सुरक्ता** – खून साफ करके खाज खुजली, चेहरे के कील मुहाँसों को जड़ से मिटाकर चेहरे पर निखार लाती है।

***बैद्यनाथ* विटा एक्स टैबलेट** – मूत्रविकार नाशक, शुक्रस्तम्भक, बलवर्धक, उत्तेजक एवं योगवाही। इसके सेवन से कांतिहीन चेहरे पर लाली आती है। शारीरिक कमजोरी के लिये स्त्री एवं पुरुष दोनों को समान लाभदायी है।

***बैद्यनाथ* विटा एक्स कैपसूल (स्वर्णयुक्त)** – उपरोक्त से विशेष गुणकारी शक्तिवर्धक योग है। यौवन की ताजगी और स्फूर्ति से भरपूर है।

***बैद्यनाथ* रूमार्थो टैबलेट** – वात रोगों से सम्बन्धित जोड़ों की सूजन, संधिवात तथा गठियाँ वात के लिये अत्यंत प्रभावशाली औषधि है।

***बैद्यनाथ* रूमार्थो (गोल्ड)** – केप्सूल स्वर्ण के विशेष प्रभाव से पुराने व कठीण जोडों के दर्द में तत्काल राहत पहुंचाता है।

बैद्यनाथ अन्य उपयोगी द्रव्य-समूह

***बैद्यनाथ* एरण्ड तैल** – वायु-क्रधान कोष्ठवालों के लिए उत्तम जुलाब है।

***बैद्यनाथ* नीलगिरी का तैल** – सर्दी, जुकाम में सुंघने से लाभ करता है।

***बैद्यनाथ* लवंग का तैल** – दाँत-दर्द और वायु-नाशक है।

बैद्यनाथ आयुर्वेदीय प्रकाशन

यह कारखाना केवल औषधि निर्माता ही नहीं है, बल्कि शुद्ध अर्थ में यह आयुर्वेदीय संस्था है। इसलिये एक ओर जहाँ यह उत्तमोत्तम औषधि निर्माण द्वारा आयुर्वेद की विशेषता को प्रमाणित करने की चेष्टा करता है; वहीं दूसरी ओर इसके उत्तमोत्तम और प्रामाणिक ग्रन्थों के प्रकाशन का समुचित प्रबन्ध भी करता है।

अभिनव शारीरम् (संस्कृत) (प्रथम संस्करण) – लेखक : वैद्य पं. दामोदर शर्मा गौड़ ए. एम. एस.। शिक्षा में उच्चता तथा एकरूपता लानेवाला शारीरशास्त्र का अद्‌भुत ग्रंथ है।

अभिनव शारीर (हिन्दी) (प्रथम संस्करण) – लेखक : वैद्य पं. दामोदर शर्मा गौड़ ए. एम. एस। एक लाख रुपयों के पुरस्कार से सम्मानित मूल संस्कृत ग्रन्थ का हिन्दी संस्करण केन्द्रीय आयुर्वेदिक कौन्सिल द्वारा पाठ्य-ग्रन्थ के लिए मान्यता प्राप्त ग्रन्थरत्न है।

अष्टांग-संग्रह (सूत्रस्थान) चतुर्थ संस्करण – (सर्वांगसुन्दर – व्याख्या-सहित) व्याख्याकार : वैद्य पं. लालचन्द्र शास्त्री। श्रीमद्‌वाग्भट्टाचार्य विरचित 'अष्टांग-संग्रह' आयुर्वेद के प्राचीन संहिताओं में सर्वोत्कृष्ट और प्रामाणिक ग्रन्थ है।

अष्टांग संग्रह (उत्तर स्थान) प्रथम संस्करण – (सर्वांग सुन्दर – व्याख्या-सहित)

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

व्याख्याकार : वैद्य प. लालचन्द शास्त्री. श्रीमद्वाग्भट्टाचार्य विरचित 'अष्टांग-संग्रह' आयुर्वेद के प्राचीन संहिताओ में सर्वोत्कृष्ट और प्रामाणिक ग्रन्थ है।

अष्टांग-संग्रह (शारीर-निदान-चिकित्सा-कल्पसिद्धस्थान) प्रथम संस्करण – (सर्वांग सुन्दर – व्याख्या-सहित) व्याख्याकार : वैद्य पं. लालचन्द शास्त्री। श्रीमद्वाग्भट्टाचार्य विरचित। इसमें कुल ६० अध्याय है। शारीर स्थान १२ अध्यायों का निदान स्थान १६ अध्यायों का चिकित्सा स्थान २४ अध्यायों का तथा कल्पसिद्ध स्थान ८ अध्यायों का है।

अष्टांग-संग्रह की वनौषधियाँ एवं वर्गीकरण – लेखक : वैद्य मायारामजी उनियाल। पुस्तक में अष्टांग संग्रह की वनौषधियों के वर्गीकरण अकारादि क्रम एवं पर्यायवाची शब्द तथा लैटिन नामों के साथ दिया गया है। यह पुस्तक आयुर्वेद शोधकर्ताओं एवं वनस्पति अन्वेषकों एवं प्राध्यापकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

अम्लपित्त प्रकरण – (द्वितीय संस्करण) – श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन द्वारा आयोजित अखिल भारतीय संभाषणपरिषद में अम्लपित्त निदान और चिकित्सा पर प्रकट किये अनुभव इसमें संकलित हैं।

अग्न्यतीसारग्रहणीकोष्ठवातप्रकरणानि (प्रथम संस्करण) – श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि. द्वारा आयोजित अखिल भारती संभाषण परिषद में अग्नि, अतिसार, ग्रहणी एवं कोष्ठगत वात के निदान और चिकित्सा पर प्रकट किए गए अनुभव इसमें प्रकाशित हैं।

आरोग्य प्रकाश – (आरोग्य, स्वच्छता और चिकित्सा पर सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ) **(छब्बीसवाँ संस्करण)** – श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि. के संस्थापक वैद्यराज पं. रामनारायण शर्मा ने बड़े परिश्रम से इस ग्रन्थ का प्रणयन किया है। पूर्वार्द्ध के विषयों को पढ़कर और तदनुसार चलकर सदा बीमार रहनेवाला व्यक्ति भी बिना दवा के निरोगी (तन्दुरुस्त) हो जाता है। ग्रन्थ के उत्तरार्द्ध में पैदा होनेवाले सभी रोगों की उत्पत्ति, कारण, निदान, रोग के लक्षण, चिकित्सा, पथ्यापथ्य आदि इस तरह समझाकर लिखे गये हैं कि इसके द्वारा विद्वान से लेकर साधारण पढ़े-लिखे दोनों समान रूप से लाभ उठा सकते हैं। हिन्दी में ऐसी पुस्तक दूसरी नहीं है। इसके मराठी, गुजराती तथा अंग्रेजी संस्करण भी उपलब्ध है। इसकी ३ लाख से अधिक प्रतियाँ निकल चूकी हैं।

आयुर्वेदीय क्रिया-शारीर (नवम संस्करण) – (सचित्र रायल अठपेजी) लेखक : वैद्य रणजितराय देसाई निवृत्त आचार्य श्री नाझर आयुर्वेद महाविद्यालय, सूरत। केन्द्रीय आयुर्वेदीय काउन्सिल ने इस ग्रन्थ को समग्र भारत के लिये बना युनिफार्म कोर्स के शारीर क्रिया विज्ञान विषय में पाठ्य ग्रन्थ के रूप में निर्धारित किया है।

आयुर्वेद-सार संग्रह (बीसवां संस्करण) – राष्ट्रभाषा में ऐसे आयुर्वेदीय पुस्तकों की बहुत कमी थी जिसमें रोग विचार के साथ-साथ चिकित्सा, औषध निर्माण, अनुपान, पथ्यापथ्य आदि का विवरण समझाकर सरल भाषा में दिया गया हो। प्रस्तुत पुस्तक में आयुर्वेदीय साहित्य की इसी कमी को दूर करने का सफल प्रयास किया गया है। श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लि. द्वारा बनाई जानेवाली सभी दवाओं की निर्माणविधि तथा गुण-धर्म और प्रयोग-विधि के साथ सभी वैद्योपयोगी बातों का सविस्तार वर्णन सरल हिन्दी भाषा में किया गया है।

आयुर्वेदीय व्याधि-विज्ञान (पूर्वार्ध-चतुर्थ संस्करण) – लेखक : आयुर्वेदमार्तण्ड वैद्य यादवजी त्रिकमजी आचार्य, बम्बई। इस ग्रन्थ में व्याधि विज्ञान के साधनों का वर्णन बहुत ही सुन्दर ढंग से किया गया है।

आयुर्वेदीय व्याधि विज्ञान (उत्तरार्ध तृतीय संस्करण) – लेखक : आयुर्वेदमार्तण्ड वैद्य यादवजी त्रिकमजी आचार्य। यह ग्रन्थ उपर्युक्त ग्रन्थ का उत्तरार्ध है।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

आयुर्वेदीय पदार्थ-विज्ञान (तृतीय संस्करण) – लेखक : वैद्य रणजितराय देसाई। आयुर्वेदीय पदार्थ विज्ञान अन्य सभी आयर्वेदीय विषयों का आधारभूत है।

आयुर्वेदीय पंचकर्म विज्ञान (षष्ठम संस्करण) – लेखक : सुप्रसिद्ध आयुर्वेद मनीषी ह. श्री. कस्तुरे। यह ग्रन्थ पंचकर्म विषय पर प्रथम ही अनोखा वैशिष्ट्यपूर्ण ग्रन्थ है।

आयुर्वेदीय हितोपदेश (सप्तम संस्करण) – लेखक : वैद्य रणजितराय देसाई। आयुर्वेदीय अध्ययन-अध्यापन के कार्य में दक्ष वैद्य रणजीतरायजी ने "आयुर्वेदीय हितोपदेश" नाम की इस पुस्तक का प्रणयन किया है।

आयुर्वेदीय औषध सेवनविधि (तृतीय संस्करण) (हिन्दी) – दवाईयों के गुण, उपयोग और सेवनविधी की विस्तृत जानकारी सरलता से दी गई है। इसका मराठी तथा गुजराती संस्करण भी उपलब्ध है।

आयुर्वेद ज्ञान की पुस्तिका (हिन्दी) – संकलित; पुस्तक में प्रमुख रोगों पर आयुर्वेद की प्रभावशाली औषधियों का विवरण दिया गया है।

आत्ययिक चिकित्सा (द्वितीय संस्करण) – लेखक : आचार्य विश्वनाथ द्विवेदी। यह आत्ययिक चिकित्सा या आकस्मिक चिकित्सा की पुस्तक चिकित्सकों एवं विद्यार्थियों के लिये प्रेरणाप्रद एवं बहुत उपयोगी है। अत: चिकित्सकों को इसकी प्रति अपने पास अवश्य रखनी चाहिए।

औषधि विज्ञान शास्त्र (तृतीय संस्करण) – लेखक : विश्वनाथजी द्विवेदी, विभागाध्यक्ष आयुर्वेद संस्कृत महाविद्यालय, काशी। प्रस्तुत में नवीन पद्धति के आधार पर औषधि शास्त्र के बारे में बहुत ही सरल ढंग से अत्यन्त परिश्रम पूर्वक विषय स्पष्ट किया गया है।

उपचार पद्धति (एकादश संस्करण) – सर्वसाधारण गृहस्थों के सैकड़ों रुपये प्रतिवर्ष बच सकते हैं, यदि उन्हें उपचार और पथ्य का साधारण ज्ञान हो जाय, इसी लक्ष्य को सम्मुख रखकर इस पुस्तक का प्रकाशन किया गया है।

किशोर रक्षा और ब्रह्मचर्य (षष्ठ संस्करण) – किशोर बालकों और तरुणों को कुटेव-जन्य व्याधियों से बचाने का इस पुस्तक में सफल प्रयास किया गया है।

चर्म रोग निदर्शिका (द्वितीय संस्करण) – यह पुस्तक पंचम अखिल भारतीय शास्त्र चर्चा परिषद पर विभिन्न बड़े-बड़े विद्वानों द्वारा बाह्य रोगों पर लिखे गये निबंधों का संग्रह है।

चरक सुश्रुत के दार्शनिक विषय का अध्ययन – लेखक : डॉ. ज्योतिर्मित्र।

त्रिदोष तत्त्व विमर्श (पंचम संस्करण) – लेखक : आयुर्वेदवृहस्पति वैद्य रामरक्षपाठक, आयुर्वेदाचार्य। इस ग्रन्थ में आयुर्वेद के आधारभूत त्रिदोषसिद्धान्त का शास्त्रीय विवेचन विधिवत किया गया है।

द्रव्यगुणविज्ञानम् पूर्वार्ध (षष्ठ संस्करण) – लेखक : आयुर्वेद मार्तण्ड वैद्य वाचस्पति श्री. यादवजी त्रिकमजी आचार्य, मुम्बई। स्नातकोत्तर शिक्षण के लिए यह ग्रन्थ अत्युपयोगी है।

द्रव्यगुण विज्ञानम् उत्तरार्ध (चतुर्थ संस्करण) – लेखक यादवजी त्रिकमजी आचार्य

निदान-चिकित्सा हस्तामलक (छात्रोपयोगी निदान चिकित्सा) प्रथम खण्ड (तृतीय संस्करण) – लेखक : वैद्य रणजीतराय देसाई। इसमें निदान पञ्चक का विशद वर्णन किया गया है। इसका द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थखण्ड भी उपलब्ध है।

नेत्र चिकित्सा (संस्कृत) – लेखक : डॉ. बालकृष्ण शिवराम मुंजे।

नेत्ररोग विज्ञान (मराठी) (षष्ठम् संस्करण) – लेखक : डॉ. वैद्य र. रा. पद्मावार, अधिव्याख्याता शल्य-शालाक्य तंत्र शासकीय आयुर्वेद महाविद्यालय, नांदेड।

नेत्र रोग विज्ञान (हिन्दी) (तृतीय संस्करण) – उपरोक्त मराठी संस्करण का हिन्दी अनुवाद।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

पदार्थ विज्ञान (सप्तम संस्करण) – देशभर की आयुर्वेदीय संस्थाओं एवं परीक्षा समितियों के पाठ्यक्रम में स्वीकृत) लेखक : आयुर्वेद बृहस्पति पं. रामरक्ष पाठक, आयुर्वेदाचार्य, भू. पू. प्रिन्सिपल, अ. शि. आयुर्वेदीय कॉलेज वेगूसराय।

परिषद्यं शब्दार्थ शारीरम् (द्वितीय संस्करण) – सम्पादक : आयुर्वेदाचार्य पं. दामोदर शमा गौड, भूमिका लेखक : आचार्य रघुवीरप्रसाद त्रिवेदी। यह ग्रन्थ आयुर्वेद के अध्ययन-अध्यापन के कार्य में लगे लोगों के लिए परम उपयोगी है।

मानस रोग विज्ञान (चतुर्थ संस्करण) – इस ग्रन्थ के विद्वान लेखक : स्वर्गीय डॉ. बालकृष्ण अमरजी पाठक का यह मानस रोगों का प्रामाणिक ग्रन्थ है।

मोटापन कम करने का उपाय (चतुर्थ संस्करण) – लेखक : प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी। यह ग्रन्थ परम उपयोगी एवं मननीय है।

युनानी चिकित्सासार (पंचम संस्करण) – लेखक : हकीम डॉ. दलजीत सिंह युनानी योगों का संकलन।

युनानी सिद्धयोग-संग्रह (पंचम संस्करण) – इसके नुस्खें आयुर्वेदीय नुस्खों की भांति ही लाभदायक और तुरन्त फायदा करनेवाले तथा सस्ते होते हैं।

यौवन विज्ञान पर नया प्रकाश (तृतीय संस्करण) – लेखक : डॉ. लक्ष्मीनारायण शर्मा, एम. ए. एस. आर. एम. पी. भिषग्रत्न! युवक-युवतियों के लिये उपयोगी।

वनौषधि शतक (तृतीय संस्करण) – लेखक : प्राचार्य पं. दुर्गाप्रसाद शर्मा। इस ग्रन्थ में वनौषधियों का विशद परिचय रंगीन चित्रों के साथ प्रस्तुत किया गया है।

वैद्य सहचर (अष्टम संस्करण) – लेखक : आचार्य विश्वनाथजी द्विवेदी। औषधि विज्ञान शास्त्र के सफल तथा अधिकारी द्वारा लिखी गई यह पुस्तक आयुर्वेद क्षेत्र में इतनी शीघ्रता से लोकप्रिय हुई कि इसका यह आठवां संस्करण प्रकाशित करना पड़ा।

सन्दिग्ध वनौषधि दर्शिका – लेखक आचार्य रघुवीरप्रसादजी त्रिवेदी। आयुर्वेदीय सन्दिग्ध वानस्पतिक औषध द्रव्यों के सम्बन्ध में प्रस्तुत एक अनूठा प्रयास।

संक्रामक रोग विज्ञान (तृतीय संस्करण) – लेखक : कविराज बालकराम शुक्ल, आयुर्वेद शास्त्राचार्य। संक्रामक रोगों से बचने का उपाय, रोग परीक्षा, निदान-चिकित्सा का विवरण।

सिद्धयोग-संग्रह (दशम संस्करण) – आयुर्वेदोद्धारक वैद्यवाचस्पति श्री यादवजी त्रिकमजी आचार्य के करकमलों से लिखे हुए इस ग्रन्थ से प्रत्येक वैद्य को निःसन्देह लाभ होगा।

शार्ङ्गधर-संहिता (पंचम संस्करण) – टीकाकार : आचार्य पं. राधाकृष्ण पाराशर। शार्ङ्गधर-संहिता का अनेक टीकाओं के बावजूद इस टीका में पाठकों को आयुर्वेद का रहस्य नये ढंग से समझाकर लिखा गया है।

शालाक्यतन्त्र (मराठी) भाग १ ला (तृतीय संस्करण) – वैद्य र. रा. पद्मावार, अधिव्याख्याता शल्य-शालाक्य तंत्र शासकीय आयुर्वेद म. वि. नांदेड। कर्ण, नासा, शिरोरोग पर यह ग्रन्थ सरल भाषा में लिखा गया है।

शालाक्य तन्त्र (मराठी) भाग २रा (पंचम संस्करण) – लेखक : वैद्य र. रा. पद्मावार द्वारा मुखरोग पर लिखा गया ग्रन्थ।

शालाक्य तंत्र (हिन्दी) भाग १ – लेखक : वैद्य र. रा. पद्मावार। कर्ण, नासा, शिरोरोग पर (मराठी) का हिन्दी अनुवाद।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

शालाक्य तंत्र (हिन्दी) भाग २ – लेखक : वैद्य र. रा. पद्मावार। मुखरोगों पर (मराठी) का हिन्दी अनुवाद।

शारीर क्रिया विज्ञान (मराठी-प्रथम संस्करण) – लेखक : वैद्य रा. उ. पद्मावार एवं वैद्य र. रा. पद्मावार। लेखकद्वय ने इस पुस्तक में दोष, धातु तथा मलों का सविस्तार वर्णन सुबोध भाषा में किया है। मराठी भाषा में इस विषय पर इस प्रकार की पुस्तक नहीं है। इसका हिन्दी संस्करण भी उपलब्ध है।

अंग्रेजी प्रकाशन English Publication

1) Therapeutic Guide-to Ayurvedic Medicines.
2) Science & Philosophy of Indian Medicines.
3) Treatise of 30 Important Baidyanath Products.
4) The Problems of Ayuvedic Research.
5) Basic Principles of Ayurvedic Research.
6) Arogya Prakash (English) – Part I
7) Arogya Prakash (English) – Part II
8) Medicinal Flora of Garhwal Himalayas.
9) Baidyanath Book of Ayurved Knowledge.
10) Concept of Ayurveda For Perfect Health and Longevity.

निम्न किताबें भी मिलती हैं।

पारद विज्ञानीयम् (तृतीय संस्करण) – लेखक : श्री वासुदेव मूलशंकरजी द्विवेदी। पारद के अष्ट संस्कारों का प्रायोगिक वर्णन।

भारतीय रसशास्त्र (द्वितीय संस्करण) – लेखक : विश्वनाथ द्विवेदी। इस ग्रन्थ में अनेकानेक रससाहित्य-विवरण जो अद्यावधि उपलब्ध नहीं थे, उनका समावेश है।

चर्म रोग निदर्शिका

त्वचा के रोगों पर हुई दो शास्त्रचर्चा परिषदों के तथ्यों पर आधारित तथा आधुनिक चर्मरोग निष्णातों से प्राप्त लेखों का अधुनातन संग्रह।

लेखक :

आचार्य रघुवीर प्रसादजी त्रिवेदी

एक चौथाई डेमी साईज में, चित्रों समेत ५९० पेजेस का यह ग्रंथ शीघ्रही प्रकाशित हुआ है।

मूल्य : रु. १४०/-

प्रकाशक : श्री *बैद्यनाथ* आयुर्वेद भवन लि. बैद्यनाथ भवन, ग्रेट नाग रोड, नागपुर-९

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

स्पिरूविन

"स्पिरूविन के प्रतिदिन सेवन से शरीर के लिये आवश्यक पोषकतत्वों की पूर्ति होती है, जिसके कारण शारीरिक स्वास्थ्य ठीक रखने में सहायता मिलती है।"

स्पिरूविन में है आवश्यक पोषक तत्वों का सर्वाधिक संतुलित योग, जिसके कारण रोग प्रतिरोधक शक्ति अधिक बढ़ जाती है।

स्पिरूविन की प्रत्येक बटी में घटक का प्रमाण –

स्पिरूलिना :– ५०० मि.ग्रा.

स्पिरूलिना में :–

१) अंडे से ४ से ५ गुना अधिक प्रोटीन।

२) दूध से १० गुना अधिक केल्शियम।

३) गाजर से २५ गुना अधिक बीटा केरोटिन।

४) पालक से २५ गुना अधिक लौह तत्व।

स्पिरूविन आपको क्या देगा?

१) शरीर की रोगप्रतिकारक क्षमता बढ़ाता है।

२) यह प्रोटीन्स, विटामिन्स व मिनरल्स का प्राकृतिक स्रोत है।

३) रक्तसंवहन क्रिया सुचारू रूप से रखता है।

४) डायबिटीक रेटिनोपॅथी से बचाव करने में सहायक।

५) प्रदूषण के कारण शरीर में उत्पन्न विषैले पदार्थों से शरीर की रक्षा करता है।

६) मासिक धर्म शुरू होने के पहले व मेनोपॉझ (रजोनिवृत्ति) के समय अत्यंत गुणकारी।

७) गॅमालिनोलेनिक ॲसिड शरीर में हार्मोनल सिस्टम को सुचारू रूप से बढ़ाता है। यह तत्व (जी.एल.ए.) सिर्फ माता के दूध से ही मिलता है।

८) बीटा केरोटिन के कारण विटामिन की कमी से उत्पन्न आँखों के विकारों से छुटकारा दिलाने में सहायक होता है।

९) इसमें लौह तत्व होने के कारण पाण्डु रोग एवं गर्भावस्था में स्त्री के लिए अत्यंत लाभदायक।

१०) १००% प्राकृतिक शाकाहारी व कोलेस्टरॉल रहित आहार।

मात्रा :– १ से २ टॅब नास्ते के बाद व शाम ५ बजे लें।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

स्ट्रेसविन

आज के स्पर्धात्मक युग में हर व्यक्ति मानसिक तनाव से उत्पन्न विकारों का शिकार हो रहा है।

क्या आप भी निम्नलिखित विकारों के शिकार हैं?

१) हमेशा थकान महसूस करना।

२) छोटी-छोटी बातों पर गुस्सा आना।

३) बेचैनी अथवा कमजोरी का बढ़ना।

४) हमेशा सिरदर्द से परेशान रहना।

५) उदासीनता से घिरे रहना।

६) हृदय की धड़कने बढ़ना।

७) कभी मलबद्धता होना या कभी बार-बार दस्त आना।

८) हमेशा आलस्य बना रहना या काम करने में स्फूर्ति या शक्ति का अभाव, यह सब मानसिक तनाव से संबंधित विकार हैं और इन्हीं बातों का ध्यान रख, दीर्घ अनुसंधान व अभ्यास के बाद स्ट्रैसविन की निर्मिति की गई है।

घटक द्रव्य :- अश्वगंधा १०० मि.ग्रा., ब्राम्ही १०० मि.ग्रा., जटामांसी ७५ मि.ग्रा.

अश्वगंधा :- मानसिक तनाव से उत्पन्न विकारों को दूर करती है। समायोजन की क्षमता, स्मरणशक्ति तथा एकाग्रता बढ़ाती है। रोग प्रतिकारक क्षमता बढ़ाकर, शरीर व मन को स्फूर्ति प्रदान करती है।

ब्राम्ही :- एकाग्रता बढ़ाती है, मस्तिष्क को शक्ति प्रदान करती है। प्रदूषण के कारण शरीर में उत्पन्न विषैले पदार्थों से शरीर की रक्षा करती है।

जटामांसि :- अच्छी नींद दिलाती है। रजोनिवृत्ति (मेनोपॉझ) के समय मानसिक तनाव बढ़ जाने से उत्पन्न विकारों से छुटकारा दिलाती है।

गुणधर्म :- १) मानसिक तनाव से उत्पन्न विकारों से छुटकारा दिलाने में सहायक।

२) मानसिक तनाव रहते हुए भी समायोजन की क्षमता बनाए रखने में सहायक है।

३) लम्बी बीमारी के बाद आनेवाली कमजोरी, रोज-रोज आनेवाली थकान एवं कमजोरी में गुणकारी।

४) रात को सोते समय अच्छी नींद आने के लिए १ कप गर्म दूध से लें।

५) खून में हिमोग्लोबिन का प्रतिशत बढ़ाती है।

६) रजोनिवृत्ति (मेनोपॉझ) के समय मानसिक तनाव बढ़ने से उत्पन्न विकारों में लाभदायक।

७) शरीर में शक्ति व स्फूर्ति पैदा करने में गुणकारी।

मात्रा :- १ कॅपसूल दिन में दो बार। अच्छी या गहरी नींद के लिए रात को सोते समय १ कॅपसूल १ कप गरम दूध के साथ लें।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

मुद्रक : **कादंबरी प्रिन्टर्स,** ग्रेट नाग रोड, नागपुर-९

M/s ATMAN TRADERS
3rd Floor Partap Garh
Kanak Mandi, JAMMU

वर्षा ऋतु

में आपकी कई तकलीफों के लिए

पेश है आयुर्वेद के कुछ खास उपचार

अमीबियासिस?
अमीबिका टैबलेट

पेचिस, संग्रहणी, गैस, चिड़चिड़ापन, खून या ऑवयुक्त मल अमीबियासिस के लक्षण हैं, अमीबिका टैबलेट इससे तुरंत आराम. पहुँचाती है।

बवासीर, खून आना, जलन या खुजली के लिए लीजिए बैद्यनाथ पायराईड्स और पाईये तुरंत राहत.

बवासीर ?
पायराईड्स टैबलेट

कब्ज ?
कब्ज़हर

अगर आपको कब्ज़ की तकलीफ है, तो आज ही कब्ज़हर अपनाइए. यह रात भर कार्यरत रहे, और सुबह निश्चित आराम दिलाए ।

गैस व अपचन जैसी तकलीफों के लिए आपको चाहिए बैद्यनाथ गैसान्तक, एक ऐसा आयुर्वेदिक फार्मूला जिससे आप तुरंत आराम पाएँ.

अपचन? गॅस?
गैसान्तक टैबलेट

बैद्यनाथ

विश्व के सबसे बड़े ८०० से अधिक औषधियों के निर्माता

shells 520

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri

स्वर्णभस्म, चांदी वर्क और असली केसर से आप भी अपनी सेहत संवारे

राजघराने की स्वास्थ रक्षा के लिये बनाये गये नायाब नुस्खे पर आधारित

बैद्यनाथ केसरीकल्प (शाही च्यवनप्राश) अब आपके लिये भी उपलब्ध है। बढ़ती उम्र, विशेषतः चालीस वर्ष के बाद – स्त्रियों व पुरुषों को होने वाले कष्ट ,थकान, शक्ति व स्फूर्ति की कमी, पेशियों की दुर्बलता, स्मरणशक्ति की कमी,केल्शियम की कमी,असमय उत्पन्न होने वाले बुढ़ापे के लक्षण जैसे बालों का सफेद होना, चेहरे पर झुर्रियां, त्वचा का निस्तेज होना आदि दूर करने में यह परम गुणकारी है। इसमें प्रयुक्त **स्वर्ण भस्म** – रोगप्रतिरोधक क्षमता बढ़ाकर, असमय उत्पन्न होने वाले बुढ़ापे के लक्षणों को दूर करती है। **चांदी** – स्मरणशक्ति में वृद्धि करती है, **केसर** – शक्ति व स्फूर्ति कायम रख शारीरिक दौर्बल्य दूर करती है **सफेद मुसली व अकरकारा** – शरीर को शक्ति प्रदान कर कार्यक्षमता बढ़ाता है।

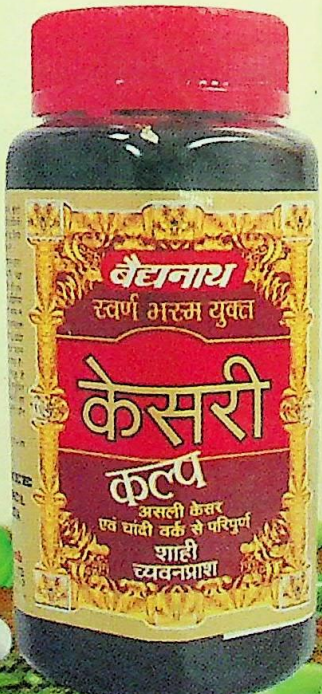

बैद्यनाथ

केसरी कल्प

असमय आनेवाले
बुढ़ापे को दूर करे।

CC-0. Late Pt. Manmohan Shastri Collection Jammu. Digitized by eGangotri